एकेश्वरवाद एवं श्रेष्ठ मानवता

के

प्रेरणा स्रोत

सूफ़ी सन्त मत

का

नक़्शबन्दिया सिलसिला

कुद्स अल्लाह अरवाह हुम

(ईश्वर इन महान् आत्माओं को पवित्र बनाए)

(दूसरा भाग)

●

बाल कुमार खरे

एकेश्वरवाद एवं श्रेष्ठ मानवता

के

प्रेरणा स्रोत

सूफी सन्त मत

का

नक़्शबन्दिया सिलसिला

कुद्स अल्लाह अरवाह हुम

(ईश्वर इन महान् आत्माओं को पवित्र बनाए)

दूसरा भाग

हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (कु० सि०)
से हजरत मौलाना खलीफा अहमद अली
खाँ मऊ रशीदाबादी (रहम०) तक

अकिंचन तुच्छ लेखक
बालकुमार खरे

लेखक
बालकुमार खरे
अवकाश प्राप्त प्राचार्य,
(राजकीय बेसिक ट्रेनिंग कालेज)
५/१५९, रमरेपुर (पहड़िया),
वाराणसी कैण्ट (उ० प्र०)

© बालकुमार खरे

प्रथम संस्करण : १०५१ प्रतियाँ
जनवरी १९८४
मूल्य : ग्यारह रुपये

सतसंगी भाई के लिये
मूल्य :

प्रकाशक
सर्वोदय साहित्य प्रकाशन
बुलानाला, वाराणसी

मुद्रक :
भोला यन्त्रालय
एस० ८/१७७, सुधाकर रोड,
खजुरी, वाराणसी कैण्ट

समर्पण

पूर्ण समर्थ सतगुरु महात्मा रघुबरदयाल जी महाराज
(परम पूज्य चच्चा जी महाराज) के पावन कर-
कमलों में सविनय समर्पित जिनकी प्रेरणा
एवं आशीर्वाद से ही इस पवित्र
ग्रन्थ की रचना हुई है।

दासानुदास
बालकुमार खरे

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पैरा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२	२	१४	कटे	न कटे
१८	२	२०	ध्याद	ध्यान
४८	अन्तिम पंक्ति		रीदू	दूरी
५०	३	२	मज़्ज़ब	मज़्ज़ूब
५१	६	१	निश्चित	निश्चित
५१	अन्तिम पंक्ति		बिब्लाह	बिल्लाह
५६	१	७	रहहु०	रहम०
६५	१	२	गुताह	गुनाह
६५	१	६	इक्छा	इच्छा
७३	२	२	ऋद्धिय	ऋद्धियाँ
७९	२	४	पिताजी ने	पिताजी
८८	२	१	हैं अधिक	अधिक हैं
१००	१	१०	सेवन	सेवक
१०१	२	४	सोहबत	सोहबत में
१०६	१	२६	बिपत्ति	विपत्ति
१०९	२	५	मासूय	मासूम
१३१	१	३	किर	फिर
१३१	३	५	तात्पर्प	तात्पर्य
१३४	२	४	अल्कसानी	अल्फसानी
१३४	४	१	शैख	एक शैख
१४२	२	१	पिजाजी	पिता जी
१७०	२	१०	खिदकत	खिदमत
१७७	अन्तिम	५	ाममूल	मामूल

(उक्त अशुद्धियों के अतिरिक्त शेष अशुद्धियों को पाठक गण अपनी ओर से शुद्ध करने की कृपा करें)।

संकेताक्षरों का विवरण

इस पुस्तक में हजरत मुहम्मद साहब, उनके सहाबी (साथी), दूसरे पैगम्बरों, फरिश्तों एवं महान सूफी सन्तों के नाम के आगे कुछ संकेताक्षरों का प्रयोग किया गया है। उनके अर्थ तथा संक्षिप्त विवरण नीचे दिए जा रहे हैं :—

सल्ल०—'सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम' अर्थात् उन पर अल्लाह की रहमत (दयालुता) और सलामती हो। (हजरत मुहम्मद साहब का नाम लेते या सुनते हैं तो आदर और प्रेम के लिए दुआ के ये शब्द बढ़ा देते हैं।)

रजि०—'रजि अल्लाह अनहु' अर्थात् उनसे अल्लाह राजी रहे (हजरत मुहम्मद साहब सल्ल० के किसी सहाबी या परिवार के सदस्य का नाम आता है तो आदर और प्रेम के लिए दुआ के ये शब्द बढ़ा देते हैं।)

रहम०—'रहमतुल्लाहु अलैहि' अर्थात् उन पर ईश्वर की कृपा हो। (महान् सूफी सन्तों के नाम के साथ दुआ के ये शब्द बढ़ा लेते हैं।)

कु० सि०—' कुदस सिर्रहू ' अर्थात् उनकी आदतें और स्वभाव पवित्र हों। सूफी सन्तों के नाम के साथ दुआ के ये शब्द बढ़ा लेते हैं।

अलैहि०— ' अलैहिस्सलाम ' अर्थात् उन पर ईश्वर की सलामती हो। हजरत मुहम्मद सल्ल० के अतिरिक्त अन्य पैगम्बरों तथा फरिश्तों के लिए दुआ के ये शब्द बढ़ा लेते हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

(आरम्भ करता हूँ ईश्वर के नाम से जो कृपाशील और दयावान है)

हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (कुद्स सिर्रहू)

हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (कु० सि०) हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) के प्रथम खलीफा तथा उनके दामाद थे। बचपन से ही अध्यात्म में आपकी विशेष रुचि थी। अपने पूज्य पिता जी के शरीरान्त के पश्चात आपने अपनी पैतृक सम्पत्ति का उत्तराधिकारी बनना स्वीकार नहीं किया और अनासक्ति भाव से एक पवित्र एवं संयमित जीवन व्यतीत करते हुये बुखारा के एक मदरसे में विद्याध्ययन में लगे रहे। अभी आप बालक ही थे कि एक रोज हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) ने आपकी पूज्य माता जी से फरमाया कि जब अलाउद्दीन बालिग हो (युवावस्था को प्राप्त हो) तो मुझको खबर करना। अतः जब हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (कु० सि०) बालिग हुये, एक रोज हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) कस्र आरिफान से बुखारा तशरीफ लाये और उस मदरसे में जहाँ हजरत अलाउद्दीन अत्तार (कु० सि०) विद्याध्ययन करते थे गये। वहाँ आपने देखा कि हजरत अलाउद्दीन अत्तार (कु० सि०) एक कोने में फटे हुये बोरिया पर ईंट सिराहने रखे हुये कोई पुस्तक पढ़ रहे हैं। आप हजरत ख्वाजा नक्शबन्द (रहम०) को देखकर उनके स्वागत के लिये तुरन्त उठ खड़े हुये और उनको सम्मान सहित अपने स्थान पर बैठाया। बातचीत के सिलसिले में हजरत ख्वाजा नक्शबन्द

(रहम०) ने फरमाया कि मेरी लड़की आज बालिग हुई है, अगर तुम स्वीकार करो तो उसका तुमसे विवाह कर दूँ। आपने अर्ज किया कि यह मेरा परम सौभाग्य होगा, परन्तु मेरे पास कुछ सामान नहीं है। हजरत ख्वाजा नक्शबन्द (रहम०) ने फरमाया कि मेरी लड़की के भाग्य में उसकी रोजी (जोविका) निर्धारित है अतः वह खजाना गैब (परोक्ष) से पहुँचाता रहेगा, तुम इसकी चिन्ता मत करो। इस प्रकार हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) की सुपुत्री का शुभ विवाह हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (रहम०) से हो गया।

हजरत अलाउद्दी अत्तार (रहम०) विवाहित होने के पश्चात् ही हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) से रूहानियत (ब्रह्म विद्या) की तालीम हासिल करने के लिये उनकी सेवा और सत्संग में जाने लगे। हजरत ख्वाजा नक्शबन्द (रहम०) की आप पर विशेष कृपा दृष्टि रहती थी। अपने पास आपको बैठाया करते थे और जल्द जल्द आपकी ओर अपना ध्यान आकृष्ट करते थे। अतः थोड़े ही समय में हजरत ख्वाजा नक्शबन्द (कु० सि०) ने हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (रहम०) को आध्यात्मिक साधना में हर प्रकार से पारंगत एवं पूर्ण समर्थ सतगुरु की स्थिति तक पहुँचा कर अपने सभी तालिबों (अध्यात्मविद्या के जिज्ञासुओं) को उनके सुपुर्द कर दिया। आप फरमाया करते थे कि अलाउद्दीन ने मुझे तालिबों को अध्यात्म की शिक्षा दीक्षा देने के भार से मुक्त कर दिया है।

हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) के शरीरान्त के पश्चात् उनके सभी असहाब ने हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (कु० सि०) से बैअत की (दीक्षा ली)। यहाँ तक कि हजरत ख्वाजा मुहम्मद पारसा (कु० सि०) ने भी, जिनके विषय में हजरत ख्वाजा नक्शबन्द (रहम०) ने फरमाया था कि जो मुझको

देखना चाहे वह मुहम्मद पारसा (रहम०) को देखे, हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (रहम०) से बैअत की।

हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) हजरत अलाउद्दीन अत्तार (कु० सि०) को मजलिसों (सम्मेलनों) में अपने पास बिठलाते और हर क्षण उनकी आन्तरिक स्थिति की निगरानी करते। आपके कुछ खास मुरीदों ने आपसे ऐसा करने का कारण पूछा। आपने फरमाया कि मैं उसको अपने पास बिठलाता हूँ ताकि नफ्स (मन) का भेड़िया उसको न खाये। उसके नफ्स का भेड़िया उसके घात में है। इसीलिये हर क्षण उसकी आन्तरिक स्थिति की देखभाल करता हूँ। मेरी हार्दिक अभिलाषा है कि वह खुदा के नूर का मजहर हो जाये (अर्थात् उसके स्वरूप में ईश्वर की ज्योति प्रकट हो)।

हजरत अलाउद्दीन अत्तार (कु० सि०) ने फरमाया कि एक बार जब मैं हजरत ख्वाजा नक्शबन्द (रहम०) की सेवा और सत्संग में जाने लगा, कुछ ही दिनों बाद शैख मुहम्मद दरआहनीन ने मुझसे सवाल किया कि दिल तेरे नजदीक किस कैफियत से है (तुम्हारे हृदय की क्या दशा है)। मैने कहा उसकी कैफियत मुझे नहीं मालूम। उसने कहा कि दिल मेरे नजदीक माह सिह रोजा के मिस्ल है (तृतीया के चन्द्रमा की तरह है)। इसके बाद मैंने हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) से उस शैख के दिल की कैफियत अर्ज की। आपने फरमाया कि वह शैख अपने दिल की कैफियत बयान करता है। आपने जब यह बात मुझसे कही उस समय आप एक जगह खड़े हुये थे और मैं भी उनके नजदीक खड़ा था। आपने अपने एक पैर को मेरे पैर पर रक्खा। तत्काल मेरी एक विचित्र स्थिति हो गई। मुझे अपने हृदय में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड दिखलाई देने लगा। जब वह स्थिति समाप्त हुई हज़रत ख्वाजा नक्शबन्द (रहम०) ने मुझसे फरमाया कि दिल की कैफियत यह

है न कि वह। तू दिल के हाल (दशा) का इद्राक (बोध, ज्ञान) कब कर सकता है। दिल की बुजुर्गी (महानता) वर्णन के परे है। इस हदीस का भेद कि 'जो कुछ जमीन और आसमान में नहीं समा सकता, वह दिल में समा सकता है' कुछ और सूक्ष्म और गूढ़ बातों से सम्बन्ध रखता है। जो शख्स दिल को पहिचाने सो पहिचाने।

कहा जाता है कि बुखारा में एक बार धर्मशास्त्र के विद्वानों में 'रूयत हक' और 'अदम रूयत हक' में बहस छिड़ गई। (रूयत का अर्थ है 'देखना, साक्षात्कार करना' तथा हक का अर्थ है 'ईश्वर'। विद्वानों का वह समुदाय जो 'रूयत हक' के सिद्धान्त में विश्वास करता है उसके मतानुसार ईश्वर का दर्शन अथवा साक्षात्कार किया जा सकता है और 'अदम रूयत हक' के सिद्धान्त में विश्वास करने वाले विद्वानों का यह मत है कि ईश्वर का दर्शन नहीं किया जा सकता और मनुष्य जो कुछ करता है स्वयं करता है। ईश्वर कुछ नहीं करता। इस सिद्धान्त के मानने वाले 'मोतज़ला' सम्प्रदाय के अनुयायी कहे जाते हैं।) इन दोनों सिद्धान्तों के माननेवाले विद्वानों ने बिना आपसी मतभेद के यह तय किया कि बहस का निर्णय हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (रहम०) से कराया जाये और वह जो निर्णय करेंगे हम सभी को मान्य होगा। दोनों समुदाय के विद्वान एक साथ मिलकर हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (कु० सि०) की सेवा में उपस्थित हुये और उनके सामने अपनी समस्या को रक्खा और निवेदन किया कि आप ही इस समस्या के निर्णायक हैं, आप जो कुछ निर्णय करेंगे हम सभी को मान्य होगा। हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (रहम०) ने उस समुदाय के लोगों से जो 'रूयत हक' के सिद्धान्त में विश्वास नहीं करते थे फरमाया कि तुम लोग तीन दिन बराबर हमारे सामने आओ और हमारे सत्संग में पूर्ण पवित्रता के साथ बैठो और बिलकुल चुप रहो, ताकि उसके बाद हम निर्णय करें। वह लोग तीन रोज बराबर हजरत ख्वाजा

अलाउद्दीन अत्तार (कु० सि०) की सेवा में आते रहे और चुपचाप बैठते रहे। अन्तिम तीसरे दिन उन सब लोगों की ऐसी कैफियत (दशा) हुई कि बेखुद (बेहोश) हो गये और जमीन पर लोटने लगे। थोड़ी देर बाद जब होश में आये, उठे और बड़ी ही विनम्रता और दीनता के साथ निवेदन किया कि हमें अब पूर्ण विश्वास हो गया कि 'रूयत हक' है (अर्थात ईश्वर का साक्षात्कार किया जा जा सकता है)। इसके बाद वह सभी लोग हजरत ख्वाजा अला-उद्दीन अत्तार (कु० सि०) की सेवा में उपस्थित होने लगे और उनसे बैअत (दीक्षित) हुये। उस मजलिस में आपके कुछ असहाब ने यह बैत पढ़ी थी :—

कोरे आँ कि गोएदत बन्दा बहक कुजा रसद,
बरकफे हर यके बेनह शमए सफा कि हम चुनी।

(अर्थ—वह अन्धा है जो कि तुझसे कहता है कि बन्दा खुदा तक कैसे पहुँचे ? उसके हाथ पर शमा रख दे जलती हुई और उसको बता कि इस तरह।)

हजरत ख्वाजा मुहम्मद पारसा (कु० सि०) के एक पत्र में में यह लिखा हुआ देखा गया है कि ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (कु० सि०) ने अपनी अन्तिम बीमारी के समय एक बार यह फर-माया था कि ईश्वर की दया कृपा से अपने पीर मुर्शिद हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) के ध्यान में अगर हम चाहें तो सारा संसार मकसूद हकीकी को पहुँच जाये (जीवन का चरम लक्ष्य प्राप्त हो जाये)।

शेर—

गर न टूटे दिल और जबाने राज,
कुफ्ल दुनिया तमाम देता खोल।

हजरत ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार (रहम०) फरमाते थे कि

हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) के खलीफा हजरत ख्वाजा मुहम्मद पारसा (कु० सि०) को तवज्जोह और मराकबा (ध्यान) में गैबत (बेखुदी, बेहोशी) बहुत होती थी और हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (रहम०) को शुऊर (होश, विवेक) और वुकूफ (सचेतन अवस्था) अधिक होता। और इस शुऊर और सह्व (सजगता) की विशेषता को गैबत (बेहोशी) से श्रेष्ठतर माना गया है।

हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (कु० सि०) सत्संग के समय जो उपदेश देते थे उनको हजरत ख्वाजा मुहम्मद पारसा (कु० सि०) ने संकलित किया था। उसी संकलन में से प्रसाद रूप में सात उपदेश नीचे दिये जा रहे हैं :—

(१) फरमाते थे कि रियाजत (सतगुरुदेव द्वारा बतलाई हुई किसी साधना के अभ्यास) का लक्ष्य तअल्लुकात जिस्मानी नफी-कुल्ली और दूर करना (स्थूल शरीर की दसों इन्द्रियों द्वारा होने वाली समस्त क्रियाओं में कर्त्तापन की भावना एवं आसक्ति से अपने को मुक्त करना) और परमात्मा तथा सतगुरुजनों की महान पवित्र आत्माओं की ओर अपने चित्त को पूर्ण एकाग्रता के साथ उन्मुख करना है। सुलूक (ईश्वर प्राप्ति के लिये किये जाने वाले समस्त व्यवहार एवं साधनाओं) का उद्देश्य यह है कि बन्दा (ईश्वर भक्त) स्वेच्छा से पूर्ण संकल्प के साथ अपने सभी कर्मों और क्रिया कलापों को तटस्थ दृष्टा की तरह देखता रहे और इन सभी क्रिया कलापों में कर्त्तापन की भावना एवं आसक्ति का भी सावधानीपूर्वक निरीक्षण करता रहे, क्योंकि हमारे सभी कर्मों में यही आसक्ति एवं कर्त्तापन की भावना ही भक्ति मार्ग में अवरोध उत्पन्न करती है। परन्तु किसी कर्म या व्यवहार में इन दोनों ही वृत्तियों का क्षणिक ठहराव भक्ति के मार्ग में अवरोध उत्पन्न नहीं

करता। हाँ, जब साधक अपने किसी कर्म में इन वृत्तियों का ठहराव और प्रभाव देखे तो तुरन्त परमात्मा से दिली तौबा करते हुये इन वृत्तियों से मुक्ति पाने के लिये आर्द्र आराधना करनी चाहिये। हमारे हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) अपने जीवन के समस्त व्यवहार एवं कर्मों में कर्त्तापन तथा आसक्ति की भावना से इस सीमा तक मुक्त थे कि वह जब नया कपड़ा पहिनते अव्वल कहते थे कि 'यह फलाने का है' और उसे मिस्ल मुस्तआर (किसी से माँगी हुई चीज की तरह) पहिनते।

(२) फरमाते थे कि हमारे महान सतगुरुजनों ने कहा है कि 'तौफीक सई के साथ है' (ईश्वर कृपा अथवा वांछित सफलता प्रयत्न करने से प्राप्त होती है)। इसी तरह साधक के लिये सतगुरु की आध्यात्मिक शिक्षा साधक के प्रयत्न के अनुसार फल देती है और यह प्रयत्न भी सतगुरु द्वारा निर्देशित रीति के अनुसार होना चाहिये। यह बात (तौफ़ीक) बगैर सई (प्रयत्न) के बका नहीं पाती (उसमें स्थिरता अथवा स्थायित्व नहीं आता), क्योंकि सतगुरु की तवज्जोह का प्रभाव साधक के साथ कुछ दिनों से अधिक नहीं रहता। स्पष्ट है कि सतगुरु गैर के साथ (उस मुरीद अथवा साधक के साथ जिसका चित्त ईश्वर की ओर उन्मुख होने की बजाये तमाम सांसारिक विचारों और बातों में ही फँसा रहता है) कब तक मुतवज्जह (आकृष्ट) रह सकता है। आप फरमाते थे कि ईश्वर की मेरे ऊपर अहेतुकी कृपा ही थी कि मुझे आरम्भ से ही सई (कोशिश) का हुक्म दिया गया। यहाँ तक कि हज़रत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) की सोहबत (सत्संग) में मेरा पूरा दिन सई के साथ व्यतीत होता था (मैं दिन भर हर क्षण परमात्मा के ध्यान में ही व्यतीत करने का प्रयत्न करता था) और मेरी जानकारी में असहाब (सत्संगी भाइयों) में से शायद ही कोई ऐसा रहा हो जो पूरा एक दिन सई के साथ व्यतीत करता हो।

(३) फरमाते थे कि जब तालिब (साधक) मुर्शिद (सतगुरु) के हुक्म और उसकी मदद से अपने स्वयं को उस हर एक चीज से खाली कर लेता है जो सतगुरु के प्रेम में रुकावट डालती है, तब सतगुरु अपने शिष्य के हृदय में स्थिर हो जाता है। बस ऐसे साधक (शिष्य) के हृदय पर ईश्वर की अहेतुकी दया कृपा और अनेकों अनुपम् अनुभूतियों का नजूल (अवतरण) होने लगता है। वास्तव में ईश्वर कृपा में कोई कमी नहीं है। जब तालिब ने मवानों (रुकावटों, अवरोधों) को दूर कर दिया, सतगुरुदेव की रुहानियत (आध्यात्मिक साधना) के प्रभाव से साधक को ऐसे ऐसे अनुभव होते हैं और ऐसी आश्चर्यजनक हालतें गुजरती हैं, जिनका किसी भी प्रकार से वर्णन किया जाना सम्भव नहीं है।

(४) साधक की आन्तरिक आध्यात्मिक स्थितियों में श्रेष्ठ स्थिति यह है कि हर दशा में 'पूर्ण समर्पण' की भावना बनी रहे। सभी अवतार और सन्त महात्मा अन्तिम समय तक इसी स्थिति में कायम रहे हैं। ईश्वर भक्त को चाहिये कि वह अपने सभी बाह्य एवं आत्मिक क्रिया कलापों में हर क्षण 'समर्पण' की स्थिति में रहने का प्रयत्न करे। ऐसे साधक के प्रयत्न व साधना के अभ्यास से जो भी हालतें उस पर प्रकट हों उन सबको ईश्वरार्पण करता हुआ वह अपने को ईश्वर इच्छा का निमित्त मात्र समझता रहे। साधक को यह भी चाहिये कि अपने सतगुरु की कृपा से उनके सामने अथवा उनकी अनुपस्थिति में उस पर जो भी हालतें गुजरें उन सभी को ईश्वर कृपा और गुरु कृपा का प्रसाद समझते हुये पूर्ण समर्पण की भावना को ही हर दशा में परिपक्व बनाने का प्रयत्न करता रहे (साधक यही अनुभव करता रहे कि जो भी हालतें मुझ पर गुजर रही हैं वह मेरे प्रयत्न अथवा अभ्यास के कारण नहीं हैं, वरन उन सभी में ईश्वर कृपा और गुरु कृपा को ही देखता रहे। अपने प्रयत्न और अभ्यास के विषय में भी इसी

समर्पण की भावना को पुष्ट करता रहे अर्थात यह समझता रहे कि यह उसका प्रयत्न और अभ्यास भी ईश्वर कृपा और गुरु कृपा से ही हो रहा है। इसी पूर्ण सममर्ण की भावना को ही सूफीमत की साधना में 'तफवीज' कहते हैं)।

(५) फरमाते थे कि खामोश रहना चाहिये जिससे कि इन विशेषताओं से खाली न हो :—खतरों की निगाह दाश्त (उन विचारों की देखभाल करना और रोकना जो हमें ईश्वर की याद से ग़ाफिल अर्थात असावधान करें), हृदय द्वारा जो नाम जप हो रहा है उसके विषय में भी यह देखते रहना कि वह जप निरन्तर हृदय द्वारा होता रहे, तथा अपने ऊपर जो भी हालतें प्रकट होती हैं (जो आत्मिक अनुभूतियाँ होती हैं) उनका मुशाहिदा (निरीक्षण) करता रहे।

(६) फरमाते थे कि अगर जीवन शेष है, ईश्वर इच्छा से बड़ी दीनता और विनम्रता के साथ हज़रत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) की आध्यात्मिक शिक्षा का पहिला तरीका पुनः नये सिरे से ग्रहण करना चाहिये क्योंकि तर्बियत (आध्यात्मिक शिक्षा) के लिये ख़तरात पर मवाखजः करना अच्छा होता है। (उन विचारों को जो हमें ईश्वर की याद से विरत करते हैं सावधानी से अन्तर्निरीक्षण द्वारा पकड़ना और तौबा करके उन्हें दिल से हटाना अच्छा होता है।) हज़रत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (रहम०) अपने जीवन के अन्तिम समय में इस बात पर दुःख प्रकट करते थे कि लोगों को पीरमुर्शिद की तर्बियत (आध्यात्मिक शिक्षा) से जो कुछ प्राप्त होता है उसकी हिफ़ाज़त ध्यानपूर्वक तन्मयता और लगन के साथ नहीं करते।

(७) फरमाते थे कि मैं इस बात का ज़िम्मेदार होता हूँ कि जो तालिब इस सिलसिले की तरीक (साधना-पद्धति) की तक्लीद

(अनुकरण) करेगा निःसन्देह परम लक्ष्य को पहुँचेगा और फरमाया कि हज़रत ख्वाजा वहाउद्दीन (रहम०) ने मुझे अपनी तक्लीद (अपना अनुकरण) करने का आदेश दिया और जिस चीज़ में मैंने उनकी पैरवी की (अनुकरण किया), हर बार मैंने असर और नतीज़ा उसका प्रत्यक्ष देखा ।

जब हज़रत ख्वाजा अलाउद्दीन (रहम०) को मर्ज मौत हुआ (मृत्यु लाने वाली अन्तिम बीमारी हुई), उस समय फरमाने लगे कि मुझको कोई आरज़ू (अभिलाषा) दिल में शेष नहीं है सिवा इसके कि दोस्त आयें और मुझको न पायें और दुःखी होकर वापस हो जायें । अपनी इसी अन्तिम बीमारी के समय आपने अपने असहाब को उपदेश देते हुये फरमाया कि रस्म व आदत को छोड़ दो । (उन आदतों और रूढ़ियों को त्याग दो जो जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त करने में बाधक हों) । जो कुछ कि रस्म व आदत खल्क (दुनिया) की है उसके खिलाफ करो, क्योंकि हज़रत मुहम्मद रसूल अल्लाह (सल्ल०) का अवतरण इस पृथ्वी पर मनुष्य की इन्हीं रूढ़ियों और आदतों को तोड़ने के वास्ते हुआ था । पीरमुर्शिद द्वारा बतलाये हुये सभी कामों को पूरे संकल्प के साथ करो और सुन्नत पर मदावमत करो (उन सभी कार्यों और व्यवहारों का अनुकरण करो जो हज़रत मुहम्मद मुहम्मद (सल्ल०) द्वारा किये गये हों) । इन उपदेशों को देते हुये आपने अपना पार्थिव शरीर त्याग दिया ।

आपका शरीरान्त बीस रजब आठ सौ दो हिजरी को हुआ । आपकी मृत्यु के बाद आपके एक मुरीद ने ख्वाब में देखा कि हज़रत फरमाते है कि अल्लाह तआला ने मुझ पर तरह तरह की मेहरबानियाँ फरमायीं जिनमें से एक यह है कि जो कोई मेरी क़ब्र से चालीस फरसंग की दूरी तक दफ़न होगा वह बख्शा जायेगा

(इसके पाप क्षमा किये जायेंगे और उसको मुक्ति प्रदान की जायेगी)।

•

हजरत मौलाना याकूब चर्खी (रहमतुल्लाहु अलैहि)

यद्यपि हजरत मौलाना याकूब चर्खी (रहम०) को गुरु-पदवी का अधिकार हजरत ख्वाजा नक्शबन्द (रहम०) से प्राप्त हुआ था परन्तु आपको अध्यात्म शिक्षा की पूर्णता हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (रहम०) की सेवा में प्राप्त हुई। यही कारण है कि आप हजरत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (रहम०) के खलीफाओं में गिने जाते हैं। आरम्भ में आपने हिरात के जामिअः (विश्वविद्यालय) में तथा कुछ समय मिश्र में विद्याध्ययन किया। इसके पश्चात् आपके हृदय में ईश्वर प्रेम का कुछ ऐसा जज्बा पैदा हुआ कि हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) से अध्यात्म शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से उनकी सेवा में उपस्थित होने के लिये रवाना हुये। मार्ग में एक मज्जूब (अवधूत) मिला। उसने कहा कि 'ऐ याकूब, जल्द जल्द कदम उठा। वह वक्त आ गया कि तू मकबूलों (ईश्वर के प्यारों) में से हुआ और कुछ खत (रेखाएँ) जमीन पर खींची। मौलाना याकूब चर्खी (रहम०) ने दिल में ख्याल किया कि यह खत ताक में होंगे (ऐसी संख्या में होंगे जो दो से पूरी पूरी न कटे) तो मैं यह समझूँगा कि मेरा उद्देश्य पूरा हो जायेगा। अतः उन रखाओं को गिना तो वह ताक संख्या में ही थीं। इसके बाद बुखारा में आये। कुरआन शरीफ में फाल देखी

(शकुन विचारा) तो पहिली पंक्ति में आयत निकली 'उलाएक़ल्ल-जीना हदाहुमुल्लाहो फ़बे हुदहुम इकतदेह' (वह वह लोग हैं जिनकी अल्लाह ने हिदायत की है अर्थात् जिनको अल्लाह ने सन्मार्ग दिखाया है और उनकी रहनुमाई की है। तुम भी उनकी हिदायत की पैरवी करो अर्थात् तुम भी उनके बतलाए हुये मार्ग का अनुसरण करो)। इस इशारा गैबी (ईश्वरीय संकेत) से बहुत खुश हुये और हज़रत ख्वाजा नक्शबन्द (रहम०) की सेवा में उपस्थित हुये।

फरमाया कि जिस समय मैंने ख्वाजा नक्शबन्द (रहम०) से अपना इरादा जाहिर किया, इन्होंने फरमाया कि हम तो मामूर हैं (आदेश का पालन करने वाले हैं)। स्वयं कोई काम नहीं करते। आज रात को मालूम करेंगे। जो कुछ इशारा होगा वैसा ही किया जायेगा। हजरत याकूब चर्खी (रहम०) फरमाते थे कि जितनी कठिनाई से वह रात मुझे व्यतीत करनी पड़ी है वैसी कोई रात नहीं व्यतीत हुई। मुझे यह भय था कि देखिये वह मुझे अपनी शरण में लेते हैं या नहीं। आखिरकार सुबह की नमाज मैंने हज़रत ख्वाजा नक्शबन्द (रहम०) के साथ पढ़ी। बाद नमाज़ उन्होंने फरमाया कि 'मुबारक' हो, जिससे मैं समझ गया कि उन्होंने मुझे अपनी शरण में लेने के लिये अनुमति प्रदान कर दी है। उन्होंने मुझे 'वकूफ अददी' की तालीम फरमाया (इस साधना-पद्धति में साधक को यह ध्यान रखना पड़ता है कि जब ईश्वर-नाम का जप करे तो ताक संख्या में करे अर्थात् वह संख्या जो दो से पूरी कटे। नक्श-बन्दिया सिलसिले के सन्तों का यह फरमाना है कि ऐसा करने में ईश्वर के साथ मुनासबत अथवा लगाव है क्योंकि हजरत मुहम्मद (सल्ल०) ने फरमाया है 'खुदा एक है और इकाई को पसन्द करता है') और फरमाया कि जहाँ तक सम्भव हो ताक संख्या का हमेशा ध्यान रखना।

जब मझे हजरत ख्वाजा नक्शबन्द (रहम०) की सेवा में

अध्यात्म की शिक्षा ग्रहण करते हुये कुछ समय व्यतीत हुआ, तब हज़रत ने मुझे यात्रा करने का आदेश दिया और यह भी फरमाया कि जो कुछ हमसे मिला है बन्दाने खुदा (ईश्वर-भक्तों) को पहुँचाना और तीन बार फरमाया 'तुझको खुदा के सुपुर्द किया, तुझको खुदा के सुपुर्द किया, तुझको खुदा के सुपुर्द किया' और उस वक्त हज़रत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (रहम०) की मुताबअत (आज्ञा पालन, अनुकरण) के लिये मुझसे इशारा किया (संकेत रूप में कहा)। मैं उनसे बिदा होकर कैश में पहुँचा। वहाँ मुझे सूचना मिली कि हज़रत ख्वाजा नक्शबन्द (रहम०) का शरीरान्त हो गया। मुझे बहुत ही दुःख हुआ और मैं निराश हो गया। मुझे यह अन्देशा हुआ कि ऐसा न हो कि मेरा दिल इस ब्रह्म विद्या की ओर से हटकर दुनियावी कामों में लग जाये और मुझमें ईश्वर-भक्ति की चाह और लगन ही न रहे। अतः इसी चिंता में कैश से बदख्शाँ आया और वहाँ से चर्ख जाने का इरादा किया, जिससे कि वहाँ लोगों को अध्यात्म की शिक्षा प्रदान करने में अपने को लगाऊँ। इसी बीच हज़रत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (रहम०) का पत्र मुझे मिला, जिसमें उन्होंने मुझे हज़रत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) के संकेत रूप में दिये गये उस हुक्म की ओर स्मरण दिलाया जिसमें उन्होंने मुझे हज़रत ख्वाजा अलाउद्दीन (रहम०) की मुताबअत (अनुकरण) के लिये कहा था। मैं तुरन्त उस पत्र के मिलते ही उसी समय हज़रत ख्वाजा अलाउद्दीन अत्तार (रहम०) की सेवा उपस्थित हुआ। उन्होंने मेरे ऊपर विशेष दया-कृपा की और मैं बहुत दिनों तक उनके सत्संग से फैजयाब होता रहा, यहाँ तक कि उनका शरीरान्त हो गया। फरमाया 'उस वक्त मेरे दिल में ख्याल आया कि हज़रत ख्वाजा नक्शबन्द (रहम०) की आज्ञा का पालन करने के लिये कोशिश की जाये (उन्होंने यह हुक्म दिया था कि जो कुछ हमसे मिला है ईश्वर भक्तों को पहुँचाना)

यद्यपि मैं अपने को इस योग्य नहीं पाता, मैंने विचार किया कि हज़रत ख्वाजा नक्शबन्द (रहम०) का फरमाना हिकमत (बुद्धिमत्ता, विवेक) से खाली न होगा। अतः उन्हीं की प्रेरणा से जिज्ञासुओं और साधकों को ब्रह्म विद्या की तालीम देने में लग गया।

हज़रत मौलाना याकूब चर्खी (रहम०) एक विद्वान् लेखक तथा कुरआन शरीफ के प्रसिद्ध भाष्यकार थे। सन् ८५१ हिज़री में आपका शरीरान्त हुआ और बलग़ानौर स्थान में आपको दफन किया गया।

•

हज़रत ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार (कुद्स सिर्रहू)

हजरत ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार (कु० सि०) का शुभ जन्म माह रमजान ८०६ हिजरी को ताशकन्द मुल्क के मौजा बागिस्तान में हुआ था। जन्म के चालीस रोज बाद तक निफास की अवधि में (वह अवधि जब प्रसूतिका के शरीर से बच्चा जनने के कारण रक्त-स्राव होता रहता है) आपने अपनी पूज्य माता जी का दूध नहीं पिया। जब वह चालीस रोज बाद स्नान आदि करके पवित्र हो गईं तब उनका दूध पिया। आपके पूज्य दादा जी (बाबा) हज़रत ख्वाजा शहाबुद्दीन (रहम०) ने जो कुतुब वक्त थे (उस समय के उच्च कोटि के महात्मा थे) अपने प्राणान्त के समय अपने पोतों को अन्तिम बार देखने के लिये बुलाया। उस वक्त जब हज़रत उबैदुल्लाह (रहम०) जो बहुत छोटी उम्र के थे उनके पास गये, वह इनको देखकर ताजीम (आदर तथा सम्मान) के लिये

उठ खड़े हुये और गोद में ले लिया और फरमाया कि इस बच्चे के विषय में मुझको बशारत नबवी है (हजरत मुहम्मद सल्ल० ने मुझे शुभ सूचना दी है) कि यह पीर आलमगीर होगा (ऐसा महात्मा जिसका सारे विश्व में नाम होगा) और इससे तरीकत (ब्रह्मज्ञान, अध्यात्म) और शरीअत (धर्मशास्त्र) को प्रकाश मिलेगा।

हजरत ख्वाजा अहरार (रहम०) ने फरमाया कि मैं एक व्यापारी से हजरत ख्वाजा याकूब चर्खी (रहम०) की प्रशंसा सुनकर उनकी सेवा में उपस्थित होने के लिए बलग़नौर स्थान के लिये रवाना हुआ और रास्ते में बीमार पड़ गया और बीस रोज़ तक जाड़ा-बुखार से पीड़ित रहा। इस बीमारी के समय में कुछ लोगों ने मुझसे मौलाना याकूब चर्खी (रहम०) की चुगली और बुराई की। मैंने चाहा कि वहाँ से वापस हो जाऊँ। फिर यह ख्याल आया कि इतनी दूर तक का सफर तय कर लिया है, तो अब बिना मिले हुये वापस जाना उचित नहीं। अतः वहाँ से रवाना हुआ और मौलाना की खिदमत में हाजिर हुआ। वह बड़े ही आक्रोश और गुस्से से पेश आये। उस वक्त मेरे दिल में ख्याल गुजरा कि उनका यह गुस्सा उनकी चुगली और बुराई सुनने की वजह से है जो मैंने बीमारी की हालत में लोगों से सुनी थी। मगर उन्होंने अपने गुस्से का कोई कारण मुझसे नहीं बतलाया और अपने आप ही थोड़ी देर बाद बड़े प्रेम और प्रसन्नता के साथ मुझसे बातें करने लगे। बातचीत के सिलसिले में उन्होंने हजरत ख्वाजा नक्शबन्द (रहम०) से अपनी मुलाकात का हाल बयान किया। इसके बाद अपना हाथ मेरी तरफ बैअत करने के लिये (दीक्षा देने के लिये) बढ़ाया। लेकिन चूँकि उनके माथे पर एक सफेद दाग था, उनसे मुझको घृणा पैदा हो गई। उन्होंने अपने आत्मिक-ज्ञान से मेरी इस भावना को समझ लिया और अपना हाथ तुरन्त खींच लिया और उसी समय अपनी

आत्मिक-शक्ति से वह ऐसी आकर्षक और मोहनी सूरत में प्रकट हुये कि मेरे दिल में उनके प्रति एक अजीब आकर्षण पैदा हुआ। उन्होंने फिर अपना हाथ बढ़ाया और फरमाया कि हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) ने मेरा हाथ पकड़ कर फरमाया था कि तेरा हाथ मेरा हाथ है, जिसने यह हाथ पकड़ा उसने गोया ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) का हाथ पकड़ा। मैंने उसी वक्त बिना किसी झिझक के तत्काल मौलाना याकूब चर्खी (रहम०) का हाथ पकड़ लिया। उन्होंने मुझको 'वकूफ अददी' के अभ्यास में लगाया और फरमाया कि हजरत ख्वाजा नवशबन्द (रहम०) से जो कुछ मुझे पहुँचा है वह यही है। अगर तुम बतरीक जज्बा जिज्ञासुओं और साधकों की तरबियत करो (अध्यात्म की शिक्षा दो) तो इसका तुम्हें अधिकार है। इस बात से मौलाना याकूब चर्खी (रहम०) के कुछ मुरीदों को बुरा लगा कि इतनी जल्दी उन्होंने ख्वाजा अहरार (रहम०) को बैअत करके उनको अध्यात्म की शिक्षा देने के लिये अधिकार प्रदान कर दिया। हजरत मौलाना याकूब चर्खी (रहम०) ने फरमाया कि ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार में कुव्वत (सामर्थ्य) व तसर्रुफ सब मौजूद है (वह आध्यात्मिक शक्ति जिसके द्वारा पीरमुर्शिद कोई भी वांछित स्थिति अथवा परिवर्त्तन स्थूल अथवा सूक्ष्म जगत में उत्पन्न कर सकता है 'तसर्रुफ' कहलाती है और योगशास्त्र में इसे 'ऋद्धि-सिद्धि' कहते हैं)। फरमाया कि तालिब (साधक, जिज्ञासु) को इस तरह पीर (सतगुरु) के पास आना चाहिये जैसे कि उबैदुल्लाह आया है कि तेल-बत्ती दुरुस्त है, सिर्फ आग लगाने की देर है।

हजरत ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार (रहम०) ने फरमाया कि जब मैंने हजरत मौलाना याकूब चर्खी (रहम०) से इजाजत चाही तो हजरत ख्वाजगान के तमाम तरीक (साधना के सभी ढंग) बयान किये और जब 'तरीक रावता' पर पहुँचे, फरमाया कि

इसकी तालीम देने में तुम दहशत न करना (डरना नहीं)। (राबता का शाब्दिक अर्थ होता है 'लगाव अथवा सम्बन्ध।' सूफीमत में पीर मुर्शिद से रूहानी निस्बत बनाये रखने के लिये जो साधना या अभ्यास किया जाता है उसको 'तरीक राबता' कहते हैं। इस प्रकार से रूहानी निस्बत को दृढ़ बनाने के कई ढंग हैं, उनमें से एक तसव्वुरे-शैख अर्थात् सतगुरु का ध्यान है। और फरमाया कि साहबे इस्तेदाद (सुपात्रों) को यह तरीक बतला देना। फरमाया कि अगर तुमको ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शदन्द (रहम०) की सोहबत से रूहानी निस्बत हासिल हो और फिर तुम किसी और बुजुर्ग के पास जाओ और वहाँ भी वही निस्बत हासिल हो तो तुम क्या ख्याल करोगे ? फिर स्वयं ही आपने फरमाया कि जिस जगह से निस्बत हासिल हो उसको यही ख्याल करना कि वह ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) से ही मिल रही है और इसके विषय में एक घटना सुनाई :—

"शैख कुतुबुद्दीन हैदर (कु० सि०) का एक मुरीद शैख शहाबुद्दीन सुहरवर्दी (रहम०) की खानकाह (आश्रम) में गया। बहुत ज़ोर की भूख लगी थीं। उसने पीर की तरफ मुँह करके अर्ज़ किया 'या कुतबुद्दीन, मैं भूखा हूँ'। शैख सहाबुद्दीन (रहम०) ने उसका हाल मालूम करके कहा कि इसको खाना खिलाओ। खाना खाने के बाद उस मुरीद ने अपने पीर के गाँव की तरफ मुँह करके फरमाया 'शुक्र अल्लाह। या कुतुबुद्दीन हैदर (रहम०), आप मुझको किसी जगह नहीं भूलते।' यह घटना उस सेवक ने जिसने उस मुरीद को खाना खिलाया था अपने मालिक हज़रत शैख शहाबुद्दीन सुहरवर्दी (रहम०) को सुनाई और कहा कि यह दर्वेश अजीब आदमी है कि खाना तो आपका खाया और शुक्र कुतुबुद्दीन हैदर का किया। हज़रत ने फरमाया कि मुरीदी इस दर्वेश से सीखना चाहिये कि ज़ाहिर (सांसारिक) या बातिन

(आत्मिक) जिस तरह का तथा जहाँ कहीं से फ़ायदा हो अपने पीर ही से ख्याल करता है (यही समझता है कि मुझे यह फायदा मेरे पीर से ही मिल रहा है।

नक्शबन्दिया सिलसिले के महत्वपूर्ण ग्रन्थ 'रशहानुल 'हयात' में लिखा हुआ है कि हजरत ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार (रहम०) को चार साल की उम्र से ही निस्बत आगाही बजनाब हक सुबहाना हासिल थी (हर समय ईश्वर की याद और ध्यान में रहते थे)। हजरत फरमाते थे कि लड़कपन में मैं मकतब (पाठशाला) आता जाता था। मैं हर समय अल्लाह तआला से हाजिर और अगाह रहता (मैं हर समय ईश्वर की याद में रहता था और यह अनुभव करता था कि मैं उस परम पिता परमात्मा के सामने हाजिर हूँ)। उस जमाने में मेरा विश्वास था कि दुनिया के सब आदमी छोटे बड़े इसी तरह हर समय ईश्वर की याद में रहते हैं। एक बार उस जमाने में जाड़े का मौसम था। एक जंगल में मेरे पैर दलदल में फँस गये और जूते मेरे पैर से निकल गये और दलदल में रह गये। उस समय तेज ठंडी हवा चल रही थी। ज्योंही मैं अपने जूते दलदल से निकालने लगा कुछ क्षणों के लिये ईश्वर की याद से गाफिल हो गया। मुझे अपनी इस गलती पर बड़ा दुःख हुआ और बड़ी देर तक व्याकुलता के साथ रोता रहा। मेरी यह धारणा थी कि ईश्वर ने संसार के सभी लोगों को इस प्रकार पैदा किया है कि वे अल्लाह तआला से गाफिल (असावधान) न रहें। बहुत समय बाद मुझे यह ज्ञात हुआ ईश्वर का अनवरत हर समय का स्मरण और उसका ध्याद यह स्थिति ईश्वर की असीम दया कृपा से कुछ ही लोगों को सुलभ होती है और कुछ लोग बड़ी तपस्या साधना और अभ्यास के बाद इस स्थिति को पहुँचते हैं और कुछ लोग तो ऐसे हैं कि तपस्या साधना और अभ्यास के बावजूद भी उन्हें यह स्थिति सुलभ नहीं होती।

हजरत ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार (रहम०) फरमाते थे कि आरम्भ में मेरे दिल में विनम्रता और दीनता की भावना इस हद तक व्याप्त थी कि जो व्यक्ति चाहे वह छोटा हो या बड़ा, गरीब हो या अमीर मेरे पास आता मैं अपना सर उसके पैरों पर रखता और उससे बड़ी इन्कसारी और विनम्रता के साथ निवेदन करता कि वह मेरे कल्याण के लिये ईश्वर से प्रार्थना करें।

हजरत फरमाते थे मैं मीरजा शाहरुख के जमाने में हेरात में रहता था और उन दिनों धन-दौलत के नाम पर मेरे पास एक पैसा भी नहीं था। एक पुरानी पगड़ी मेरे पास थी, उसमें चाँदी के कुछ चंदोए सिले हुये थे। एक रोज बाजार में जा रहा था। रास्ते में एक फकीर मिला। उसने मुझसे भिक्षा माँगी। मेरे पास कुछ न था जो उसको देता। मैंने अपनी पगड़ी सर से उतारी और एक नानबाई (रोटी बेंचने वाले) के पास ले गया और कहा कि यह मेरी पगड़ी पाक (पवित्र) है। अपनी देग धोने के बाद देग को इससे पोंछ सकते हो। इसे रख छोड़ो और इसके बदले में इस फकीर को कुछ देदो। उस नानबाई ने भिक्षा देकर उस फरीर को प्रसन्न कर दिया और मेरी पगड़ी मुझे बड़े अदब के साथ वापस की। लेकिन मैंने उस पगड़ी को स्वीकार नहीं किया और उसी के पास छोड़ दी। मैंने अपनी गरीबी की हालत में भी बहुत से लोगों की इसी प्रकार की सेवाएँ की हैं। मेरे पास यात्रा के लिये न घोड़ा था और न दूसरी कोई सवारी। मैं एक साल तक एक मिरजई पहिनता था, जब तक कि उसकी रूई बाहर निकल आती थी और तीन साल तक एक पोस्तीन पहिनता था (रुवेंदार जानवर की खाल से बनाया हुआ कोट जो शीत प्रधान देशों में पहना जाता है 'पोस्तीन' कहलाता है) और तीन साल तक ताबिस्तान का बना हुआ मोजा पहनता था।

फरमाते थे कि एक बार यात्रा करते समय जाड़े का मौसम

था कि मौलाना मुसाफिर के साथ मैं साहरखिया में आया। वहां एक घर हमारे पास था जिसका दरवाजा सड़क की तरफ था और मकान की जमीन सड़क से बहुत नीची थी और वर्षा के समय मिट्टी और कीचड़ मकान के अन्दर आ जाता था। मैं सुबह के वक्त मस्जिद में जाता और वहाँ नमाज पढ़ता। उस जाड़े के मौसम में मेरे कपड़े बहुत बारीक थे। मेरे नीचे का आधा शरीर ठंडा रहता था और ठंडक की वजह से जरा भी गर्म न होता था। उन कष्ट-दायक विपरीत परिस्थितियों में भी मैं पूर्ण रूप से सन्तुष्ट रहता था। इस प्रकार मैंने अपने जीवन में सन्तोष रूपी सम्पत्ति प्रचुर मात्रा में अर्जित की है। परन्तु यदि मनुष्य सन्तोष को निष्क्रियता तथा बेकारी के जीवन का कारण बनाता है, तो इस प्रकार का सन्तोष उसे पतन की ओर ही उन्मुख करेगा। इसलिये मनुष्य को विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में भी निराश होने की बजाये पूर्ण सन्तोष के साथ सदैव पुरुषार्थ और परिश्रम करते रहना चाहिये और इसी स्थिति को 'उसकी रजा में राजी रहना' कहते हैं।

हजरत ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार (रहम०) ने अपने जीवन के आरम्भ से लेकर अन्त तक कभी भी किसी से भेंट स्वरूप कोई चीज स्वीकार नहीं की। एक बार मौलाना अहमद कारेजी (रहम०) ने जो उस जमाने के बहुत बड़े साधक थे, हजरत ख्वाजा अहरार (रहम०) के लिये अपने हाथ से सफेद पशमीना के ऊन का एक जोड़ा मोजा बनाया और उसको बनाते समय इस बात का ध्यान रक्खा था कि वह उस समय ईश्वर की याद से गाफिल नहीं रहते थे। उन मोजों को भेंट स्वरूप हजरत ख्वाजा अहरार (रहम०) के पास एक शख्स के जरिये भेजा। जब हजरत (रहम०) की नजर उन मोजों पर पड़ी तो उस शख्स ने अर्ज किया कि आप इस तुच्छ भेंट को स्वीकार करने की कृपा करें क्योंकि इसमें से बुए

सिद्क आती है (सत्यता की सुगन्ध निकलती है अर्थात् यह भेंट हलाल की कमाई की है तथा ईश्वर के ध्यान में बनाई गई है)। हजरत ने फरमाया कि हमने अपनी तमाम उम्र कोई चीज किसी से कुबूल (स्वीकार) नहीं की, अतः हमारी ओर से मौलाना अहमद कारेजी (रहम०) से क्षमा माँग लेना। आपने उस भेंट को अपनी ओर से बन्द कागजों में कोई चीज भेंट स्वरूप रखकर वापस कर दी।

हज़रत फरमाते थे कि जब हम हेरात में थे हज़रत सैयद क़ासिम तबरेज़ी की सेवा में बहुत जाते थे और आप मुझे फलों के रस का जूठन, जो वह पिया करते थे, देते थे और फरमाते थे कि 'ऐ तुर्किस्तान के शैखज़ादा (शैख अथवा सतगुरु की सन्तान) ! जिस तरह मेरे आस पास यह फलों का ढेर इकट्ठा है, इसी तरह तेरे पास धन-दौलत इकट्ठा होगी। हज़रत फरमाते थे कि उस वक्त मैं गरीबी की जिन्दगी व्यतीत कर रहा था और त्याग तथा निस्पृहता का जीवन व्यतीत करने का अभ्यास करने में तल्लीन रहता था। जब आपकी उम्र बाइस साल की हुई कि आपके मामू ख्वाजा इब्राहोम (रहम०) आपको ताशकन्द से जो आपकी जन्मभूमि थी, समरकन्द सांसारिक विद्याओं का अध्ययन करने के लिये ले गये परन्तु आप पर ब्रह्म विद्या की साधना का इतना प्रभाव रहता था कि वह सांसारिक विद्या के अध्ययन में बाधक बना रहता था। अतः समरकन्द छोड़कर दो वर्ष मावराउलनहर शहर में वहाँ के सन्तों-महात्माओं के सतसंग में व्यतीत किया और अपनी उम्र के चौबीसवें साल में हिरात में आये। वहाँ पाँच साल तक उस समय के प्रसिद्ध सन्तों-महात्माओं के निकट सम्पर्क में रहे। २९ वर्ष की उम्र में वह अपनी जन्म भूमि तासकन्द वापस आये। वहाँ खेती शुरू की और किसी काश्तकार के साझीदार होकर एक जोड़ी बैल से खेती शुरू की। उन पर कुछ ऐसी ईश्वर की कृपा हुई कि थोड़े ही समय में उनकी

खेती में बड़ी बरक़त (वृद्धि, बढ़ोत्तरी) हुई। 'रशहानुल हयात' ग्रन्थ के लेखक ने अपने इस ग्रन्थ में लिखा है कि जब मैं दूसरी बार हज़रत अहरार (रहम०) के दर्शनों के लिये गया तो वहाँ उनके अहलकारों (कर्मचारियों) से सुनता था कि हज़रत के खेतों की संख्या १३०० से भी अधिक बढ़ गई है। और उन्हीं दिनों यह सुना गया कि हज़रत ने और भी बहुत से खेत खरीद लिये हैं। एक बार वह हज़रत के एक कारिन्दा के घर पर रात को ठहरे। उन्होंने उस कारिन्दा से पूँछा कि कितने जोड़ी बैल की खेती होती है। उसने कहा कि हर साल अनाज बोने के लिये हर जोड़ी पर एक आदमी बाहर जाता है। इस प्रकार इस काम के लिये तीन हज़ार आदमी अनाज बोने के लिये बाहर जाते हैं। एक रोज हज़रत ने स्वयं सतसंग के समय बातचीत के सिलसिले में फरमाया कि मैं हर साल समरकन्द के खास मज़रो में से अस्सी हजार मन गल्ला (समरकन्द की तौल से) अपनी मालगुज़ारी के रूप में सुल्तान अहमद मीरज़ा को देता है। और फरमाया कि अल्लाह तआला ने मेरे माल में ऐसी बरक़त दी है कि गल्ला का वज़न जो अच्छे जानकार लोग अन्दाज़ से एक हज़ार मन आँकते हैं, वह तौल के समय चौदह पन्द्रह सौ मन होता है। आपका एक कर्मचारी जो गल्ले की तौल आदि का काम देखता था कहता था कि कभी कभी गल्ले का खर्च पैदावार से अधिक होता था लेकिन यह आश्चर्य की बात थी कि अनाज़ के भण्डार खाने में साल के आखिर में अनाज का ढेर लगा रहता था। एक बार इसी कर्मचारी ने हज़रत से इस रहस्य का कारण पूछा। उन्होंने फरमाया कि हमारा माल फ़कीरों के वास्ते है। ऐसे माल की यही विशेषता होती है।

इतनी अपार धन सम्पदा होते हुये भी हज़रत ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार (रहम०) एक उच्चकोटि के सन्त तथा पूर्ण समर्थ

सतगुरु थे। एक दिन उन्होंने अपनी इसी सांसारिक धन दौलत की ओर परोक्ष रूप से संकेत करते हुये कुरआन शरीफ़ की इस आयत करीमा 'इन्ना आतैना कल कौसर' के अर्थ समझाते हुये फरमाया कि कुछ भाष्यकारों ने इस आयत की व्याख्या करते हुये कहा है कि दिया हमने तुझे कौसर (स्वर्ग का एक कुंड) अर्थात अनेकता में एकता के दर्शन रूपी स्वर्ग का कुण्ड। अतः जो शख्स इस आध्यात्मिक स्थिति को पहुँच चुका है कि इस सम्पूर्ण सृष्टि के कण-कण में उस परम ब्रह्म का ही तेज और प्रताप उसे दिखलाई पड़ता है तो ऐसी स्थिति को पहुँचे हुये व्यक्ति के लिये यह सांसारिक धन-दौलत किस प्रकार उसकी साधना, भक्ति और ईश्वर के प्रेम में हिजाब (पर्दा, रुकावट) पैदा कर सकती है ? हज़रत अब्दुर्रहमान जामी (कु० सि०) ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'तोहफतुल अहरार' में हज़रत ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार (रहम०) की प्रशंसा में उनके इस महान आध्यात्मिकता से परिपूर्ण व्यक्तित्व की ओर संकेत किया है :—

बैत—(फारसी में)

ज़ाद बजहाँ नौबते शहन्शही, कौ कबए फुक्र उबैदुल्लाही !
आँ कि ज़ हुर्रियत फुक्र आगह अस्त, ख्वाजा अहरार उबैदुल्लाह अस्त !

रुए जमीन कश न सरो न बुन अस्त,
दर नजरश चूँ रुए एक नाखुनस्त।
एक रुए नाखुन चू बदस्त आयदश,
कै बरहे फुक्र शिकस्त आयदश।
लज्जए बहरे अहदियत दिलश,
सूरते कसरत सदफ साहिलश।
हस्त दराँ लज्जए ता कारवाब,
कुब्बए नुह तवी फलक यक हुबाब !

अनुवाद :—

(फकीर उबैदुल्लाह रहम० के लश्कर (फौज) ने आलम (संसार) में शाहन्शाही की नौबत (दुन्दुभी) बजाई है। हजरत फुक्र (साधुता) की आजादी से खबरदार हैं (अर्थात् यह सांसारिक यश उनके आध्यात्मिक जीवन में किसी प्रकार की रुकावट नहीं (डालता)। उन ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार (रहम०) की नजर में यह सारी दुनिया एक नाखून के रुख (कोना) के बराबर है अतः ऐसे महान व्यक्ति को अगर नाखून का एक कोना मिल जाए, तो यह अकिंचन तुच्छ वस्तु उसके आध्यात्मिक साधना के जीवन में किस तरह कमी आने दे सकती है। उनके हृदय रूपी समुद्र में अहदियत (अद्वैत अर्थात् परम ब्रह्म) का कोलाहल (नाद) होता रहता है। उनके जीवन की अनेकता (उनके सांसारिक एवं अध्यात्मिक जीवन के अनेकानेक रूप) उस हृदय रूपी अथाह समुद्र के किनारे पड़े हुये सीपियों के समान हैं। उनके हृदय रूपी समुद्र की गहराई, जिसमें अहदियत (परम ब्रह्म) का नाद हो रहा है, अथाह है। उस अथाह समुद्र की तुलना में आसमान की नौपरतों का गुम्बद एक बुलबुले के समान है।)

हजरत अहरार (रहम०) अपने आरम्भिक जीवन से लेकर जीवन के अन्तिम समय में भी जब कि आपको सांसारिक तथा आध्यात्मिक दोनों क्षेत्रों में अपार यश और सम्मान प्राप्त हो चुका था पर-सेवा व परोपकार में कभी किसी से पीछे नहीं रहे। फरमाते थे कि मैं जिस वक्त मदरसा मौलाना कुतुबुद्दीन सदर में था दो तीन मरीजों की सेवा सुश्रुवा करता, जिन्हें मर्ज खुशयः था (ऐसी बीमारी जिसमें बहुत तेज बुखार आता है)। वह मरीज बीमारी की तीव्रता के कारण बेहोश हो जाते थे और उनके बिछौने धोने के लायक होते थे, मैं उनको धोता था, गन्दगी उनसे दूर करता।

इस प्रकार की घटना जल्द जल्द होती। इन मरीजों की सेवा-सुश्रुवा के कारण मुझे भी वह बीमारी हो गई और जिस रात को मुझे तेज बुखार था, उस रात को भी मैं तीन चार पानी के घड़े लाया और मरीजों के कपड़े और बिस्तर धोये। फरमाते थे कि जब हेरात में था सुबह रोज पीर हरीमीर के हम्माम (स्नानागार जहाँ किसी मस्जिद अथवा संत महात्मा के किसी आश्रम की ओर से यात्रियों तथा फकीरों के स्नान के लिये प्रबन्ध रहता है) जाता था और वहाँ लोगों की सेवा करता था। इस सेवा में मैं भले-बुरे, छोटे-बड़े, गुलाम-आजाद, अमीर-गरीब किसी में भेद नहीं करता था (सब की एक समान सेवा करता था)। वहाँ लोगों की सेवा करने के पश्चात् मैं तुरन्त वहाँ से भाग जाता था जिससे कि लोग मुझे मेरी सेवा का पारिश्रमिक न देने लगें। फरमाते थे कि नक्शबन्दिया सिलसिले की पद्धति में इस बात का ध्यान रखा जाता है कि तन और मन दोनों ही हर समय ऐसे कर्म तथा व्यवहार में लगाये रखना चाहिये, जो उस समय की माँग हो (उस समय जो कर्त्तव्य करना आवश्यक हो उसे करना चाहिये)। जिक्र (ईश्वर का नाम-जप) तथा मराक्बा (ध्यान) उस समय न करना चाहिये जब कि किसी को हमारी सेवा से राहत (आराम) मिल रही हो। ऐसी सेवा जो किसी जरूरतमन्द के दिल को राहत पहुँचाने वाली है जिक्र और मराकबा से हर दशा में श्रेष्ठ है। फरमाते थे कि हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) और उनके अनुयायी आसानी से किसी की खिदमत कुबूल (स्वीकार) नहीं करते थे। ऐसा करने का यह कारण है कि किसी की सेवा और आदर-सत्कार दोनों ही एहसानात (कृतज्ञताएँ) हैं और जो सेवा करता है उसके प्रति हृदय में आसक्ति और लगाव उत्पन्न होना स्वाभाविक है और चूँकि यह हजरात (ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) के अनुयायी) पूरे संकल्प और दृढ़ता के काथ हमेशा आसक्ति तथा सांसारिक

लगाव से विरत रहने की पूरी कोशिश करते हैं, अतः जहाँ तक सम्भव होता है वे किसी की सेवा स्वीकार नहीं करते। हाँ, उस व्यक्ति की सेवा स्वीकार करते हैं जिसमें यह क्षमता देखते हैं कि वह उनकी रूहानियत तथा रहनी-सहनी से दिन पर दिन लाभान्वित हो रहा हो और उसकी आसक्ति व सांसारिक लगाव इन सतगुरुजनों की सोहबत और तवज्जोह से कम होता जा रहा हो और अन्ततोगत्वा ऐसे शख्स के इस निस्पृह और आसक्ति रहित जीवन से दूसरे लोग भी प्रभावित एवं लाभान्वित हो रहे हों। केवल ऐसे ही व्यक्ति की सेवा ये सन्तजन स्वीकार करते हैं। फरमाते थे कि मैंने रूहानियत का यह तरीका सूफी सन्त मत की किसी पुस्तक से नहीं सीखा है, बल्कि खिदमत से मुझे यह प्राप्त हुआ है। और न मुझे किसी ने यह तरीका सिखलाया है, बल्कि खिदमत (सेवा) की यह विशेषता है कि यह तरीका स्वयं सेवक को अपने आप मालूम हो जाता है। ईश्वर अपने प्रत्येक भक्त को किसी न किसी द्वार (मार्ग) से अपने निकट बुलाता है। मुझे परमात्मा का सानिध्य सेवा के मार्ग से प्राप्त हुआ है, इसीलिये मुझे सेवा अत्यन्त प्रिय है। इसी सन्दर्भ में आपने एक बैत पढ़ी :—

हिम्मत तुरा बकन्गुरहे क़िब्रिया कशद,
आँ सक्फ़ गाह रा बेह अज़ीं निर्दबाँ मख्वाह।

(हिम्मत किब्रियाई (ईश्वरत्व) के कँगूरे तक तुझे लेजाती है, उस छत तक पहुँचने के लिये जीना (सीढ़ी) इससे (हिम्मत से) बेहतर मत चाह)। फिर फरमाया कि मैं इस बैत को इस तरह पढ़ता हुँ—'खिदमत तुरा बकन्गुरहे किब्रिया कशद' (अर्थात खिदमत तुझे क़िब्रियाई (ईश्वरत्व) के कँगूरे तक ले जाती है)।

हज़रत अहरार (रहम०) के दिल में अपार करुणा और दया भरी हुई थी। हमेशा अपने सेवकों, कर्मचारियों तथा सतसंगी

भाईयों के आराम और सुख-सुविधा का व्यक्तिगत रूप से विशेष ध्यान रखते थे। आपके मुरीद हज़रत मीर अब्दुल अव्वल (रहम०) ने अपनी रचनाओं में एक जगह लिखा है कि एक बार हजरत अहरार (रहम०) अपने सेवकों और कर्मचारियों के गिरोह के साथ बसन्त ऋतु में कश नगर के लिये जा रहे थे। रास्ते में शाम हो गई, अतः उस रात को एक पहाड़ के नीचे रुक गये। सेवकों ने खेमा खड़ा किया। मग्रिब की नमाज के बाद पानी बरसने लगा। हजरत ने फरमाया कि यह खेमा मुझे अपवित्र मालूम होता हैं, अतः इसमें रुकने में मुझे उलझन व परेशानी महसूस हो रही हैं। मैं इसमें न रुकूँगा। मेरे साथी और कर्मचारी इसमें रहें। उस खेमे के अलावा कोई दूसरा खेमा न था, अतः मजबूरन हजरत के सभी साथी और कर्मचारी आपकी आज्ञानुसार उस खेमे में रुके। उस रात को बराबर तेज पानी बरसता रहा। जब सुबह हुई आपने नमाज फ़ज्र की पढ़ी, और उसके बाद अपने कुछ साथियों से फरमाया कि हमको शर्म आती थी कि हम खेमे में रहें और लोग पानी में भींगें और जो कुछ उन्होंने उस खेमा के बारे में कहा था (कि वह अपवित्र है इसलिये मुझे इसमें ठहरने में उलझन हो रही है) एक बहाना मात्र था, जिससे कि उनके साथी और कर्मचारी उनके आदेशानुसार उसमें निश्चित होकर ठहर सकें। उनके कुछ असहाब ने अपनी रचनाओं में लिखा है कि एक बार गर्मी के मौसम में तेज गर्म हवा चल रही थी, उसी मोके पर हजरत अहरार (रहम०) को किसी जरूरी काम से एक मजरा बजाउर्द को जाना पड़ा। साथ में उनके सतसंगी भाई लोग थे। उस मजरा के किसानों के पास एक छोटा सा खेमा था। उन लोगों ने हजरत के लिये उसे एक जगह गाड़ दिया। वहीं आस-पास उस खेमे के अलावा कोई छायादार जगह न थी। उनके सतसंगी भाईयों को बड़ा संकोच हो रहा था कि इस छोटे से खेमें में हम हजरत के

साथ रुकें और उनके पास बैठें। जब हवा तेज और ज्यादा गर्म होने लगी हजरत ने अपना घोड़ा मँगवाया और अपने असहाब से कहा कि मैं चाहता हूँ कि इस वक्त कुछ और जरूरी काम देख लूँ। अतः आप उसी समय घोड़े पर सवार होकर चल दिये। आप उसी कड़ी धूप में उस वीरान भूमि में घूमते रहे। वहाँ दूर तक चारों ओर कोई दरख्त नहीं था। जब गर्म हवा बहुत तेज होती तो फटी हुई जमीन और पानी के बनाये हुये गढ़ों की छाया में अपना सर मुबारक रखते और आपके बदन का अधिकांश हिस्सा खुली तेज धूप में रहता। इसी हालत में वहाँ आराम करते। जब हवा की गर्मी और तेजी कम होती उस समय आप उस खेमें में आते। जितने दिनों आप वहाँ ठहरे आप ऐसा ही बहाना बनाकर दोपहर को तेज धूप में घूमते रहते थे। आखिरकार उनके असहाब जान गये कि हजरत ने उन सभी लोगों के आराम और सुविधा के लिये स्वयं उस तेज धूप और अत्यधिक गर्मी में अकेले उस वीरान जगह में घूमना पसन्द किया।

हजरत ख्वाजा अहरार (रहम०) के इर्शादात (उपदेश)

फरमाया जीवन उस व्यक्ति का सार्थक है जिसका दिल दुनियाँ से सर्द हुआ हो और अल्लाह तआला के जिक्र से गर्म! फरमाया कि मुरीद वह है कि बतासीर इरादत (सतगुरु के प्रति आस्था के प्रभाव से) उसकी तमाम इच्छाएँ जल गई हों और उसकी कोई इच्छा न रही हो और अपना ध्यान सब तरफ से हटाकर केवल सतगुरुत की तरफ रखे—

बैत—

आँरा कि दर समय निगारस्त फारिग अस्त
अज बोस्ताँ व तमाशाए लालाजार।

(वह आदमी जो महबूब के सराय में है, उसे चमन (बगीचा) और लालाजार के फूलों के देखने की जरूरत नहीं है)।

फरमाया कि जो शख्त फकीरों की सुहबत में आये, चाहिये कि अपने तई निहायत मुफलिस (अत्यन्त दीन) जाहिर करे ताकि उस पर उनको रहम आये। फरमाया कि अगर दर्वेश (साधु, महात्मा) की शक्ल दीवार पर खिंची हो तो उसके नीचे भी अदब के साथ गुजरना चाहिये। फरमाया कि व्यवहार और आचरण का प्रभाव जमादात (जड़ पदार्थों) पर भी पड़ता है। यही वजह है कि अगर कोई व्यक्ति ऐसी जगह नमाज पढ़े जहाँ अनुचित व्यवहार और आचरण होते हों, तो उस जगह की नमाज में, चित्त की वह एकाग्रता और शान्ति नहीं मिलेगी जो कि ऐसी जगह पढ़ी गई नमाज में सुलभ होगी, जहाँ सन्त महात्मा और ईश्वर-भक्त एकत्रित होकर नमाज पढ़ते हों। और यही कारण है कि पवित्र काबा की दो रक्अत नमाज और जगह की सत्तर रक्अत नमाज के बराबर है।

फरमाया कि अबू तालिब मक्की (कु० सि०) का कथन है कि कोशिश करे कि आरजू (इच्छा) अल्लाह तआला के सिवा दिल में न रहे और अगर यह बात हासिल हो गई तो तेरा काम पूरा हो गया और चाहे अहवाल (हालतें, आध्यात्मिक स्थितियाँ) मवाजिद (किसी साधना से उत्पन्न भावावेश की स्थितियाँ) व कश्फ (आत्मिक शक्ति द्वारा गुप्त बातों के जानने की क्षमता) व करामात (चमत्कार) जाहिर हों या न हों कुछ अफसोस नहीं। फरमाया कि हजरत सैयद अताएफा (कु० सि०) का कथन है कि सादिक (सच्चा) मुरीद वह है कि बीस साल तक कातिब शिमाल (बायें हाथ का वह फरिश्ता (देवता) जो हमारे गुनाहों को लिखता है) कोई चीज (गुनाह) न पाये कि इस पर लिखें और इसके यह मानो नहीं है

कि किसी मुरीद से कोई गुनाह ही न हो बल्कि इसके यह मानी हैं कि मुरीद कातिब शिमाल के लिखने से पहले उसका प्रायश्चित और तदारुक कर ले (ऐसा उपाय करे कि भविष्य मे वह गुनाह फिर से न हो)।

फरमाया कि हजरत मौलाना निजामुद्दीन खामोश (रहम०) शरीअत, तरीकत व हकीकत को इस तरह मिसाल देकर (उदाहरण प्रस्तुत कर) समझाते थे कि झूठ मना है। पस अगर कोई शख्स इस तरह कोशिश करे कि उसकी जबान से झूठ न निकले लेकिन दिल में झूठ बोलने की ख्वाहिश (इच्छा) बनी रहे तो यह शरीअत है और दिल से भी झूठ बोलने की ख्वाहिश जाती रहे तो यह तरीकत है और अगर बइख्तियार और बेइख्तियार (इच्छा व अनिच्छा पूर्वक दोनों ही प्रकार से) जबान व दिल से यह बात निकल जाती है तो वह हकीकत है।

फरमाया फनाँ मुतलक (बिल्कुल फनाँ होना अर्थात परमात्मा में पूर्णरूप से लीन होना) के यह मानी है कि अपने जीवन की सभी उपलब्धियों, गुणों, व कर्मों का कर्त्ता अपने को न समझकर पूर्ण विश्वास, श्रद्धा और प्रेम के साथ परमात्मा को ही उन सभी अपने सद्गुणों तथा कर्मों का कर्त्ता समझे। फिर उदाहरण देकर समझाया कि यह वस्त्र जो मैं पहिने हूँ आरियती (माँगा हुआ) है, लेकिन मुझको इसके आरियती होने का ज्ञान नहीं है और मैं यह भी जानता हूँ कि यह मेरा ही है, इसीलिये मुझको इसके साथ तअल्लुक (लगाव) है। अगर मुझको यह ज्ञान हो गया कि यह वस्त्र आरियती (माँगा हुआ दूसरे का) है, तो फिलहाल मेरा लगाव उस वस्त्र से मुन्कता (समाप्त) हो जायेगा, यद्यपि मैं इसको उसी तरह पहिने हुये हूँ जिस तरह पहिले पहिने हुये था। इसी प्रकार अपने जीवन के सभी कर्म-व्यवहार, उपलब्धियों तथा सद्गुणों को यही समझना चाहिये कि ये सब परमपिता परमात्मा के ही दिये हुये हैं और वही इन

सबका कर्त्ता और प्रेरक है ! यही दर्वेशी (सन्यास अथवा साधुता) है, जिसको लोग बहुत लम्बी चौड़ी बनाये हुये हैं।

फरमाया कि हिम्मत इसे कहते हैं कि किसी काम के वास्ते इस तरह दिल को जमा करे (एकाग्र करे) कि उसके विरुद्ध कोई विचार दिल में न आये, यहाँ तक कि अगर कोई काफिर (नास्तिक) भी उसी काम के वास्ते हमेशा दिल को एकाग्र किये रहे तो वह काम हो जाता है। इसमें नमाज व अमल सालेह (नेक कर्म) की शर्त नहीं है। फरमाया जब किसी शख्स को अल्लाह तआला तौबा की तौफीक अता करे (अपने पापों के लिये प्रायश्चित करने की भावना और क्षमता प्रदान करे) तो उसे इस राह में (इस अध्यात्म मार्ग में) इस तरह कदम रखना चाहिये कि पूरी हिम्मत के साथ इस प्रयत्न में तल्लीन रहना चाहिये कि कोई क्षण ईश्वर की याद से गाफिल (असावधान) न हो, और सुहबत नाजिन्स (दुनियादार) से परहेज करे।

बेत—नहस्त मोएजत पीर सुहबत ई हर्फ अस्त,
कि अज मुसाहिद नाजिन्स एतराज कुनेद।

(सबसे पहले पीर सुहबत की तुमको यह नसीहत है कि नाजिन्स (दुनियादार) साथी की सुहबत से बचो)। नाजिन्स से आशय दुनियादार और अध्यात्म मार्ग से विपरीत मार्ग पर चलने वाले हैं।

इस मानी (अर्थ) में कि अजनबी (अपरिचित, दुनियादार) की सुहबत सालिक की निस्बत में फुतूर (विकार) पैदा करती है आपने फरमाया कि एक दिन शैख अबू यजीद (कु० सि०) को सतसंग के अवसर पर उन्हें अपनी रूहानी निस्बत में फुतूर (विकार) का अनुभव हुआ। उन्होंने अपने मुरीदों से कहा कि तलाश करो हमारे सतसंग में कोई बेगाना (दुनियादार जो ईश्वर की याद से गाफिल हो) पैदा हुआ है कि यह फुतूर (विकार) उसी के कारण

है। मुरीदों ने बड़ी तलाश की और शैख से अर्ज किया कि यहाँ तो कोई बेगाना नहीं दिखलाई पड़ता। आपने कहा 'असाखाना (छड़ियों के रखने की जगह) में तलाश करो।' वहाँ देखा तो एक बेगाना की छड़ी रक्खी हुई थी। तत्काल उसे दूर फेंका। उसके फेंकते ही शैख की रूहानी निस्बत में जो फुतूर पैदा हो गया था दूर हो गया।

फरमाया कि दरवेशी (साधुता) वह है जो कि पीर हेरात (कु० सि०) ने फरमाई है—

खाके बेख्तः व आबी बराँ रेख्तः, न पुश्त पाए रा अजाँ गरदी व न कफे पाएरा वरदी। (मिट्टी छानी जाये और उसमें पानी डाला जाये तो उसमें पैर डालने पर पैर की तलहटी तथा पैर का ऊपरी हिस्सा दोनों में मिट्टी का असर न हो)। खुलासा दरवेशी (साधुता का निचोड़ अथवा सार) यह है कि सब किसी का बार (बोझ) उठाये (लोगों की मुसीबतों में काम आए तथा दूसरों के कष्ट दूर करने के लिये सदैव तत्पर रहे) और किसी पर अपना बार न रखे, न सूरत में (प्रकट रूप में) और न मानी में (आन्तरिक रूप में)।

फरमाते थे कि हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन (कु० सि०) ने एक रोज फरमाया कि मैंने दो आदमी मक्का मुबारक में देखे। एक बड़ा हिम्मत वाला और दूसरा बहुत कम हिम्मत वाला। कम हिम्मत वाला वह था कि मैंने उसे परिक्रमा करते समय देखा कि वह दोनों हाथ बांधे हुये (एक दूसरे पर रक्खे हुये) था और ऐसे महान पवित्र स्थान पर और ऐसे सुअवसर पर अल्लाह तआला से गैर हक सुबहाना (ईश्वर के अलावा दुनियाँ की) कोई चीज माँग रहा था और बड़ा हिम्मत वाला शख्स वह था कि जिसने मेना की बजार में पचास हजार दीनार के करीब सौदा खरीद फरोख्त किया (खरीदा और बेंचा) और उस वक्त एक लमहा (क्षण) को उसका

दिल अल्लाह तआला से गाफिल न हुआ। उस शख्स की इस हालत को देखकर मुझे अपने ऊपर बहुत ही लज्जा आई।

फरमाया कि जब मैं ख्वाजा अलाउद्दीन गुज्दवानी (रहम०) की खिदमत से अलग होता था और अपने वतन को जाने लगता था तो वह मुझसे फरमाते थे कि अपने दिल में यह संकल्प कर कि फलाने (अमुक) मौजा तक अपनी निस्वत (ईश्वर अथवा सतगुरु के सानिध्य की आत्मिक अनुभूति) से गाफ़िल न हूँगा और जब तू उस मौजा में पहुँचे तो अगले मौजा का नाम ले और वहाँ तक अपने को निस्वत पर कायम रख। इसी तरह मौजा बमौजा और मंजिल बमंजिल इस निस्बत की वर्जिश (अभ्यास) कर जब तक कि मलका (पूर्ण निपुणता, दक्षता) हासिल न हो।

फरमाते थे कि एक रोज मैं हजरत मौलाना निजामुद्दीन (कु० सि०) की सेवा में उपस्थित हुआ। आप कुछ मौलवियों से मुबाहिसा (धर्मशास्त्र के किसी विषय पर बहस) कर रहे थे और मैं खामोश था। जब उस बहस से निवृत्त हुये मेरी तरफ मुखातिब (आकृष्ट) होकर मुझसे कहा सकूत (मौन, खमोशी) और आराम बेहतर है या हदीस और कलाम (हजरत मुहम्मद सल्ल० के उपदेश तथा अन्य धार्मिक उपदेश कहना)? फिर खुद ही फरमाया कि मैं देखता हूँ कि अगर इन्सान कैद हस्ती (अपने अस्तित्व अथवा कर्त्तापन के अहंकार के बन्धन) से मुक्त हो गया है तो जो कुछ करे माने नहीं है (उसकी आध्यात्मिक प्रगति में बाधक नहीं है) और अगर गिरफ्तार खुदी है (कर्त्तापन के अहंकार के बन्धन में) है तो उसके कर्म या व्यवहार दण्डनीय हैं। हजरत अहरार (रहम०) ने फरमाया कि हमने मौलाना निजामुद्दीन (रहम०) से कोई बात इससे बेहतर (श्रेष्ठ) नहीं सुनी।

फरमाते थे कि कुछ सन्तों ने कहा है कि शैख (सतगुरु) ऐसा चाहिये कि मुरीदों (शिष्यों) को खासके। जो शैख ऐसा न हो

उसे शैखी नहीं पहुँचती (वह सतगुरु की पदवी के योग्य नहीं है)। और मुरीद को खाने के मानी (अर्थ) यह हैं कि शैख ऐसा हो कि बातिन मुरीद में तसर्रुफ कर सके (शिष्य की आध्यामिक प्रगति के लिये उसके अन्तःकरण अथवा हृदय की दशा को वांछित रूप में परिवर्त्तित कर सके) और उसके बुरे एख़लाक (आचरण) को दफा करे (समाप्त करे) और उनके स्थान पर एखलाक हमीदा (श्रेष्ठ आचरण) कायम (स्थापित) करे और उसको हुजूर और आगाही के दर्जे तक पहुँचा सके।

फरमाते थे कि जिक्र (नाम-जप) एक बसूले की तरह है कि उससे खतरों के काँटे राह से दूर करते हैं (वह सांसारिक विचार जो साधक को ईश्वर की याद से गाफिल करते हैं उन्हें 'खतरा' कहते है।)

फरमाते थे कि शरीअत है, तरीकत हैं और हक़ीकत है। शरीअत एहकाम का (धर्मशास्व द्वारा आदेशित कर्म तथा आचरण का) सम्पादन जाहिर पर (बाह्य रूप में) करना है और तरीकत उन कर्मों को हृदय की एकाग्रता एवं निष्ठा तथा पूरे प्रयत्न के साथ सम्पादित करना है और हकीकत उन कर्मो के सम्पादन में एकाग्रता, निष्ठा और प्रयत्न में निपुणता प्राप्त करना है।

कहा जाता है कि जब हजरत ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार (रहम०) के हृदय में ऐसी ईश्वरीय प्रेरणा उत्पन्न हुई कि वह सलातीन (बादशाहों) से मेलजोल पैदा करें, जिससे कि उनमें धार्मिक एवं आध्यात्मिक भावना का संचार हो, तब हजर ख्वाजा अहरार (रहम०) समरकन्द गये। उस वक्त मिरजा अब्दुल्ला बिन मिरजा इब्राहीम बिन मिरजा शाहरुख समरकन्द का बादशाह था। बादशाह का एक अमीर (सरदार) हजरत अहरार (रहम०) से मिलने गया। हजरत ने उससे फरमाया कि मैं तुम्हारे बादशाह

से मिलने के लिये आया हूँ। अगर तुम्हारी कोशिश से मुलाकात हो जाये तो तुमको इसका सबाब (पुण्य) मिलेगा। उस सरदार ने अशिष्टता पूर्वक जवाब दिया कि मिरज़ा बादशाह एक बेपरवाह (निश्चित) जवान है। उससे मुलाकात होनी मुश्किल है। इसके अलावा दर्वेशों (सन्तों) को ऐसी बातों की क्या जरूरत है। हजरत को उस सरदार की यह बात बहुत बुरी लगी और फरमाया कि मुझको बादशाहों से मिलने का हुक्म हुआ है। मैं खुद नहीं आया हूँ। तुम्हारा मिरजा परवाह (चिन्ता) न करेगा, कोई और आयेगा जो परवाह करेगा। जब वह अमीर बाहर चला गया हजरत अहरार (रहम०) ने उस अमीर का नाम दीवाल पर लिखा और थूक से उसको मिटा दिया और फरमाया कि हमारा काम इस बादशाह और अमीर से निकलता मालूम नहीं होता और उसी दिन ताशकन्द की ओर चल दिये। एक हफ्ते बाद वह अमीर मर गया और एक महीने के बाद समरकन्द के बादशाह मिरजा अब्दुल्लाह पर तुर्किस्तान के बादशाह मिरजा अबूसईद ने हमला किया और उसको क़त्ल कर दिया।

कहा जाता है कि उक्त घटना के पूर्व तुर्किस्तान के बादशाह मिरज़ा अबू सईद ने हजरत ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार (रहम०) को ख्वाब में देखा था और आपका नाम भी स्वप्न में मालूम किया था। जब जागा तो लोगों से दरियाफ्त किया कि क्या कोई दरवेश (संत) जिसका नाम ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार (रहम०) है इस शक्ल और हुलिया का इस दरबार में है ? लोगों ने कहा कि ताशकन्द में है। फौरन वह सवार होकर ताशकन्द को गया, लेकिन हजरत ख्वाजा अहरार (रहम०) मिरजा के आने की खबर सुनकर अलग एकान्त में चले गये। मिरजा वहाँ एकान्त में ही उनसे मिलने गया। जिस वक्त उसने हजरत अहरार (रहम०) के दर्शन किये वह आश्चर्य चकित होकर कहने लगा 'कसम अल्लाह की कि जिस शख्स

को मैने ख्वाब में देखा था वह यही हैं' और आपके चरणों पर गिर पड़ा। हजरत ने भी उस पर विशेष कृपा की और उसे अपनी रूहानी निस्बत की ओर आकर्षित किया। उसके बाद उस मिरजा के पास बहुत बड़ी फौज एकत्रित हो गई। उसने हजरत अहरार (रहम०) से निवेदन किया कि आप मुझे आशीर्वाद दें कि मैं समरकन्द पर विजय प्राप्त करूँ। हजरत ने फरमाया कि तुम किस उद्देश्य से समरकन्द पर विजय प्राप्त करना चाहते हो? अगर शरीअत की तक्वियत (पृष्ठपोषण) तथा धर्म के प्रचार का उद्देश्य है तो जाओ तुम्हारी विजय होगी। उसने निवेदन किया कि मैं तन, मन, धन से शरीअत का पृष्ठपोषण करूँगा। हजरत अहरार (रहम०) ने फरमाया कि अब तुम शरीअत के संरक्षण में आ गये और तुम्हारी मनोकामना पूर्ण होगी। (हजरत की आज्ञा से मिरजा अबू सईद ने समरकन्द के बादशाह पर आक्रमण किया और उसको कत्ल किया, जैसा ऊपर के अनुच्छेद में इस घटना का वर्णन हुआ है)!

कहा जाता है मिरजा बाबर एक लाख फौज लेकर समरकन्द पर हमला करने के लिये रवाना हुआ। समरकन्द का बादशाह मिरजा अबूसईद हजरत ख्वाजा अहरार कु० सि० की खिदमत में हाजिर हुआ और उनसे निवेदन किया कि मुझ में बाबर से मुक़ाबला करने की सामर्थ्य नहीं है? क्या उपाय करूँ? हजरत ने फरमाया तुम्हारी लड़ाई मैंने अपने ऊपर लेली और मैं उसका जिम्मेदार हूँ। अतः ख्वाजा अहरार (रहम०) की कृपा से बाबर की फौज पर ऐसी बला नाज़िल हुई (विपत्ति आई) कि वह स्वयम मिरजा अबू सईद से सुलह करने के लिये इच्छुक हुआ और जान बचाकर वापस गया। फरमाया कि अगर मैं पीरी करूँ तो इस जमाने में किसी पीर को मुरीद न मिले लेकिन ईश्वर ने मेरे सुपुर्द और ही काम कर रक्खा है। मुसलमानों की अत्याचारियों के अत्याचार से रक्षा करूँ और शरीअत का प्रचलन करूँ, इसी उद्देश्य से बादशाहों

की तस्वीर करता हूँ (बादशाहों को वशीभूत करता हूँ)। फरमाया ईश्वर ने मुझे इतनी सामर्थ्य प्रदान की है कि अगर गल्ती करने वाले किस बादशाह को पत्र लिखकर भेज दूँ तो वह बादशाहत छोड़कर नंगे पैर मेरे चौखट पर हाजिर हो। लेकिन मैं बिना फरमाने इलाही (बिना ईश्वरीय प्रेरणा के) खुद कुछ नहीं करता हूँ और अदब (शिष्टाचार) भी यही है कि अपने इरादे (संकल्प, इच्छा) को अल्लाह तआला के इरादे के तावे (अधीन) करे, न कि अल्लाह तआला के इरादे को अपने इरादे के तावे करे।

कहा जाता है कि एक बार हजरत ख्वाजा अहरार (रहम०) अपनी मित्र मण्डली के साथ कहीं यात्रा पर जा रहे थे। रास्ते में शाम हो गई। जिस स्थान को पहुँचना था वह बहुत दूर था और रास्ता खतरनाक था। आपके सभी मित्र बहुत ही चिंतित हुए। हजरत कुछ क्षणों के लिये मौन हो गए और अपनी आत्मिक प्रेरणा से अवगत होकर फरमाया कि चिंता न करो, ईश्वर-इच्छा से हम-लोग सूर्यास्त से पहिले पहुँच जायेंगे। अतः ऐसा ही हुआ कि जब तक शहर के करीब न पहुँचे सूर्य अपने उसी स्थान पर रुका रहा, जैसे किसी ने उसे अपनी आत्मिक शक्ति से एक जगह रोक दिया हो। और जैसे ही शहर की दीवार के नीचे पहुँचे, तत्काल सूर्य अस्त हो गया और इस कदर देरी हो गई थी कि रात का अँधेरा चारों ओर छाया हुआ था। हजरत के सभी मित्रगण अत्यन्त आश्चर्य चकित हो गये और हजरत से इस घटना का रहस्य ज्ञात किया। आपने फरमाया कि यह भी तरीक़त (अध्यात्म) के चमत्कारों में से एक है।

कहा जाता है कि एक बार दो दर्वेश (साधु) बड़ी दूर से हजरत ख्वाजा (रहम०) के दर्शनों के लिये आये। जब खानकाह (आश्रम) में पहुँचे तो मालूम हुआ कि हजरत ख्वाजा अहरार (रहम०) बादशाह के पास गये हैं। वे यह बात सुनकर बहुत

हैरान हुये कि यह कैसे शैख (पीर, सतगुरु) हैं कि बादशाह के पास जाते हैं और 'बेशल फकीरो अला बाबिल अमीरे' (फक़ीर का अमीर के दरवाजे पर आना बहुत बुरा है) यह कथन इन पर चरिचार्थ होता है। संयोग से उसी समय दो चोर बादशाह के दरबार से भाग आये थे, उनकी खोज हो रही थी। यह दोनों दवेंश मिल गये। सिपाही इन्हें चोर समझकर इनको पकड़ कर बादशाह के पास ले गये। बादशाह ने फरमाया कि शरीअत (धर्मशास्त्र के नियम) के अनुसार इनके हाथ काट दो। हजरत ख्वाजा अहरार (रहम०) ने जो बादशाह के पास बैठे हुये थे फरमाया कि ये दवेंश मुझसे मिलने के लिए आये थे। अतः हजरत अहरार (रहम०) इन दर्वेशों को अपने साथ लेकर चले आये। जब मकान पर पहुँचे उनसे कहा कि मैं इसीलिये बादशाह के पास गया कि तुम्हारे हाथ कटने से बचाऊँ। उक्त कथन (कि फक़ीर का अमीर के दरवाजे पर आना बहुत बुरा है) मेरे ऊपर उस समय चरितार्थ होता, जब कि मैं बादशाह के पास अपने किसी निजो स्वार्थ की पूर्त्ति के लिये जाता।

कहा जाता है कि एक आलिम (ज्ञानी) हजरत ख्वाजा अहरार (रहम०) की प्रशंसा सुनकर उनके दर्शनों के लिये रवाना हुआ। जब वह शहर के प्रवेश द्वार पर पहुँचा, देखा कि बहुत बड़ी मात्रा में अनाज शहर के अन्दर जा रहा है। उस आलिम ने लोगों से पूँछा यह किसका अनाज है। मालूम हुआ कि हजरत ख्वाजा अहरार (रहम०) का है। यह जानकर वह आलिम बहुत ही अचम्भित हुआ और मन में सोचने लगा कि कहाँ यह फकीरी और कहाँ यह अनाज का ढेर। उसके दिल में ख्याल आया कि लौट चलें, लेकिन फिर ख्याल किया कि जब इतनी लम्बी यात्रा तय कर ली तो मिलकर ही वापस जाना चाहिये। जब खानकाह (आश्रम) में दाखिल हुआ तो उस समय हजरत अहरार (रहम०) घर में थे। यह आलिम वहीं बैठ गया। अचानक उसे झपकी लग गई। क्या

देखता है कि कयामत बरपा है (महाप्रलय का दृश्य उपस्थित है) एक शख्स जिसका यह आलिम कर्जदार था आकर उससे अपना कर्ज वापस माँगने लगा और वह चाहता था कि उस आलिम को अपने साथ दोज़ख़ (नर्क) में ले जाये। उसी समय हजरत अहरार (रहम०) तशरीफ लाये और उस शख्स से पूँछा कि तेरा कितना कर्ज इस आलिम पर है। उसने जितना कर्ज बतलाया उतना कर्ज हज़रत ने अपने पास से देकर उस आलिम की मुक्ति कराई। उसी समय उस आलिम को आँख खुल गई। देखा कि हज़रत अहरार (रहम०) घर में से तशरीफ ला रहे हैं। हज़रत ने मुस्करा कर उससे फरमाया कि मैं इसीलिये माल (धन-दौलत) रखता हूँ कि तुझ जैसे आदमी को कर्ज से नजात (मुक्ति) दिला दूँ।

कहा जाता है कि सुल्तान अबू सईद मिरजा को हजरत ख्वाजा अहरार (रहम०) के सामने तौबा करने के बाद (अपने गुनाहों और बुरी आदतों के लिये प्रायश्चित के पश्चात्) कई बार शराब पीने की तीव्र इच्छा मन में पैदा हुई। उसने नौकर से कहा कि दीवार के नीचे ले आना, मैं उसे कोठे पर ले लूँगा। जब वह शराब लाया मिरजा ने पगड़ी बाँध कर शराब का कूजा (भँड़िया, छोटा घड़ा) ऊपर खींचा। कूजा दीवार से टक्कर खाकर टूट गया। इस बात से मिरजा को बहुत दुःख हुआ। प्रातःकाल जब मिरजा हजरत की खिदमत में हाजिर हुआ, आपने उससे पहिली बात यह कही कि रात मैंने तुम्हारे शराब के कूजे की टूटने की आवाज सुनी। अगर वह कूजा न टूटता तो मेरा दिल तुमसे टूट जाता और फिर हमारी तुम्हारी मुलाकात न होती।

आपका शरीरान्त २९ रबीउल अव्वल ८९५ हिजरी में हुआ।

कहा जाता है कि जब हजरत अहरार (रहम०) का शरीरान्त का समय निकट आया, उस समय बहुत से दीपक जल रहे थे, कि

यकायक आपके दोनों भौहों के मध्य से एक नूर (प्रकाश) जाहिर हुआ और सभी दीपकों की रोशनी पर ग़ालिब आ गया (सबसे अधिक तीव्र हो गया)।

●

हज़रत मौलाना मुहम्मद ज़ाहिद (कु० सि०)

हजरत मौलाना मुहम्मद ज़ाहिद (कु० सि०) ने हजरत ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार (रहम०) से रूहानी निस्बत हासिल की थी। आप हजरत मौलाना याकूब चर्खी (कु० सि०) के रिश्तेदार, बल्कि कहते हैं कि उनके नवासे थे और उनके किसी खलीफ़ा से जिक्र व तालीम हासिल करके एकान्तवास ग्रहण कर लिया था और आध्यात्मिक साधना के अभ्यास और तपस्या में लगे रहते थे और इसके बाद हजरत ख्वाजा अहरार (रहम०) की खिदमत में हाजिर हुये, जिसका विवरण इस प्रकार है कि उन्होंने एक बार हजरत अहरार (रहम०) के विषय में जब यह सुना कि वह एक उच्चकोटि के सन्त तथा पूर्ण समर्थ सतगुरु की स्थिति में हैं, वह उनके दर्शनों के लिये समरकन्द में पहुँचे। मुहल्ला वानसर में रुके और इरादा किया कि कपड़े बदल करके उसी मुहल्ले में जहाँ हजरत अहरार (रहम०) का मकान था वहाँ जायें। उसी समय हजरत ख्वाजा अहरार (रहम०) को आत्मिक-ज्ञान से यह मालूम हो गया कि मौलाना मुहम्मद ज़ाहिद जो उच्चकोटि के सन्त तथा ऋद्धियों-सिद्धियों के भण्डार हैं इस शहर में मुझसे मिलने आये हैं। अतः उसी समय, जब कि दोपहर की तेज धूप और गर्मी थी, आप एक ऊँट पर सवार हुये और उसकी बाग छोड़ दी कि जिस तरफ चाहे

चला जाये। संयोग से उसी मुहल्ला वानसर में ऊँट एक मकान के आगे रुक गया। हजरत ख्वाजा अहरार (रहम०) ने फरमाया 'यहाँ कौन ठहरा हुआ है ?' किसी ने कहा मौलाना मुहम्मद जाहिद ठहरे हुए हैं। यह सुनकर हजरत ख्वाजा अहरार (रहम०) ऊँट से उतर पड़े। मौलाना को जब आपके शुभागमन की सूचना मिली, आप बेचैन होकर तत्काल उनके स्वागत के लिये दौड़ पड़े और उनके चरण स्पर्श किये और उसी मकान में एकान्त में सत्संग किया। मौलाना ने अपनी साधना तथा आध्यात्मिक स्थितियों का सम्पूर्ण विवरण हजरत अहरार (रहम०) से बतलाया और उनसे बैअत (दीक्षा) के लिये विनम्र निवेदन किया। अतः हजरत अहरार (रहम०) ने उस पहिली बैठक में ही मौलाना को बैअत करके अपनी तवज्जोह व तसर्रुफ से पूर्ण समर्थ सतगुरु की स्थिति पर पहुँचाकर उन्हें अपना खलीफा बनाया और वहाँ से उन्हें बिदा कर दिया। इस पर हजरत ख्वाजा अहरार (रहम०) के पुराने शिष्यों ने आपसे शिकायत की कि आपने मौलाना मुहम्मद जाहिद (रहम०) को पहिली बैठक में ही अपना खलीफा बना दिया और हम वर्षों से सत्संग में आ रहे हैं हमारी दशा पर ध्यान नहीं देते। हजरत ख्वाजा अहरार (रहम०) ने फरमाया कि मौलाना मुहम्मद जाहिद चिराग़ बत्ती दुरुस्त करके लाये थे, मैंने सिर्फ उसको रोशन (प्रज्ज्वलित) कर दिया और उन्हें बिदा कर दिया। इस घटना से हजरत ख्वाजा अहरार कु० सि० का उच्चकोटि का तसर्रुफ और हजरत मौलाना मुहम्मद जाहिद (कु० सि०) की महान सुपात्रता और आध्यात्मिक योग्यता का प्रमाण मिलता है।

हजरत मौलाना मुहम्मद जाहिद (कु० सि०) का शरीरान्त गुर्रा रबीउल अव्वल ९३६ हिजरी को हुआ। आपका मदफन (कब्र) हिसार के एक समीपवर्ती मौजा बहिश में है।

●

हज़रत मौलाना दरवेश मुहम्मद (कु० सि०)

हजरत मौलाना दरवेश मुहम्मद (कु० सि०) को अपने मामा मौलाना मुहम्मद ज़ाहिद (कु० सि०) से रूहानी निस्बत हासिल थी। कहा जाता है कि बैअत (दीक्षा) से १५ वर्ष पूर्व से साधना के अभ्यास व तपस्या में लगे रहते थे। जंगलों में इन्द्रिय निग्रह तथा एकान्तवास का जीवन व्यतीत करते हुये बिना खाये और बिना सोए हुये रहा करते थे। एक रोज भूख से अत्यन्त विवश हो गये और आसमान की तरफ मुंह उठाया। तत्काल हजरत खिज्र अलैहिस्सलाम प्रकट हुए और फरमाया कि अगर तेरा उद्देश्य सब्र (धैर्य्य) व कनाअत (सन्तोष) प्राप्त करना है तो ख्वाजा मुहम्मद जाहिद (रहम०) की खिदमत में हाजिर हो, क्योंकि वह तुझे सब्र व तवक्कुल (भरोसा) सिखलायेंगे। हजरत दरवेश मुहम्मद (रहम०) हजरत मौलाना मुहम्मद ज़ाहिद की सेवा में उपस्थित हुए और पूर्ण समर्थ सन्त तथा अध्यात्म विद्या में पूर्ण रूप से पारंगत सतगुरु की स्थिति तक पहुँचे। हजरत मौलाना मुहम्मद जाहिद (रहम०) के शरीरान्त के पश्चात उनके नायब हुए। संयम, इन्द्रिय निग्रह, सहिष्णुता का पालन पूर्ण दृढ़ता और संकल्प के साथ करते थे तथा अपनी रूहानी निस्बत की रक्षा करने में बेजोड़ व अद्वितीय थे। अपनी आध्यात्मिक दशाओं तथा स्थितियों को गुप्त रखना अपने लिये विशेष रूप से अनिवार्य समझते थे और इसीलिये लोगों को कुरआन शरीफ पढ़ाया करते थे, जिससे कि लोगों को उनकी आध्यात्मिक स्थिति की जानकारी न हो। कहा जाता है कि एक बार वहाँ किसी तुर्की शैख (सतगुरु) का आगमन हुआ। उस शैख ने लोगों से कहा कि यहाँ किसी मर्द (संत, सतगुरू) की बू (सुगन्ध)

आती है। और मौलाना दरवेश मुहम्मद (रहम०) की तरफ इशारा किया। आपके सुपुत्र हजरत ख्वाजा इमकिनकी (रहम०) फरमाया करते थे कि मेरे पूज्य पिताजी का आध्यात्मिक क्षेत्र में यश फैलने का विशेष कारण यह हुआ कि एक दरवेश ने मेरे पिताजी के सामने शैख नूरुद्दीन ख्वानी (रहम०) के हालात (आध्यात्मिक दशाओं) का वर्णन करते हुये फरमाया कि वह बहुत बड़े बुजुर्ग हैं। अगर इस तरफ उनके आने का इत्तफाक (संयोग) हो तो उनसे जरूर मिलियेगा। इस बात को कहे हुये अभी थोड़ा ही समय व्यतीत हुआ था कि शैख नूरूद्दीन ख्वानी (कु० सि०) का उस स्थान पर आगमन हुआ। मेरे पिताजी ने जब उनके आने की खबर सुनी, तो जैसे मैले कुचैले कपड़े पहिने हुये थे वही पहिने हुये कुछ हदिया (भेंट स्वरूप कोई वस्तु) लेकर शैख की खिदमत में रवाना हुये। जब उन शैख के पास पहुँचे मेरे पिता जी से वे बड़े ही प्रेम से गले मिले और बड़ी देर तक दोनों मराकबा (ध्यान) में बैठे रहे। जब मेरे पिता जी उनसे बिदा होकर चलने लगे तो उन शैख ने कुछ कदम उनके साथ चलकर उनको आदर के साथ बिदा किया। मेरे पिताजी के चले आने के बाद उन शैख ने वहाँ उपस्थित लोगों से दरियाफ्त किया कि उस स्थान के ईश्वर भक्त और जिज्ञासु उनकी (हजरत मौलाना दरवेश मुहम्मद कु० सि० की) खिदमत में हाजिर होते होंगे। लोगों ने कहा कि यह शैख नहीं हैं बल्कि कुरआन शरीफ पढ़ाया करते हैं। शैख नूरूद्दीन (रहम०) ने फरमाया कि 'सुबहान अल्लाह ! यहाँ के लोग भी अजीब अन्धे और और मुर्दा हैं कि ऐसे कामिल शैख (पूर्ण समर्थ सतगुरु) से लाभान्वित नहीं होते और न उनसे रूहानी फैज़ हासिल करते हैं।' अतः शैख नूरुद्दीन (कु० सि०) की यह बात तमाम लोगों में फैल गई और लोगों ने इनके पास आना जाना शुरू कर दिया और उनसे रूहानियत की तालीम हासिल करके खूब ही फैज़याब (लाभान्वित) होने लगे। लेकिन

मेरे पूज्य पिताजी को एकान्तवास तथा गुप्त रहना बहुत पसन्द था, अतः लोगों को उनकी ओर आकर्षित होने से उनका दिल तंग (परेशान) रहता था।

कहा जाता है कि शैख ख्वारजी करुई (कु० सि०) की यह आदत थी कि जिस जगह जाया करते थे वहाँ जिन सन्तों और सतगुरुजनों से मुलाकात हुआ करती थी उनकी रूहानी निस्बत सल्ब कर लिया करते थे (छीन लेते थे, जज्ब कर लेते थे)। जब मौलाना दरवेश मुहम्मद (कु० सि०) की दियार (जगह, स्थान) में पहुँचे तो वहाँ से सब मशायख (सतगुरुजन) उनकी मुलाकात को आये। हज़रत मौलाना दरवेश मुहम्मद (रहम०) ने फरमाया कि हमको भी उनकी मुलाकात के वास्ते जाना चाहिये और बातिन (हृदय) से उनकी रूहानी निस्बत सल्ब कर ली। शैख ख्वारजी ने अपने को खाली पाया। बहुत ही परेशान और दुखी हुये। जब हज़रत मौलाना उनकी मुलाकात को सवार हुये तो शैख को अपनी निस्बत की बू (सुगन्ध) आई और आप ऊँट पर सवार होकर उस खुशबू के पते से आगे बढ़ते चले जाते थे और जैसे-जैसे आगे जाते थे और मौलाना दरवेश मुहम्मद (कु० सि०) से नजदीक होते जाते थे वह खुशबू ज्यादा होती जाती थी, यहाँ तक कि जब मौलाना से मुलाकात हुई और वह खुशबू मुन्कता (खण्डित) हो गई, शैख समझ गये कि मौलाना ने निस्बत सल्ब कर ली है। अत्यन्त दीनता और विनम्रता के साथ उन्होंने मौलाना दरवेश मुहम्मद (कु० सि०) से निवेदन किया कि मुझे नहीं मालूम था कि यह विलायत (क्षेत्र) आपसे सम्बन्धित है। मैं अभी लौटा जाता हूँ। हजरत मौलाना (कु० सि०) को शैख की विनम्रता और दीनता पर बहुत दया आई और उनकी निस्बत उनको वापस कर दी। शैख अपनी निस्बत पुनः वापस पाकर उसी समय उस जगह से उसी सवारी पर अपने घर के लिये चल दिये।

हज़रत मौलाना दरवेश मुहम्मद (कु० सि०) का शरीरान्त नौ मुहर्रमुलहराम ९७० हिजरी को हुआ। आपकी कब्र मुबारक शहर सब्ज़ मावराउल नहर के निकट मौज़ा इस्करा में है।

●

हज़रत मौलाना ख्वाजगी इमकिनकी (कु० सि०)

हज़रत मौलाना ख्वाजगी इमकिनकी (कु० सि०) को अपने पूज्य पिताजी हज़रत दरवेश मुहम्मद (कु० सि०) से रूहानी निस्बत प्राप्त हुई और उन्हीं की तर्बियत (आध्यात्मिक शिक्षा) से पूर्ण समर्थ सन्त व सतगुरु की पदवी पर पहुँचे। तीस साल तक अपने पूज्य पिताजी की गुरु-पदवी पर सुशोभित रहे और अपने पास आने वाले जिज्ञासुओं और साधकों को बराबर आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान करते रहे। यद्यपि आप बहुत ही वृद्ध हो गये थे और आपके हाथ काँपते थे लेकिन मेहमानों के लिये स्वयं खाना लाते थे और प्रायः मेहमानों के नौकरों और सवारियों की स्वयं देखभाल किया करते थे और नक्शबन्दिया सिलसिले की साधना पद्धति का विशेष ध्यान रखते थे। इस सिलसिले की साधना में नाम जप तथा आन्तरिक अभ्यास के जो नये ढंग प्रचलित हो गये थे उनसे परहेज़ करते थे। आपके अध्यात्मिक चमत्कार व हृदय का प्रकाश सूर्य के प्रकाश से अधिक रौशन (प्रकाशित) और प्रसिद्ध थे और आप अपने समय में जिज्ञासुओं और साधकों के आकर्षण केन्द्र थे। आपके सत्संग में बड़े-बड़े विद्वान, साधक व सन्त महात्मा आपकी आध्यात्मिक शिक्षा से लाभान्वित होने के लिये उपस्थित हुआ करते थे। यहाँ तक कि बादशाह भी आपके चौखट की मिट्टी को सुर्मा बनाते थे (अपनी आँखों में लगाते थे)।

कहा जाता है कि तूरान के बादशाह ने स्वप्न में देखा कि एक बहुत ही विशाल दरबार सुशोभित है और वहाँ रसूल अल्लाह हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) विराजमान हैं। वहाँ प्रवेश द्वार पर एक बुजुर्ग हाथ में डंडा लिये हुए खड़े हैं और वहाँ द्वार पर एकत्रित लोगों की मनोकामनाएँ, तथा समस्याएँ हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से अर्ज करते हैं और उनसे हर एक का जवाब लाते हैं। जनाब पैगम्बर (सल्ल०) ने एक तलवार इन बुजुर्ग के हाथ अब्दुल्ला खाँ को भेजी और उन्होंने आकर उसकी कमर में बाँध दी। जब अब्दुल्ला जगे तो उन बुजुर्ग की हुलिया (शक्ल सूरत) लोगों से बतलाकर उनका पता पूँछा। किसी ने उनसे निवेदन किया इस शक्ल सूरत के हज़रत मौलाना ख्वाजगी इमकिनकी कु० सि० हैं। अतः वह बड़े ही उत्साह के साथ भेंट स्वरूप कुछ वस्तुएँ लेकर उनकी सेवा में उपस्थित हुआ, और आपका हुलिया जैसा ख्वाब में देखा था पाकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ और बड़ी विनम्रता के साथ उनसे उस तुच्छ भेंट को स्वीकार करने के लिये निवेदन किया, मगर आपने उसे स्वीकार न किया और फरमाया कि फकीरी (साधुता) की मिठास नामुरादी (अपनी कोई इच्छा न रहना) और कनाअत में (जो कुछ ईश्वर का दिया हुआ अपने पास है उसी में सन्तोष करने में) है। बादशाह ने बड़ी विनम्रता के साथ कुरआन शरीफ की इस आयत की तरफ इशारा किया 'अतीउल्लाहा व अतीउर्रसूल व उलिल अमरे मिनकुम' (अल्लाह की फरमाबरदारी (आज्ञापालन) करो और रसूल की फरमाबरदारी करो और जो तुम में हाकिम हैं उनकी फरमाबरदारी करो)। तब विवश होकर आपने वह भेंट स्वीकार की। उसके बाद बादशाह प्रतिदिन प्रातःकाल उनकी सेवा में उपस्थित हुआ करता था।

कहा जाता है कि किसी जगह का बादशाह मीर मुहम्मद खाँ ने समरकन्द पर विजय प्राप्त करने के लिये वहाँ के बादशाह बाकी

मुहम्मद खाँ पर पचास हज़ार सवार लेकर आक्रमण कर दिया। बादशाह बाकी मुहम्मद खाँ अपने में उस आक्रमण का सामना करने की सामर्थ्य न पाकर हज़रत ख्वाजगी इमकिनकी (कु० सि०) की खिदमत में हाजिर हुआ और उनसे उस युद्ध में सफलता के लिये दुआ करने एवं उसे साहस प्रदान करने के लिये विनम्र निवेदन किया। हज़रत ख्वाजगी स्वयं मीर मुहम्मद खाँ के पास तशरीफ ले गये और उसको समझाया कि तुम वापस हो जाओ। मुसलमानों को आपस में लड़ना अच्छा नहीं। मगर वह उनकी बात को नहीं माना और हज़रत ख्वाजगी (रहम०) उससे अत्यन्त रुष्ट होकर वहाँ से वापस आये। आपने बाकी मुहम्मद खाँ से कहा कि तुम अपने फौज की कमी की चिंता न करो और दुश्मन से मुकाबला करो। इन्शा अल्लाह (ईश्वर इच्छा से) तुम्हारी विजय होगी। अतः बाकी मुहम्मद खाँ हज़रत ख्वाजगी (कु० सि०) के आदेशानुसार युद्ध के लिये रवाना हुआ और मौलाना ख्वाजगी (कु० सि०) अपने मुरीदों के साथ उसके पीछे रवाना हुए और एक पुरानी मस्जिद में काबा शरीफ की तरफ उन्मुख होकर मराकबा (ध्यान) में बैठ गये और बार-बार सर उठाकर दरियाफ्त करते कि क्या खबर है ? यहाँ तक कि किसी ने आकर बतलाया कि बाकी मुहम्मद खाँ की विजय हो गई। तब आप वहाँ से उठकर घर तशरीफ लाये।

कहा जाता है कि एक दरवेश ने बतलाया कि एक रात मैं हज़रत ख्वाजगी (रहम०) के साथ नंगे पैर जा रहा था। यकायक मेरे पैर में काँटा लग गया। आपने फरमाया कि जबतक काँटा नहीं लगता फूल हाथ में नहीं आता।

कहा जाता है कि एक बार तीन विद्यार्थी आपके दर्शनों के लिये रवाना हुये और हर एक ने अपने-अपने दिल में अलग-अलग नियत की (विचार किया) कि अगर हज़रत ख्वाजगी ने मुझे फलाँ (अमुक) भोजन कराया तब मैं उनको ऋद्धि-सिद्धि से परि-

पूर्ण महात्मा समझूँगा। दूसरे ने कहा कि अगर मुझको वह फलाँ मेवा खाने को देंगे तो मैं इन्हें वली (महात्मा) समझूँगा। तीसरे ने कहा कि अगर फलाँ खूबसूरत लड़का मेरे पास आ जाये तब मैं उन्हें आध्यात्मिक चमत्कार से युक्त महात्मा समझूँगा। जब वह तीनों विद्यार्थी आपकी सेवा में उपस्थित हुये, आपने पहिले दो विद्यार्थियों की मनोकामना पूर्ण कर दी और तीसरे से कहा कि दरवेशों से जो हालत व करामात (चमत्कार) प्रकट होते हैं वह शरीअत (धर्मशास्त्र द्वारा निर्धारित नियमों) के अनुसार होते हैं। उनसे कोई व्यवहार व आचरण शरीअत के विरुद्ध नहीं प्रकट होता। फिर तीनों की ओर मुख़ातिब होकर फरमाया कि दरवेशों के पास दुनियावी उचित कार्यों के लिये भी न जाना चाहिये क्योंकि इनके अन्तःकरण की दशा ऐसी होती है कि प्रायः वह इस प्रकार के दुनियावी कार्यों की ओर ध्यान नहीं देते। ऐसी हालत में उनके पास आने वालों को नुकसान ही होता है। और ऐसे लोग उनके रूहानी फैज़ से वंचित रह जाते हैं। दरवेशों के पास खालिस अल्लाह के वास्ते (मात्र ईश्वर के लिये) आना चाहिये जिससे कि उनके बातिन से हिस्सा मिले।

आपने शरीरान्त के थोड़े समय पहिले अपने खलीफा हज़रत ख्वाजा बाक़ी बिल्लाह (कु० सि०) को एक खत लिखा था। उसके अन्त में ये दो शेर लिखे थे—

ज़माँ ता ज़माँ मर्ग याद आयदम,
नदानम कनूँ ताचे पेश आयदम।
जुदाई मुबादा मरा अज़ खुदाए,
दिगर हर्चे पेश आयदम शायदम।

(हर वक्त मुझे मौत याद आती है। अब तक मुझे यह विश्वास नहीं कि क्या मेरे सामने आनेवाला है। खुदा से मेरी रीदू न हो

जाये और जो कुछ मेरे सामने आये उसका मैं मुस्तहक़ हूँ (उसी के लायक मैं हूँ)।

उक्त पत्र लिखने के कुछ ही दिनों पश्चात आपका शरीरान्त हो गया। 'इन्नालिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन' (सब कुछ अल्लाह के लिये है और सब उसी की तरफ लौट जायेंगे)।

आपका शुभ जन्म नौ सौ अठारह हिजरी में हुआ था और आपका शरीरान्त एक हजार आठ हिजरी में हुआ।

•

हज़रत ख्वाजा बाक़ी बिल्लाह (कु० सि०)

हज़रत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (कु० सि०) को हज़रत ख्वाजगी इमकिनकी (रहम०) से रूहानी निस्बत हासिल हुई थी। आपका शुभ जन्म काबुल में ९७१ हिजरी में हुआ था। बचपन में ही आपके चेहरे से एक तपस्वी एवं इन्द्रिय निग्रही महात्मा के लक्षण प्रकट होते थे। आप अधिकतर एकान्त स्थान में बैठे रहा करते थे। आपने उस समय के उत्कट विद्वान मौलाना मुहम्मद सादिक हवाई (रहम०) से सांसारिक विद्या ग्रहण की और थोड़े ही समय में आप अपनी तीव्र बुद्धि के फलस्वरूप अपने दूसरे सहपाठियों से बहुत आगे बढ़ गये। अभी आपने सांसारिक विद्या पूर्ण रूप से समाप्त नहीं की थी कि इसी बीच आपने ईश्वर-भक्ति के मार्ग में कदम रक्खा और मावराउल नहर के बहुत से सतगुरुजनों की सेवा में उपस्थित हुये, परन्तु कहीं भी उनको साधना में स्थिरता नहीं प्राप्त हुई। एक रोज सूफी सन्तमत की एक पुस्तक पढ़ रहे थे कि उसी समय एक तजल्ली का ज़हूर हुआ (उनमें एक प्रकार का

आत्मिक प्रकाश प्रकट हुआ) और वह बेचैन हो गये और उस समय हज़रत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) की पवित्र आत्मा ने उनके अन्तःकरण में नाम-जप का अभ्यास करने की तौफीक़ (सामर्थ्य, क्षमता) उत्पन्न की और ईश्वर-प्रेम के ज़ज्बात से उनके हृदय को भर दिया। इसी दशा में हज़रत बाकी बिल्लाह (रहम०) किसी कामिल शैख (पूर्ण समर्थ सतगुरु) की तलाश में इतने परेशान रहते थे और इस तलाश में इतना परिश्रम व प्रयत्न करते थे, जो मनुष्य की शक्ति के बाहर है। अतः उनकी यह दशा देखकर उनकी पूज्य माता जी का हृदय करुणा से भर गया और उन्होंने ईश्वर से यह आर्द्र आराधना की कि 'या अल्लाह ! तू मेरे बेटे का उद्देश्य पूरा कर या मुझको मौत दे क्योंकि मुझमें इसकी बेचैनी की दशा देखने की शक्ति नहीं।'

हज़रत बाकी बिल्लाह (रहम०) फरमाया करते थे कि मुझे ईश्वर-भक्ति के मार्ग में जो सफलता प्राप्त हुई वह मेरी पूज्य माता जी की दिली दुआ से हुई। आपने सतगुरु की तलाश में तमाम मावराउल नहर, बल्ख़, बदख्साँ, लाहौर, काश्मीर वगैरह छान डाला और बड़े-बड़े मशायख (सतगुरुजनों) की सोहबत से फैज़याब हुए।

कहा जाता है कि जिस जमाने में आप लाहौर में थे वहाँ एक मज़ज़ब (अवधूत) रहता था। आप उसके पास जाया करते थे। वह कभी आपको गालियाँ देता और कभी पत्थर मारता और कभी आपसे भागता था। मगर आपने उसका पीछा न छोड़ा। आखिर-कार एक दिन उसको इनकी दशा पर दया आ गई और अपने पास बुलाकर उनके उद्देश्य की प्राप्ति के लिये ईश्वर से हार्दिक प्रार्थना की। हज़रत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) फरमाया करते थे कि यद्यपि मैंने पुराने जिज्ञासुओं और साधकों की तरह इन्द्रिय निग्रह और तपस्या नहीं की लेकिन सतगुरु की खोज एवं उनके

मिलन की प्रतीक्षा में बड़ी व्याकुलता और बेचैनी का समय व्यतीत किया है। अन्ततोगत्वा हज़रत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) सतगुरु की तलाश में मौलाना शेरगानी के पास पहुँचे और वहाँ से समरकन्द को आये। रास्ते में आपने हिन्दुस्तान के अपने कुछ मित्रों को एक खत लिखा, जिसमें यह शेर अंकित था—

मन अज़ मुहीत मुहब्बत निशाँ हमी दीदम,
कि उस्तख्वाने अज़ीज़ाँ बसाहिल उफ्ता दास्त।

[मैं मुहब्बत की दरिया (नदी) से यह निशानियाँ देख रहा था कि अज़ीज़ों अर्थात् मुहब्बत करने वालों की हड्डियाँ उसके किनारे पड़ी हुई हैं]

इसी यात्रा में आपको आत्मिक प्रेरणा से यह ज्ञात हुआ कि हजरत ख्वाजा अहरार (रहम०) फरमाते हैं कि मौलाना ख्वाजगी इमकिनकी के पास जाओ और हजरत मौलाना इमकिनकी (रहम०) को स्वप्न में देखा कि फरमाते हैं कि 'ऐ फरजन्द ! मेरी आँखें तेरी तरफ लगी हुई हैं। यह देखकर हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) बहुत खुश हुये और यह शेर जबान से निकल पड़ा :—

मी गुज़श्तम जे ग़म आलूदा कि नाला ज़मगीं,
आलमे आशोब निगाहे सरेराहम बगिरफ्त।

(मैं दुःख से निश्चित होकर जारहा था कि दुनियाँ में हल-चल (क्रान्ति) पैदा करने वाली एक दृष्टि ने मार्ग में मुझे अपनी ओर आकृष्ट कर लिया)।

हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) मौलाना ख्वाजगी इमकिनकी (रहम०) की खिदमत में पहुँचे और वहाँ तीन दिन रात एकान्त में उनसे सत्संग किया और अपने तमाम बातिनी हालात उनको सुनाए। हजरत मौलाना इमकिनकी (कु० सि०) ने हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) से फरमाया कि ईश्वर की असीम

कृपा से आध्यात्मिक शिक्षा तथा इस सिलसिले के सतगुरुजनों की साधना पद्धति का अभ्यास तुमको पूर्ण रूप से प्राप्त हो गया। अब तुम हिन्दुस्तान जाओ। तुमसे वहाँ यह आध्यात्मिक साधना पद्धति प्रचलित होगी। पहले तो हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) ने अत्यन्त विनम्रता एवं दीनता के साथ अपनी विवशता प्रकट की, परन्तु बाद को हजरत मौलाना इमकिनकी (रहम०) के आदेशानुसार हिन्दुस्तान को रवाना हुए।

जब आप लाहौर पहुँचे एक साल तक वहाँ रुके। वहाँ के सभी विद्वान व सन्त महात्मा आपसे प्रेम करने लगे। इसके बाद देहली के लिये प्रस्थान किया। वहाँ किला फिरोज़ी में रहने लगे और फिर अपने जीवन के अन्तिम समय तक यहाँ से अलग नहीं हुए। आप अपने बातिनी हालात को (आत्मिक स्थितियों तथा दशाओं को) गुप्त रखते थे और चुपचाप एकान्त में अपनी साधना में लीन रहते थे। अपने दुर्गणों को ही देखने की प्रवृत्ति तथा विनीत भावना दोनों ही आपके व्यक्तित्व में पूर्ण रूप से समाहित एवं व्याप्त थीं। अगर कोई व्यक्ति आपकी सेवा में अध्यात्म की शिक्षा ग्रहण करने के लिये उपस्थित होता, तो आप उसे अपनी विवशता प्रकट करते हुए वापस कर देते। हाँ, जब उसकी उत्कंठा और जिज्ञासा में लगन और तीव्रता देखते तो उसे स्वीकार कर लेते।

कहा जाता है कि एक व्यक्ति खुरासानी हजरत ख्वाजा बख्तियार काकी (रहम०) की मज़ार (कब्र) पर रहा करता था और ख्वाजा बख्तियार (कु०सि०) की रूह (आत्मा) से किसी पूर्ण समर्थ सतगुरु से मिलाने के लिये दुआ किया करता था। जब हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) उस शहर में पहुँचे तो हजरत बख्तियार काकी (रहम०) की ओर से उस शख्स को यह आत्मिक प्रेरणा हुई कि एक बुजुर्ग नक्शबन्दिया सिलसिले के इस शहर में आये हुये हैं और तुमको उनकी सेवा में जाना चाहिए। इस

आत्मिक प्रेरणा के अनुसार वह शख्स हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) की सेवा में हाजिर हुआ और उनसे अपना उद्देश्य निवेदन किया। उन्होंने फरमाया कि मैं इस लायक नहीं हूँ और उससे इतनी विवशता, दीनता और विनम्रता प्रकट की कि वह शख्स उनकी बात को मान गया और वापस चला गया। रात में उसने फिर स्वप्न में देखा कि हजरत बख्तियार काकी (कु० सि०) ने फरमाया कि जिसका मैंने तुझसे इशारा किया था वही बुजुर्ग हैं जिनके पास तू गया था। अतः अगले रोज वह फिर उनकी सेवा में उपस्थित हुआ और अपना रात का वाक़या सुनाया। आपने फरमाया कि नहीं वह कोई और होंगे, मैं बिल्कुल ऐसा नहीं हूँ। तुम जाकर दूसरी जगह तलाश करो और कहीं किसी का पता लगे तो मुझको भी आकर बतलाना, मैं भी उनकी खिदमत में हाजिर हूँगा। वह फिर वापस चला गया। रात को हजरत बख्तियार काकी (कु० सि०) ने स्वप्न में पुनः उससे यही फरमाया कि तुम उन्हीं के पास जाओ। तीसरे दिन वह शख्स हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) की खिदमत में हाज़िर हुआ और बड़ी ही व्याकुलता और विनम्र के साथ उनसे अर्ज किया कि मैं अब आपकी चौखट को छोड़कर कहीं दूसरी जगह नहीं जाऊँगा। तब हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) ने उसे अपनी सेवा में स्वीकार किया और उसको विशेष आग्रह के साथ आदेश दिया कि वह किसी से भी यह प्रकट नहीं करेगा कि वह कहाँ जाता है।

इसी प्रकार की एक घटना आपके खलीफा ख्वाजा हिसामुद्दीन अहमद (रहम०) की है। जब आप शुरू में हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) की सेवा में उपस्थित हुए, उन्होंने फरमाया कि मैं इस योग्य नहीं हूँ, किसी और जगह जाकर पीर की तलाश करो और अगर पता लगे तो मुझे भी खबर करना, मैं भी उनकी खिदमत में हाजिर हूँगा। यह बात हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०)

ने ऐसी विनम्रता के साथ कही कि ख्वाजा हिसामुद्दीन अहमद (रहम०) ने उनकी बात पर विश्वास कर लिया और वह पीर की तलाश में आगरा चले गये। वहाँ जाकर बहुत ही हैरान और परेशान थे कि क्या करें। अकस्मात एक गली में से गाने की आवाज आई। कोई यह शेर शैख सादी (रहम०) का पढ़ रहा था—

तू ख्वाही आस्तीं अफ़शाँ व ख्वाही दामन अन्दर कुश
मगस हरगिज न ख्वाहद रफ्त अज़ दुकाने हलवाई

(चाहे तुम अपनी आस्तीन झाड़ो, चाहे दामन को अन्दर खींचो, हलवाई की दूकान से मक्खी हरगिज नहीं जायेंगी)

यह सुनकर आप तत्काल वापस आगये और हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) की खिदमत में हाजिर होकर कुल घटना सुनाई। तब आपने इनको अपनी सेवा में स्वीकार किया। आप जिस किसी को अपनी शरण में लेते, अगर उसमें प्रेम का ज़ज्बा (भावावेश) ज्यादा देखते तो उसको तरीका राबिता की तालीम फरमाते (किसी साधक के हृदय में सतगुरु के प्रेम, सानिध्य तथा उसकी रूहानी निस्बत को दृढ़ करने के लिये जो साधनाएँ सतगुरु द्वारा शिष्य को बताई जाती हैं उन्हें 'तरीका राबिता' कहते हैं। 'राबिता' का शाब्दिक अर्थ है 'लगाव, संपर्क, सम्बन्ध'।) और किसी को ज़िक्र क़ल्बी (हृदय द्वारा जाप) और किसी को 'लाइलाह इल्लिल्लाह' और किसी को 'इस्म जात' (ईश्वर का नाम जप) फरमाते थे। आपकी निस्बत में ज़ज्ब (भावावेश) अत्यधिक था। जिस पर आपकी नज़र पड़ती वह बेइख्तियार (बेबस) और बेताब (बेचैन) हो जाता था।

कहा जाता है कि एक लश्करी (फौजी) हजरत ख्वाजा बाक़ी बिल्लाह (रहम०) से मिलने आया और अपना घोड़ा सईस को

दे आया। हजरत ख्वाजा (रहम०) पवित्र होने के लिये (हाथ, पैर तथा मुंह आदि धोने के लिये) मस्जिद से बाहर तशरीफ ले गये और संयोग से उनकी दृष्टि उस सईस पर पड़ गई। इधर हजरत ख्वाजा (रहम०) मस्जिद में तशरीफ लाये, उधर सईस पर जज्ब (भावावेश) व बेखुदी (अचेतनता) का तेज़ असर हुआ, यहाँ तक कि वह उन्माद व पागलपन की दशा में बाजार की तरफ गया और वहाँ से जंगल को चला गया। फिर यह नहीं मालूम हो सका कि वह कहाँ गया। हजरत ख्वाजा (कु० सि०) की आध्यात्मिक जीवन की ऐसी अनेकों घटनाएँ हैं। आप तालीम हिम्मत व तवज्जोह फरमाते थे, यहाँ तक कि साधक का क़ल्ब (हृदय) मुतजौहर (विशेषताओं से परिपूर्ण) हो जाता था और किसी को आलमे मिसाल (वह जगत जो परलोक के अन्तर्गत है और जिसमें संसार की हर वस्तु ज्यों की त्यों मौजूद है) और किसी को आलमे अर्वाह (आत्माओं के रहने का लोक) मुन्कशिफ (प्रकट, व्यक्त) हो जाता और कुछ लोग आपकी केवल सूरत देखकर मज्जूब (अवधूत) व मग़लूब (प्रभावित) हो जाते थे।

कहा जाता है कि एक बार ख़तीब (धर्मोपदेश करने वाला) मिंबर पर चढ़ा (मस्जिद का वह ऊँचा स्थान जहाँ खड़े होकर धर्मोपदेश दिया जाता है उसे मिंबर कहते हैं)। संयोग से हजरत ख्वाजा (रहम०) की दृष्टि उस खातिब पर पड़ गई। तत्काल वह तड़प कर मिंबर पर से गिर पड़ा।

कहा जाता है कि एक बार आपके खलीफा हजरत मुजद्दिद अलिफसानी (रहम०) ने रमज़ान के महीने में रात के वक्त एक सेवक के द्वारा हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) के पास फालूदा भेजा। वह सादा तबियत तथा भोले भाले स्वभाव का था। वह सीधे मुख्य द्वार तक चला गया। उस समय हजरत ख्वाजा (रहम०) ने अपनी दयालुता के कारण और किसी को

न उठाया और स्वयम ही फालूदा लेने चले गये और उस सेवक से फालूदा लेकर पूछा तेरा क्या नाम है?'। उसने निवेदन किया 'बाबा'। हजरत ख्वाजा (रहम०) ने फरमाया 'हमारे मियाँ मुजद्दिद अलिफसानी का सेवक है तो हमारा ही है। जैसे ही वह वापस हुआ जज्ब (भावावेश) व सुक्र (नशा) उस पर ग़ालिब होना शुरू हुआ और वह चिल्लाता हुआ गिरते पड़ते हजरत मुजद्दिद अलिफसानी (रहहु०) की सेवा में उपस्थित हुआ। हजरत ने घटना पूछी। उसने पूरी घटना बतलाई और कहा कि जमीन, आसमान, दरख्त, पत्थर सब जगह नूर (प्रकाश) बेरंग ऐसा नजर आता है, जिसका बयान नहीं कर सकता। आपने फरमाया कि हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) इस बेचारे के सामने पड़ गये और परतो आफताब (सूर्य का प्रकाश) इस जर्रे (कण) पर पड़ गया।

कहा जाता है कि सभी लोगों पर आपकी दया कृपा इस कदर थी कि एक बार आपके सामने लाहौर में भीषण दुर्भिक्ष (सूखा) पड़ा। जब आपके सामने खाना आता तो आप फरमाते कि यह क्या इन्साफ (न्याय) है कि गली में तो आदमी भूखे मरें और मैं भोजन करूँ और उस भोजन को गरीब जरूरतमन्द लोगों में वितरित करा देते। सफर में अगर किसी को थका हुआ व बूढ़ा देखते, उसको अपनो सवारी पर सवार कर लेते और खुद पैदल हो जाते और जब शहर क़रीब आता, आप फिर सवार हो लेते, जिससे कि उनका वह पुण्य का कार्य लोगों से गुप्त रहे।

कहा जाता है कि एक बार हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) तहज्जुद (आधी रात के बाद) की नमाज के लिये उठे। आपके बिछौने के लिहाफ में बिल्ली बैठ गई। आप सुबह तक सर्दी का कष्ट उठाते रहे, परन्तु बिल्ली को लिहाफ से न उठाया। अगर किसी को धर्मविरुद्ध कोई अनुचित व्यवहार करते हुये देखते तो औरों की तरह विस्तार के साथ तथा सख्ती से उससे उसके अनुचित

व्यवहार के लिये न कहते बल्कि इशारतन (संकेत रूप में) उसको समझा देते।

कहा जाता है कि एक व्यक्ति हजरत रव्वाजा (रहम०) के पड़ोस में रहता था। तरह तरह की शरारतें वह करता रहता था मगर आप सब सहन करते रहते थे। एक बार आपके किसी मुरीद ने यह हाल देखकर उसको कोतवाली में पकड़वा दिया। आप यह सुनकर अपने मुरीद से नाराज हुए। उसने अर्ज किया कि 'हुजूर, वह शख्स बड़ा शैतान व शरारती है।' हजरत रव्वाजा ने यह सुनकर दिल से एक ठंडी साँस खींची और फरमाया कि 'हाँ तुम अपने को नेक व सदाचारी समझते हो, तुमको दूसरे लोग शैतान व शरारती नजर आते हैं। हम क्या करें क्योंकि हमको वह किसी तरह हमसे बुरा नहीं मालूम होता। यह सुनकर उनके मुरीद ने उस शख्स को कैद से रिहा करा दिया।

कहा जाता है कि एक मरतबा हजरत रव्वाजा (रहम०) हजरत रव्वाजा बख्तियार काकी (कु० सि०) के पवित्र मजार (कब्र) के दर्शनों के लिये गये। खादिमों (सेवकों) ने आपके शुभागमन की सूचना पाकर मजार के निकट एक चादर आपके बैठने के वास्ते बिछा दी। संयोग से वहाँ एक क्रोधी स्वभाव का फकीर मौजूद था। उसने वह चादर देखकर दरियाफ्त किया कि यह किसके वास्ते है। खादिमों ने हजरत रव्वाजा (रहम०) का नाम लिया। वह आपका नाम सुनकर आग बबूला हो गया आपकी शान में बहुत सख्त अलफाज़ (शब्द) कहना शुरू किये कि इतने में हजरत रव्वाजा (रहम०) भी तशरीफ लाये। आपकी ओर मुतवज्जह (आकृष्ट) होकर उसने और भी ज्यादा अनुचित शब्द कहना शुरू किये। आपने उससे क्षमा माँगते हुये कहा कि जो कुछ हुआ मेरी गैर जानकारी में और बिला मेरी इज़ाज़त हुआ। तुम नाराज मत हो, तुम जैसा मेरे लिये कहते हो ठीक मैं ऐसा ही हूँ। हजरत के साथियों ने चाहा कि उस

फकीर को चेतावनी दें, मगर आपने उन लोगों को मना कर दिया और उसके करीब जाकर आपने उसका पसीना अपनी बाँह से पोंछा और अत्यन्त विनम्रता से उसको कुछ रुपये दिये और फरमाया मेरी कमबख्ती (दुर्भाग्य) की वजह से तुम अपना दिमाग क्यों खाली करते हो, जाने दो ! हजरत ख्वाजा (रहम०) के साथ जो लोग गये थे वे बतलाते थे कि उस फकीर ने इस कदर बुरा भला हजरत को कहा, लेकिन आपके चेहरे में शिकन तक न पैदा हुई। अगर हजरत ख्वाजा (रहम०) के मुरीद से भूल वश कोई अपराध हो जाता तो आप फरमाया करते कि यह मेरी बदसिफ्ती (दुर्गुणों) का सबब (कारण) है। न यह बातें मुझ में होतीं, न इनमें मुनअकिस (प्रतिबिम्बित) होतीं। अगर कोई शख्स आपके सत्संग में किसी मुसलमान की बुराई बयान करता, आप उसकी तारीफ शुरू कर देते। हमेशा अपने असहाब को नेस्ती (अपने जीवन तथा इस संसार को क्षणभंगुर समझने) तथा दीद कसूर (अपने ही दुर्गुणों को देखने) पर विशेष बल देते।

कहा जाता है कि शेख ताज सम्हली जो हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) के खलीफा थे शुरू में शैख अला बख्श खलीफा मीर सैयद अली कौम जौनपुरी (कु० सि०) से मुरीद हुये थे। एक शख्स दीवाना अबूबक्र भी शेख अलाबख्श (कु० सि०) का मुरीद था। यह अबूबक्र भी सम्हल का रहने वाला था। जब हजरत शैख ताज हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) से खिलाफत (खलीफा होने का अधिकार) प्राप्त करके अपने निवास स्थान सम्हल में आये, वहाँ आपका लोगों पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा और आप साधकों और जिज्ञासुओं को आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान करने के पवित्र कार्य में लग गये। आपका प्रभाव देखकर सम्हल के कुछ लोगों को आपसे ईर्ष्या पैदा हुई और इन लोगों ने आपसे दीवाना अबूबक्र को भिड़वा दिया। आपने दीवाना अबूबक्र को सचेत किया

और समझाया तथा यह सम्पूर्ण घटना हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) को लिखकर भेज दी। हजरत ख्वाजा (रहम०) ने इसके जवाब में निम्नाकित ख़त लिखा :—

'तुमने जो ख़त शैख अबूबक्र के विषय में लिखा हमने उसको पढ़ा। इस तरह की बातें लिखना तजुर्बेकारी (अनुभव) और शफकत (मेहरबानी) के अनुकुल नहीं है। उच्चकोटि के सन्त महात्मा भी बड़े गुनाहों (पापों) से महफूज (सुरक्षित) नहीं रह पाते, तो यह बेचारा (अबूबक्र), जो थोड़े दिनों इस सिलसिले की तालीम पर चला, कैसे गुनाह से महफूज रह सकता है और कैसे उससे विरोध न करने की आशा की जाये। विशेष रूप से यदि वह वास्तव में दीवाना हो तो उससे अच्छे गुणों की आशा न रखनी चाहिये, चाहे वह विलायत (वली, महात्मा) के नूर (प्रकाश) तक पहुँचे जाये। खुदा ही समझ सकता है कि उस अवसर पर अनुचित बातें उसकी बुद्धि में आ गई हों और उचित बात उसकी नजर से पोशीदा (गुप्त) रह गई हो। धर्म शास्त्र के विरूद्ध कोई आपत्तिजनक व्यवहार भी अक्ल (बुद्धि) होने पर ही दण्डनीय समझा जाता है। सारांश यह कि हर एक शख्स को उसके मरतबे को देखकर काबिले मुआफी (क्षमा योग्य) समझना चाहिये और अल्लाह पर नजर रखनी चाहिये।

लोगों के मन की स्थिति भिन्न भिन्न प्रकार की होती हैं। कुछ लोगों का मन बुराई की तरफ ले जाने वाला और कुछ अल्लाह पर भरोसा रखने वाले और कुछ इन दोनों के बीच की स्थिति के होते हैं, जिनका मन बुराई करने पर उनकी मलामत (भर्त्सना) कर देता है। वह लोग भी अगर साहबे अक्ल (बुद्धिमान) हों तो औलिया (महात्मा) की श्रेणी तक पहुँच सकते हैं। बुरे नफ्स (मन) वालों को भी क्षमा योग्य समझना चाहिये बल्कि मेहरबानी की नजर से देखना चाहिये। उनके हर काम में अच्छाई देखने की

आदत डालना चाहिये। सम्हल वालों की तान (व्यंग) व तस्नीफ (मन गढ़ंत बातों) का भी इन्कार नहीं करना चाहिये (आपत्ति नहीं करनी चाहिये), बल्कि रहमत की नजर से उनको देखना चाहिये, क्योंकि यह लोग अक्ल की राहों (बुद्धि के मार्ग) पर चल रहे हैं और नफ्स (मन) की बुरी आदतों को छोड़ चुके हैं। अगर विवशता से कोई गुनाह उनसे हो जाता है और कोई बुरा व्यवहार वह करते हैं, तो उनके तमाम नेक कामों को नजर अन्दाज (दृष्टि से ओझल) क्यों करते हैं। खुदा का शुक्र है कि औलिया (सन्तों) के हिस्से में भी मलामत (भर्त्सना) पड़ी है। हम खुद भी मलामत के जाहिर होने पर दूसरा तरीका अख्तियार करते हैं। जब कभी हमारी कोई बुराई की जाती है तो अपने मन को हम देखते हैं और कोई एक दुर्गुण अपने में पाते हैं और इन आलोचनाओं को गैबी (परोक्ष) नसीहत समझते हैं, क्योंकि अपने इन दुर्गुणों के कारण ही इस दुनिया में हमारी मलामतें (भर्त्सनाएँ, आलोचनाएँ) होती हैं और खुदा से हम दुआ करते हैं कि यह बुराइयाँ हम से दूर हो जायें। कृपाकर यह बतायें कि सम्हलियों की मलामत से क्या नतीजा निकलेगा। क्या इबादत को कुबूल न करेंगे या उनकी तरफ खालिस तवज्जोह करना मौकूफ कर देंगे (रोक देंगे)। उनका मामला खुदा के सामने पेश होगा।

शेर—'ऐ माशूका, तुरा बर सरे आलम खाक वस्सलाम' (ऐ माशूका (प्रेमिका) ! तुझ पर और तमाम दुनिया पर खाक पड़े)।"

स.सारिक धन-दौलत से आपको इतनी निस्पृहता (अनिच्छा) थी कि कभी मस्जिद में संसारिक बातें नहीं होती थीं और न अपने वास्ते, न अपने दर्वेशों (साधकों) के वास्ते दुनिया की चीजें एकत्रित करने का प्रयत्न करते। अपने तथा अपने मुरीदों के लिये सिवा फ़क्र (निर्धनता) व फाका (निराहार रहना) व क़नाअत

(सन्तोष) व जुहद (इन्द्रियनिग्रह) व मस्कनत (विनम्रता) के कुछ न चाहते थे। अगर कोई धनवान उनके दरगाह के फुकरा (साधुओं) के लिये दान स्वरूप कुछ धनराशि देना चाहता तो आप अपने और अपने फुकरा तथा खादिमों के वास्ते उसे स्वीकार न करते और फरमाते कि इनकी जिन्दगी मेरी तरह इन्द्रिय निग्रह, साधना के अभ्यास, ईश्वर पर भरोसा, व सन्तोष के साथ व्यतीत हो। फरमाते थे कि यदि किसी को मुझसे माली (धन-दौलत की) मदद पहुँचे, यह निश्चय समझ लें कि उससे मेरे दीनी मुहब्बत (धार्मिक अथवा आध्यात्मिक प्रेम) में कमी हो जायेगी। हाँ, वह गैर लोगों को माली मदद फरमाया करते थे।

कहा जाता है कि एक बार हज़रत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) का इरादा हज की यात्रा पर जाने का हुआ। खानखाँ ने एक लाख रुपया बतौर राह खर्च व सवारी के लिये आपकी सेवा में भेजे। आपने वापस कर दिये और फरमाया कि इस बात को हृदय स्वीकार नहीं करता कि इतना धन किसी का अपने खर्च में प्रयोग करूँ। खाने व कपड़े का कुछ इल्तज़ाम (अनिवार्यता) आपके स्वभाव में न था। अगर कितने ही दिनों तक इच्छा विरुद्ध भोजन मिलता, आप कभी न कहते कि इसको बदल दो या अमुक भोजन पकाओ। अगर कपड़े मैले हो जाते तो यह न फरमाते कि और हाज़िर करो। आपका मकान बहुत ही संकीर्ण और जीर्ण-शीर्ण था लेकिन उसकी सफाई और मरम्मत की ओर कुछ ध्यान न दिया। यद्यपि आप अत्यन्त कमज़ोर और वृद्ध हो गये थे मगर नाम जप और ईश अराधना में अत्यन्त रुचि के साथ सदैव तल्लीन रहते थे। इशा (रात की) नमाज़ के बाद हुजरा (कोठरी) में तशरीफ़ ले जाते और मराक़बा (ध्यान) करते। जब कमज़ोरी मालूम होती उठकर वुज़ू करते (नमाज़ के लिये हाथ, पैर व मुँह आदि धोते) और दो रकअत नमाज़ पढ़कर फिर मराक़िब हो जाते

और इसी तरह पूरी रात व्यतीत कर देते। लुक़मे (भोजन) में इतनी अधिक सावधानी बरतते थे कि अपनी धर्मपत्नी से कर्ज लेकर अपने और अपने दरवेशों के लिये भोजन पकवाते और फतूह में से कर्ज अदा करते। (ईश्वर की ओर से भक्तों को जो लौकिक एवं पारलौकिक उपलब्धियाँ प्राप्त होती हैं उन्हें फतूह कहते हैं)। आपका इस बात के लिये विशेष निर्देश था कि भोजन करते समय मनुष्य को पवित्र रहना चाहिये और भोजन पकाते समय एकाग्रता के साथ ईश्वर की याद में रहना चाहिये। फरमाते थे कि जो खाना बिला एहतियात अर्थात् बिना ईश्वर के ध्यान में पकता है उसके खाने से एक धुवाँ उठता है जो मजारी फैज़ (ईश्वर कृपा के उतरने का मार्ग) बन्द कर देता है और अर्वाह तईयबा (पवित्र आत्माएँ) जो ईश्वर-कृपा के उतरने के साधन हैं ऐसे भोजन करने वाले के क़ल्ब (हृदय) के समक्ष नहीं आतीं। हज़रत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) की पूज्य माताजी जो कानितात व आरिफात से थीं (नमाज़ में दुआ माँगने वालों तथा ब्रह्म ज्ञानियों में से थीं) इन्हीं सावधानियों के कारण घर में नौकरानियाँ होते हुये भी स्वयं तन्दूर में रोटियाँ लगाया करती थीं और मुरीदों को भी इस प्रकार की सावधानी बरतने के लिये विशेष आग्रह था। अगर कोई इस विषय में असावधानी बरतता, तो इसका प्रतिकूल-प्रभाव उसे तुरन्त मालूम हो जाता। अतः कहा जाता है कि एक दरवेश ने अपनी साधना में पस्तगी (कमी) पाई। उसने हज़रत ख्वाजा (रहम०) की खिदमत में हाज़िर होकर अपनी हालत बयान की। आपने फरमाया कि भोजन में कुछ असावधानी हुई है। उसने अर्ज किया कि भोजन तो वही है। फरमाया कि खूब सोचो। आखिर-कार मालूम हुआ कि ईंधन में कुछ असावधानी हो गई थी।

आप पूरी एकाग्रता एवं दृढ़ संकल्प के साथ साधना एवं ईश-आराधना में लगे रहते थे। आप संगीत व जिक्र जहर (वाणी से

आवाज के साथ जप करना) अपने सत्संग में पसन्द नहीं करते थे। एक बार आपकी मजलिस में एक दरवेव ने आवाज के साथ 'अल्लाह' कहा। आपने फरमाया कि इससे कह दो कि अगर हमारी मजलिस में आये तो मजलिस के अदब (शिष्टाचार) का ध्यान रक्खे। एक बार हदीस की किताबों में देखकर फातिहा (कुरान शरीफ की पहली सूरा) खल्फ इमाम शाफई (रहम०) के मज़हब के अनुसार पढ़ना शुरू कर दिया। हजरत इमाम शाफई (रहम०) को ख्वाब में देखा कि अपनी तारीफ में कसीदा पढ़ते हैं और इससे यह समझ में आया कि आपका यह मतलब है कि मेरे मजहब पर हजारों औलिया (सन्त महात्मा) गुजरे हैं। इसके बाद आपने उक्त फातिहा पढ़ना बन्द कर दिया। इद्यपि आप ऐसे उक्चकोटि के पूर्ण समर्थ सन्त थे, फिर भी आप अपनी नायफ्त ही की शिकायत करते थे। (अपने बारे में यही कहते थे कि मैंने ब्रह्मज्ञान के क्षेत्र में कुछ भी नहीं प्राप्त किया। अतः यह रुबाई (फारसी में) आप को है :—

दर राहे खुदा जुमला अदब बायद बूद
जाजाँ बाक़ीस्त दर तलद दायद बूद
दर दरिया अगर बकामत रेज़न्द
गुम बायद कर्द व खुश्क लब बायद

अनुवाद—'खुदा के रास्ते में पूर्ण रूप से अदब (शिष्टाचार) के साथ रहना चाहिये। जब तक जीवन शेष है ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने की खोज में लगे रहना चाहिये। नदी में अगर तुम्हारे हलक (तालू) में पानी डालें, तो ऐसा अनुभव करना चाहिये कि पानी नहीं पिया गया, और प्यासा बना रहना चाहिये। इस पंक्ति का भावार्थ यह है कि ब्रह्मज्ञान रूपी नदी में साधक को चाहे जितना ही आत्मज्ञान रूपी जल पीने को मिले, उसे सदैव प्यासा ही बना रहना चाहिये अर्थात् उसे यही अनुभव करते रहना चाहिये कि मुझे अभी कुछ भी

ब्रह्मज्ञान नहीं प्राप्त हुआ और उसे प्राप्त करने की पिपासा बनी रहनी चाहिये)।

कहा जाता है कि एक व्यक्ति ने आपके मुरीद को खत लिखा था। उस खत की पीठ पर यह इबारत आपने अपने कलम से लिखी:—

'अफसोस कि इस आजिज़ (असहाय) को काम करने की ताकत नहीं रही वरना खुदा की तौफीक़ (सामर्थ्य) से इस दो दिन की जिन्दगी में दीवानों की तरह अपनी आज़ज़ी का मातम (शोक गीत) पढ़ता और कीमियाए मारफत (अध्यात्म रूपी रसायन) की तालाश में दौड़ धूप करता और अपनी जिन्दगी को इस काम पर निछावर कर देता। खुदा इस आज़ज़ी में ताकत और कुव्वत (सामर्थ्य) प्रदान करे, जिससे कि अपने दोनों जहान (लोक और परलोक) के काम उसके अख्तियार (अधिकार) में देकर तमाम परेशानियों से नजात (मुक्ति) पाजाऊँ।

फरमाया कि हजरत ख्वाजगी (रहम०) जो आपके पीर मुर्शिद (सतगुरु देव) थे, इनका निम्नलिखित शेर ध्यान देने योग्य है :—

मदहो ज़मत गर तफ़ाउत मी कुनद
बनगरी वाशी कि अदबत मी कुनद।

(अगर तुमको अपनी प्रशंसा और निन्दा में अन्तर मालूम हो अर्थात अपनी प्रशंसा सुनने में प्रसन्नता हो और निन्दा सुनकर बुरा मालूम हो और दोनों दशाओं में मनः स्थिति एक सी न रहे तो तुम प्रतीक्षा करो कि तुमको कोई अदब (शिष्टाचार) सिखायेगा।)

फरमाया कि 'याद कर्द' के माने जबान से याद करना। 'बाजगश्त' के माने यह कहना कि 'इलाही ! मकसूद (उद्देश्य) मेरा तू है। 'याददाश्त' इस्तेला हुजूर बग़लबा जाती फरमाया (साधक के हृदय में उस परमात्मा की सर्व व्यापकता एवं उपस्थिति की अनुभूति में बाहुल्यता एवं प्रचुरता उत्पन्न होना 'याद दाश्त'

कहलाता है)। तौबा के माने गुनाह से निकलके के हैं और जो हिजाब (अज्ञानता का पर्दा अथवा आवरण) है वह गुताह है। पस कमाल तौबा मुराद (आशय) कन्दन (खोदने) से है और इसके लिये पैवस्तन (अन्दर घुसना) लाज़िम (आवश्यक) है। फरमाया जुहद के माने रग़बत (इच्छा, चाह) से निकलना है। चूँकि 'रग़बत' मुक़य्यद बमताअ दुनियावी है (सांसारिक धन दौलत की इक्छा में कैद होना है), पस कमाल जुहद नामुरादी है (सांसारिक इच्छाओं से विरक्त हो जाना है)।

मिश्रा :—'चू पैवन्द हा बग़सली वासली'

(जब दुनिया से सम्बन्ध (आसक्ति) तोड़ दोगे तो ईश्वर से मिलन हो जायेगा)।

फरमाया तवक्कुल 'रिआयत असबाब से बाहर आने को कहते हैं' (सांसारिक साधनों का भरोसा हटाकर सारे काम ईश्वर की मर्जी पर छोड़ देने को कहते हैं)। और कमाल तवक्कुल यह है कि वुजूद असबाब (सभी साधनों का भोक्ता इस शरीर) से जो फरअ शुहूद हक़ मुतलक़ है (जो उस परम ब्रह्म के प्रकटीकरण का एक अंश है) उससे बाहर आये (उस पर भी भरोसा न करे)। फरमाया क़नाअत (भाग्यानुसार जो कुछ मिल जाये उस पर सन्तोष करना) तर्क फिजूल व इक्तफा (फिजूल खर्ची को त्यागकर केवल अपनी आवश्यकताओं के अनुसार खर्च करना) और उम्दा खाने, उम्दा लिबास (वेश भूषा) और उम्दा मसकन (निवास स्थान) से परहेज करने को कहते हैं। कमाल क़नाअत यह है कि केवल हस्ती और मुहब्बत हक़ तआला पर इक्तफा व आराम करे (उस परमात्मा के प्रेम एवं अस्तित्व को ही अपने लिये पर्याप्त समझे और उसी में आनन्द एवं विश्राम का अनुभव करे)। फरमाया उज्लत (एकान्त वास) मुखालतत खल्क (संसार की घनिष्ठता) से बाहर आने को कहते हैं और कमाल उज्लत यह है कि रूय्यत

ख़ल्क (सांसारिक चिंताओं तथा विचारों) से बाहर आये। फरमाया 'ज़िक्र' मासिवा अल्लाह तआला के जिक्र (ईश्वर के अतिरिक्त और किसी के जिक्र) से बाहर आने को कहते हैं और कमाल जिक्र यह है कि खुद (स्वयम्) जिक्र से बाहर आ जाये व जुहूर सिर्र हो (उस परमात्मा के परम रहस्य को प्रकट करने वाला हो)। 'वज्जाकिर वल मज्कूर' (जो जिक्र करने वाला है वह वही है जिसका जिक्र किया जा रहा है)। फरमाया तवज्जोह जमीअ (एकाग्र ध्यान) वदाई (विचारों के इधर उधर विचलित होने) से बाहर आना व बताम मुतवज्जह हक सुबहाना की तरफ (पूर्ण रूप से ईश्वर की ओर ध्यान आकृष्ट) होने को कहते हैं। फरमाया 'सब्र' (धैर्य) हज्ज (मज़ा, आनन्द), नफ्स (मन) व मालूफात व महबूबात से (जो लोग अथवा चीजे हमें प्यारी हों उनसे) बाहर आने का नाम है। फरमाया मराक़बा (ध्यान) अपने अफआल व तवानाई (अपने सत्कर्मों व सामर्थ्य के अहंकार) से बाहर आने व मवाहिब इलाही (ईश्वर की दया कृपाओं) के मुन्तज़िर (आकांक्षी) रहने को कहते हैं। रज़ाए नफ्स (मन की प्रसन्नता) से बाहर आना और रज़ाए इलाही (ईश्वर की प्रसन्नता) में दाखिल होना और तस्लीम एहकाम अज़लिया (ईश्वर के आदेशों के पालन करने) को 'तफ़वीज़ इलल्लाह' (ईश्वर के प्रति सम्पर्ण) कहते हैं।

फरमाया जो शख्स मुकाम मासियत (गुनाह की स्थिति) में है या उसके दिल में दुनिया की रग़बत (इच्छा) है वा सबब में है (वह संसार की माया अर्थात धन दौलत एकत्रित करने का हेतु या कारण बना हुआ है), मास जरूरी (आवश्यक जीविका) पर इत्तिफा (सन्तोष) नहीं करता, ख़ल्क से मुख़ालिफत रखता है (लोगों से विरोध रखता है), या उसकी औकात (उसका समय) जिक्र-फिक्र से मामूर नहीं है (ईश्वर के नाम जप तथा ईश्वर के

चिंतन मनन में नहीं लगा है) या खुदा से सिवा खुदा के कुछ और चाहता है या मुजाहिदा नफ्स (इन्द्रिय निग्रह) नहीं करता या अपने अफआल (सत्कर्मों) पर या अपने हाल (आध्यात्मिक दशा अथवा प्रगति) पर व कूवत (सामर्थ्य) पर नज़र रखता है (अपनी इन स्थितियों पर दृष्टि अर्थात् अहंकार रखता है) या तस्लीम अहकाम अज़लिये नहीं करता (ईश्वर की आज्ञाओं का पालन नहीं करता) वह निश्चित रूप से सुलूक (साधना पथ) में नाक़िस (खराब, खोटा) है। फरमाया मगर ज्ञात रहे कि बाज़ अहले निहायत ने (कुछ पूर्ण समर्थ सन्तों ने) जो अपने से (अपनी खुदी से) और अपनी ख्वाहिसात (अभिलाषाओं) से बाहर आ गये हैं) कुछ कारणों से इक्तिफ़ा (मितव्ययिता बरतना) व अदम इख्तिलात (लोगों से मेल-मिलाप न करना अर्थात् एकान्तवास रखना) तथा मुजाहदः (तपस्या) का अनुकरण नहीं किया है।

फरमाया कि नक्शबन्दिया सिलसिले के सतगुरुजनों का कथन है कि जिस शख्स के दिल में इस राह (साधना-पथ) का दर्द बना रहा हो उसको चाहिये कि बाद तौबा नसूह (अपने पापों के लिये निर्मल तथा शुद्ध पश्चाताप के पश्चात) बक़द्र ताअत (ईश आराधना करने की सामर्थ्य के अनुसार) रिआयत जुहद, तवक्कुल, व कनाअत, व उज्लत व सब्र व तवज्जेह वगैरह जमीअ मुकामात करके औक़ात ज़िक्र इलाही में मशरूफ़ रक्खे और इस रिआयत को 'सफर दरवतन' कहते हैं (इन्द्रिह निग्रह, ईश्वर पर भरोसा, भाग्यनुसार जो मिले उस पर सन्तोष, एकान्तवास, धैर्य, व ईश्वर की ओर चित्त की एकाग्रता, इन सभी सिद्धान्तों के अनुकरण का ध्यान रखते हुये अपना सम्पूर्ण समय ईश्वर के चिंतन में व्यतीत करना चाहिये और इन सिद्धान्तों के अनुकरण का ध्यान रखने को ही 'सफर दरवतन' कहते हैं।

फरमाया हमारे तरीक़ में (साधना पद्धति में) ज़िक्र (जप)

से जज्ब (ब्रह्मलीनता की भावानुभूति) पैदा होती है और जज्ब की मदद से जमीअ मुक़ामात (सभी आध्यात्मिक स्थितियाँ) सरलता तथा दृढ़ता के साथ हासिल (प्राप्त) हो जाते हैं। फरमाया कि अगर किसी को इस सिलसिले के सतगुरु से, जिसमें यह विशेषताएँ मौजूद हों जो इस तरीक़ के अकाबिर (इस साधना पद्धति के श्रेष्ठ संतजनों) द्वारा मान्य हों, ऐसी मुहब्बत हो जाये कि उसकी गैबत (अनुपस्थिति) में उसकी सूरत हाज़िर रहती हो तो तरीका राबिता अख्तियार करना (अपनाना) चाहिये (इस तरीका में सतगुरु की अनुपस्थिति में उसकी सूरत सामने लाकर उसका ध्यान किया जाता है जिसे 'तसव्वुरे शैख' कहते हैं) लेकिन इसका ख्याल रखना चाहिये कि कोई ऐसी बात तुमसे न हो कि उनके (सतगुरु के) दिल में तुम्हारी ओर से कराहियत (घृणा) पैदा हो जाये। चाहिये कि अपनी मुराद (इच्छा) दिल से निकाल डाले और उन्हीं की मुराद पर क़ायम रहे। सब मिलाकर इस तरीके का मदार (निर्भरता) इर्तिबात जाने बैन है (दोनों तरफ से है अर्थात गुरु तथा शिष्य दोनों पर यह साधना निर्भर करती है)। जिस तरह कि रुई आतिशी शीशे के सामने होने पर सूरज की गर्मी हासिल (प्राप्त) करती है, उसी तरह बातिन बवजह इर्त्तिबात हरारत आगाही हक सुबहाना तआला कस्ब करता है। (उसी प्रकार साधक (शिष्य) का हृदय सतगुरु की तवज्जोह से परमात्मा के साक्षात्कार रूपी गर्मी को प्राप्त करता है)। यहाँ साधक (शिष्य) और सतगुरु की तुलना रुई और सूरज की गर्मी एकत्रित करने वाले आतिशी शीशे से की गई है। यह साधना पद्धति यथार्थ में हज़रत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) से शुरू हुई है क्योंकि उनको हज़रत मुहम्मद रसूल अल्लाह (सल्ल०) से निस्बत हुब्बी (प्रेम का लगाव) बदर्जे कमाल हासिल था और इसी राह से उन्होंने फैज़ हासिल किया है। फरमाया कि नक्शबन्दिया सिलसिले का

तरीका इसी निस्बत हुब्बी की वजह से हज़रत अबूबक्र सिद्दीक (रजि०) से मन्सूब है (सम्बन्धित) है।

फरमाया दवाम मराक़बा (ध्यान की नित्यता, हमेशगी) बड़ी दौलत है कि इससे दिलों में कुबूलियत पैदा होती है (हृदय में सर्वप्रियता पैदा होती है अर्थात मराकबा करने वाले साधक से लोग प्रेम करते हैं और वह लोगों से प्रेम करता है) और दिलों में कुबूलियत (सर्वप्रियता) पैदा होना अल्लाह तआला की कुबूलियत की निशानी है (अर्थात इस बात की पहिचान है कि ईश्वर उससे प्रेम करता है)।

फरमाया कि इन्जज़ाब (आकर्षण) व मुहब्बत यकीनी मूसिल है (निश्चित रूप से जीवन के चरम लक्ष्य अर्थात परमात्मा तक पहुँचाने वाला है) और इसका रुख़ सिवा ईश्वर के और तरफ नहीं है। इस तरीक (ढंग) के विपरीत अन्य प्रकार की साधनाओं का रुख चमत्कार तथा ऋद्धियों सिद्धियों की तरफ है। इसी वजह से कुछ अभ्यासी और साधक इन्हीं चमत्कारों में फँसे रह जाते हैं। फरमाया इन्जज़ाब (आकर्षण) व मुहब्बत हर इन्सान में है लेकिन पोशीदा (गुप्त) है। नक्शबन्दिया सिलसिले के सन्त जन इसी इन्जज़ाब की तर्बियत करते हैं (इसी आकर्षण तथा प्रेम को अपनी रूहानी तालीम से उभारते तथा दृढ़ करते हैं)।

फरमाया सतगुरुजन तीन कारणों से लोगों को रूहानी तालीम देते हैं या उनको उपदेश देते हैं। या तो ईश्वरीय प्रेरणा से वह ऐसा करते हैं, या अपने सतगुरुदेव के आदेशानुसार अथवा लोगों की पतित एवं गिरी हुई दशा पर करुणा की भावना से द्रवीभूत होकर लोगों को रूहानी तालीम अथवा नसीहत देते हैं। शफकत (करुणा, दया) का तक़ाज़ा (माँग, आवश्यकता) यह है कि तर्वीज़ शरीअत अख्तियार करे (अपने धर्म शास्त्र द्वारा निर्धारित कर्मकाण्ड को लोगों में प्रचलित तथा प्रसारित करे) और लोगों

को धार्मिक उपदेश दे तथा हिफाजत शरीअत करे और फिक़्ह (धर्मशास्त्र) वगैरह की शिक्षा देता रहे तथा उसको अपने व्यावहारिक जीवन में उतारता रहे और जो सन्तजन लोगों को वासिल करते हैं (ईश्वर साक्षात्कार कराते हैं) उसमें शफकत (दया, करुणा) शर्त नहीं है। वह शफकत से भी बड़ी बात है। इस तरीके का हासिल तर्बियत इन्ज़ाब ईमानी है (इस साधना पद्धति से लोगों को उस एक परम ब्रह्म की ओर उन्मुख होने की रूहानी तालीम मिलती है)। और इसी उद्देश्य की पूर्त्ति के लिये ही इस पृथ्वी पर सभी अवतारों का जन्म होता है।

फरमाया तवक्कुल (ईश्वर पर भरोसा) के यह मानी नहीं है कि तर्क असबाब करके बैठ जाये (जीवकोपार्जन के आवश्यक कर्म त्याग दे)। यह खुद बेअदबी (अशिष्टता) है। बल्कि किताबत (लेखन कार्य) वगैरह कोई सबब यानी पेशा मुकर्रर (निर्धारित) कर ले। फरमाया सबब (जीविका, पेशा) पर नज़र रखना रखना चाहिये। (अर्थात जीविकोपार्जन के लिये कोई कर्म करते रहना चाहिये)। सबब को दरवाजे की तरह समझना चाहिये। अगर कोई दरवाज़ा बन्द करके दीवार पर से गुजरना चाहे तो यह बेअदबी है। फरमाया क़तए अलाइक (अनासक्ति) के यह मानी हैं कि लौकिक और पारलौकिक सभी सम्पदाओं से दिल फिर जाये और सभी आध्यात्मिक स्थितियों तथा अनुभूतियों से बेपरवाही हो जाये और हर क्षण उस परमात्मा की ओर बेचैनी और व्याकुलता के साथ उन्मुख रहे।

फरमाया मुरीद को मुर्शिद (सतगुरु) के हाँथ में अपने को इस तरह दे देना चाहिये जिस तरह गुसाल (शरीर धोने वाले) के हाँथों में मुर्दे को दे दिया जाता है कि वह जिस किस्म का सुलूक (व्यवहार) चाहे उसके साथ करे। मुरीद को यह हक़ (अधिकार) हासिल नहीं है कि अपने मुर्शिद से इस किस्म की ख्वाहिश (इच्छा) ज़ाहिर

करे कि मुझको फलाँ शग्ल (अमुक अभ्यास) या फलाँ तरीक की तालीम मरहमत फरमाइये (अमुक ढंग की अध्यात्म-शिक्षा देने की कृपा कीजिये।) खुदराई का मुज़ाहिरा (अपनी इच्छा को प्रकट करना) बेशक मुर्शिद के प्रति बेअदबी (अशिष्टता) है।

फरमाया तलबे तरीकत में (अध्यात्म की शिक्षा ग्रहण करने में लुक्मए हलाल (ईमानदारी से अर्जित शुद्ध कमाई के भोजन को ग्रहण करने) की पूरी कोशिस करे। इसमें सुस्ती और फरोगुजाश्त (भूल) को राह न दे, क्योंकि जज्ब का तरीका (ईश्वर की ओर आकृष्ट व उन्मुख होने का मार्ग) अक्ल हलाल (शुद्ध कमाई से अर्जित भोजन द्वारा पवित्र की गई बुद्धि) की रोशनी से हासिल होता है और हराम गिज़ा (भोजन) से रास्ता (अध्यात्म का मार्ग) नज़र नहीं आता। अगर ऐसा शख्स इस सिलसिले में शामिल हो जाये जो हराम और हलाल की परवाह न करता हो, तो अव्वल उसको समझाएँ और लुकमए हराम की खराबियाँ बतायें और यह हिदायत करें कि अल्लाह तआला हाजिर व नाजिर है, इन्सान के हर फेल (कर्म) को देखता है। सम्भव है कि इन उपायों से वह एहतियात (सावधानी) करने लगे। इस पर भी वह एहतियात न करे तो फिर एखलाक से काम लें और लुक्मए हराम से उसको बचाने की दुआ वगैरह से कोशिश करें और उसकी मौजूदगी में लुक्मए हराम की बेबरकती (दुष्परिणाम) व बेअसरी (प्रभाव-हीनता) के वाकयात (घटनाएँ) बयान करें। अगर इस पर भी वह एहतियात न करे और जैसा कुछ मिल जाये खाता पीता रहे तो फिर तरीका (अध्यात्म-साधना) का दबाव उस पर डालें यानी जो रूहानी निस्बत उसके अन्दर पैदा हो चुकी है उसको सल्ब कर ले (छीन ले, जज्ब कर ले)।

फरमाया कि सुल्तान अबू सईद अबुलखैर (रजि०) का कथन है कि तसव्वुफ़ (सन्तमत) व सुलूक यह है कि उस इन्सान के

दिमाग में जो कुछ हो खुदसरी (अवज्ञा) व गुरूर (अहंकार) उसको दिमाग से निकाल दे, हाथ में जो कुछ हो यानी माल और दौलत वगैरह उसको दूसरे के सुपुर्द कर दे और जो कुछ जिस्म व जान पर गुजरे उसको बरदाश्त करे और घबराए नहीं। यथार्थ यह है कि मुसलमान (ईश्वर-भक्त) वही है जिसकी दृष्टि का केन्द्र बिन्दु दोनों जहान (लोक-परलोक) में सिर्फ खुदा की हस्ती हो और अपने आपको उसने खुदा के अहकाम (आदेशों) के सामने झुका दिया हो।

फरमाया कि तलब हकीकी (ईश्वर की ओर उन्मुख होने की चाह) खुदा की तरफ से पैदा होती है। यथार्थ यह है कि ऐसी चाह व इसके लिये बेचैनी का भावावेश और उमंग अपने में पैदा करना किसी तदबीर (उपाय) से सम्भव नहीं है और न इन्सान के बस की बात है। यह केवल ईश्वर की अहेतुकी दया-कृपा ही है कि वह इन्सान में इन बातों को पैदा करता है और इनकी बदौलत वह क्षण-मात्र में कुछ से कुछ हो जाता है। हज़रत पीरजाम (रहम०) ने क्या खूब फरमाया है कि 'दोनों जहान (लोक-परलोक) की इज्जत व सम्मान उन लोगों के हाथ में है जो सारी उम्र मौज, भौतिक सुख व आराम से व्यतीत करते हैं जिसे सन्तमत की भाषा में गफलत (असावधानी) की जिन्दगी कहते हैं लेकिन आखीर उम्र में खुदा इन लोगों को चौंकाता है (सचेत करता है) और तौबा की तौफीक (सामर्थ्य) पैदा करके अपनी ओर उन्मुख होने की चाह व हक़ के रास्ते पर (सत्य के मार्ग पर) डाल देता है। यथार्थ यह है कि हजरत पीरजाम (रहम०) ने बिलकुल सच फरमाया है कि 'अगर आखीर वक्त में तलब हकीकी (ईश्वर भक्ति की चाह) इन लोगों की (सांसारिक सुख-वैभव में ग्रसित लोगों की) रहनुमा (पथ-प्रदर्शक) न बन जाती तो दोनों जहान की रुसवाई (निंदा, अपयश) इनको नसीब (प्राप्त) होती।' परन्तु जीवन के अन्तिम समय

में भी सांसारिक माया-मोह में फँसे लोगों के दिलों में ईश्वर की ओर उन्मुख होने की यह तौफ़ीक (सामर्थ्य, प्रेरणा) ईश्वर की ही ओर से प्राप्त होती है।

हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) की करामतें (चमत्कार), ऋद्धिय -सिद्धियाँ बेशुमार हैं। उनमें कुछ करामतें प्रसाद रूप में बयान की जाती हैं—

आपके एक पड़ोसी को शहर का एक अफसर पकड़ कर ले गया और उस पर बहुत जुल्म (अत्याचार) किया। जब वह बेचारा हर प्रकार से मजबूर हो गया तो उसने ख्याल से (वैचारिक रूप से) हजरत ख्वाज़ा (रहम०) को याद किया और उनसे अर्ज करने लगा 'हुजूर, मेरी मदद कीजिए, मैं मुसीबत में हूँ। यह अफसर मुझ पर जुल्म कर रहा है।' ठीक उसी वक्त हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) पर यह पूरी घटना मुनकशिफ हो गई (उनकी आत्मिक शक्ति से उनके अन्तःकरण में प्रकट हो गई)। आपने अपने खलीफा से फरमाया कि उस अफसर के पास जाओ और कहो कि तुम हमारे पड़ोसी पर बेजा जुल्म कर रहे हो। उसे छोड़ दो। अगर न छोड़ोगे तो याद रक्खो हमारे ख्वाजगान (नक्श बन्दिया सिलसिले के सतगुरुजन) बहुत ग़यूर (स्वाभिमानी) हैं। इस जुल्म व इन्कार के बदले सिर्फ तुम्हारी ही नहीं, तुम्हारे घरवालों की जानें जायेगी। अफसर ने कहा कि मैं बिल्कुल न छोड़ूगा। देखूँ तो तुम्हारे पीर मेरा क्या बिगाड़ते हैं। हजरत ख्वाजा (रहम०) के खलीफा यह जवाब सुनकर वापस चले आये। अभी शाम न हुई थी कि बादशाह की तरफ से अफसर पर कई आरोप लगाये गये और निहायत बेइज्जती और अपमान के साथ वह अपने घर के कई जवानों के साथ कत्ल कर दिया गया और इस प्रकार हजरत ख्वाजा (रहम०) के पड़ोसी को उस अफसर के जुल्म से नजात (मुक्ति) मिली।

एक शख्स यह परीक्षा लेने के लिये कि देखूँ हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) के दिल में धन-दौलत की मुहब्बत है या नहीं कई हज़ार रुपये लेकर आपकी सेवा में उपस्थित हुआ और निवेदन किया कि मैं यह रुपया आपको और आपके सेवकों को देना चाहता हूँ। आपने फरमाया 'मियाँ ! इस रुपये की हमको जरूरत नहीं, फकीरों को माल-दौलत से क्या मतलब। कहीं और जगह जाकर इसे खर्च करना। वह ज्यादा इसरार (जिद्द) करने लगा। आपने फरमाया 'क्या तुम चाहते कि तुम मर जाओ तो मैं कहूँ कि 'ऐ आसमान पर रहने वाले राजिक (रोजी देने वाले अर्थात ईश्वर), जमीन पर रहने वाला रज्जाक (अन्नादाता) मर गया। अब तो उसके स्थान की पूर्ति के लिये और कोई दूसरा रज्जाक भेज। जो खुदा तुमको देता है वही हमको भी देता है।' जितना हजरत ख्वाजा (रहम०) उस शख्स से उन रुपयों को लेने से इन्कार करते, उतना ही वह रुपये लेने के लिये हठ करता। अन्त में हुजूर ने अपनी चटाई का कोना उठाकर फरमाया 'देख, इसके नीचे क्या है ?' उसने देखा कि सोने चाँदी की नदियाँ बह रही हैं। वह शख्स यह देखकर अचम्भित हो गया और उनके चरणों में गिरकर अपनी उस बेअदबी के लिये क्षमा याचना की और भविष्य में फकीरों की परीक्षा लेने का विचार बिलकुल त्याग दिया। आगे चलकर वह शख्स 'ईश्वर के परम भक्तों में हुआ।

जब हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) के शरीरान्त का समय निकट आया तो एक मौलवी साहब आपकी सेवा में उपस्थित हुये और आपसे 'बाकी बिल्लाह' के अर्थ पूँछे। आपने मौलाना से फरमाया कि इसके अर्थ शरीरान्त के बाद बताये जायेंगे। मौलाना को प्रतीक्षा करते हुये कुछ ही दिन व्यतीत हुये थे कि हजरत ख्वाजा (रहम०) बीमार पड़े। मौलाना उन्हीं दिनों उनको देखने के लिये आये और पुनः उनसे 'बाकी बिल्लाह' के मानी दरियाफ्त

किया। हजरत ने फरमाया कि जो शख्स मेरे जनाज़ा की नमाज पढ़ायेगा वही इसका मानी बतायेगा।

हजरत ख्वाजा (रहम०) का शरीरान्त हो चुका था, उनके पवित्र शव को स्नान कराकर कफन दिया जा चुका था और वसीयत के मुताबिक नमाज के लिये इमाम का इन्तजार था। इसी बीच आपके मुरीदों और सेवकों ने देखा कि एक इन्सान चादर में लिपटा हुआ दूर से चला आ रहा है। उसने जनाजा की नमाज पढ़ाई। नमाज के बाद वह जिस रास्ते से आया था उसी रास्ते से वापस जाने लगा तो मौलाना उसके पीछे लपके और 'बाकी बिल्लाह' के मानी दरियाफ्त किया। उस चादर से ढके हुये इन्सान ने पलट कर मुंह पर से चादर हटाई तो देखा कि वह खुद हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) थे। मौलाना के होश उड़ गये। हजरत ख्वाजा (रहम०) जिस तरफ से आये थे उधर रवाना होकर पेड़ों के झुंड में गायब हो गये। ('बाकी बिल्लाह' के अर्थ होते हैं कि 'जिसकी अल्लाह के साथ बक़ा हो' अर्थात जो परमात्मा में निरन्तर एकीभाव से स्थित हो। उक्त घटना द्वारा हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) ने उन मौलाना को अपने नाम का अर्थ इस प्रकार समझाया कि उन्होंने अपना पार्थिव शरीर तो त्याग दिया है, परन्तु उनकी आत्मा उस परमात्मा में निरन्तर लीन है और उसका नाश नहीं हुआ और अपनी इस अनश्वरता का प्रमाण उन्होंने इस रूप में दिया कि अपना स्थूल पार्थिव शरीर त्यागने के पश्चात उन्होंने स्वयम् अपनी आत्मिक शक्ति से स्थूल शरीर धारण कर अपने शव को दफनाने के पूर्व जनाजा की नमाज पढ़ाई।)

एक औरत का तीन चार साल का बच्चा ऊँची दीवार से नीचे गिर पड़ा। जमीन का फर्श पक्का था। गिरते ही उसकी हालत गम्भीर हो गई। कानों से खून बहने लगा और प्राण निकलने की स्थिति आ गई। औरत बेचारी ममता की मारी व्याकुल हो गई।

किसी हकीम ने हाथ नहीं रक्खा। सब तरफ से निराश होकर हजरत ख्वाजा (रहम०) की सेवा में आई और बच्चे को आपके चरणों में डाल दिया और रो रोकर कहने लगी 'हुजूर, आप दया कृपा के भंडार हैं और हर प्रकार से पूर्ण समर्थ हैं। मेरे बच्चे के प्राणों की रक्षा कीजिये और उसको जीवन-दान दीजिये, अन्यथा मैं मर जाऊँगी'। हजरत ख्वाजा (रहम०) अपनी आत्मिक शक्तियों तथा ऋद्धियों सिद्धियों को लोगों पर प्रकट नहीं होने देते थे। अतः अपने एक सेवक से फरमाया कि तिब (चिकित्सा शास्त्र) की अमुक किताब उठा देना। वह किताब देखकर फरमाया कि मैंने बच्चे के हालात को इस किताब से देख लिया है। बच्चा तुम्हारा मरेगा नहीं। इन्शा अल्लाह (अगर ईश्वर को मंजूर है) वह बहुत जल्द अच्छा हो जायेगा। उनका यह फरमाना था कि इधर वह बच्चा स्वस्थ होने लगा। थोड़ी देर में वह बिल्कुल चंगा हो गया और उसकी माँ खुश खुश बच्चे को लेकर चली गई।

हज़रत ख्वाजा (रहम०) की सैकड़ों करामात (चमत्कार) हैं जिनका वर्णन कठिन है और इससे अधिक क्या चमत्कार हो सकता है कि आपने केवल तीन चार साल सतगुरु की पदवी पर रहते हुये लोगों को अध्यात्म की शिक्षा दी और इतने कम समय में आपका यश तमाम लोगों में फैल गया। उस समय के बहुत से सतगुरुजन पीरी व मुरीदी त्याग करके आपकी सेवा में उपस्थित हुये और आपकी रूहानी निस्बत से फैज़याब हुये। देहली में जब आपकी कीर्ति चारों ओर फैलना शुरू हुई तो कुछ मशायख (गुरुजनों) को बहुत ईर्ष्या हुई और आपको नुकशान पहुँचाने के लिये कुछ साधनाएँ कीं तथा मंत्र आदि पढ़े लेकिन हज़रत ख्वाजा (रहम०) पर कोई असर न हुआ बल्कि उन लोगों का खुद ही नुकसान हुआ और अन्त में हज़रत ख्वाजा (रहम०) की सेवा में उपस्थित होकर उनके मुरीद हुये।

कहा जाता है कि जब आपकी उम्र चालीस वर्ष की हुई तो उस समय जिसकी मृत्यु का समाचार सुनते, एक ठंडी साँस लेकर फरमाते कि खूब छूटा। उन्हीं दिनों आपने अपनी एक बीबी साहिबा से फरमाया कि जब मेरी उम्र चालीस साल की होगी तो मेरे जीवन में एक महत्वपूर्ण घटना घटित होगी। फिर एक दिन फरमाया कि स्वप्न में देखा है कि मुझसे कोई कह रहा है कि जिस उद्देश्य के लिये तुमको लाये थे वह पूरा हो गया। एक दिन फरमाया कि थोड़े दिनों में सिलसिला नक्शबन्दिया में किसी का शरीरान्त होगा। एक रोज फरमाया कि कोई कहता है कि 'कुत्बे-वक्त' (उस समय के सन्त शिरोमणि) का शरीरान्त हो गया और मैं उस वक्त कसीदा गुर्रः (उत्तम काव्य में प्रशंसा) अपने मरसिया में पढ़ता हूँ (मृत्यु के बाद मृत व्यक्ति की जो प्रशंसा की जाती है उसे मरसिया कहते हैं)। और इसमें मेरी प्रशंसा लिखी हुई है। सारांश यह है कि महीना जमादीउल सानी के मध्य में आपको मर्ज मौत शुरू हुआ। इन दिनों में एक दिन आपने फरमाया कि हज़रत ख्वाजा अहरार (कु० सि०) को स्वप्न में देखा कि वह फरमा रहे हैं कि पैराहन (वस्त्र) पहिनो। इसके बाद आपने मुस्करा कर फरमाया कि अगर जिन्दा रहेंगे तो पहिनेंगे, वरना मेरा पैराहन कफन ही होगा। बीमारी के समय में एक रोज आपकी तन्मयता और बेहोशी इस सीमा तक बढ़ी कि आपके पास उपस्थित लोग यह समझे कि आपकी निज़ा की हालत है (अन्त समय में प्राणान्त होने की हालत है)। जब आप होश में आये तो आपने फरमाया कि अगर मौत ऐसी ही होती है तो मौत बड़ी नेमत (देन, उपहार) है और ऐसी हालत से निकलने का दिल नहीं चाहता। रोज़ दो शम्बा २५ जमादिउल सानी सन १०१२ हिजरी को आपने 'अल्लाह, अल्लाह' कहते हुये पार्थिव शरीर त्याग दिया। 'इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन' (सब कुछ अल्लाह के लिये है और सब उसी की तरफ लौट जायेंगे)।

आपकी समाधी मुहल्ला 'रामनगर' में नई दिल्ली स्टेशन से थोड़ी दूर अजमेरी दरवाजा की तरफ स्थित है। कहा जाता है कि एक बार आप अपने कुछ शिष्यों के साथ इस जगह पधारे थे। इस जगह को पसन्द कर यहीं आपने वुजू करके दो रक़अत नमाज़ पढ़ी थी। उस समय यहाँ की मिट्टी आपके दामन में लग गई थी। आपने उस समय यह फरमाया था कि यहाँ की मिट्टी दामनगीर होती है (दामन पकड़ कर रोकती है)।

•

हज़रत इमाम रब्बानी मुजद्दिद अल्फ़सानी शैख़ अहमद सरहिन्दी कुद्स सिर्रहू

हज़रत इमाम रब्बानी मुजद्दिद अल्फ़सानी शैख अहमद सरहिन्दी (कु० सि०) को हज़रत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) से रूहानी निस्बत मिली है। हज़रत की पैदाइश चौदह शव्वाल जुमा के दिन आधी रात नौ सौ इकहत्तर हिजरी को बमुकाम सरहिन्द हुई। आपका नसब (वंश, गोत्र) हज़रत उमर फारूक़ (रजि०) से मिलता है। 'रौज़तुल्कय्यूमिया' नामक ग्रन्थ में लिखा है कि आपके पूज्य पिताजी हज़रत मखदूम (रहम०) ने फरमाया कि आपके जन्म के पूर्व हमने स्वप्न में देखा कि सारे संसार में अन्धकार फैल गया है। सुअर, बन्दर व रीछ लोगों को मारे डाल रहे हैं और उसी समय मेरे सीने से एक नूर (प्रकाश) निकला और उसमें एक सिंहासन प्रकट हुआ और उस सिंहासन पर एक शख्स तकिया लगाये बैठा है। उसके सामने तमाम अत्याचारियों और नास्तिकों का बकरी की तरह वध किया जा रहा है और कोई

शख्स ऊँची आवाज में कह रहा है 'कह दो कि हक़ आ गया (सत्यता आ गई) और बातिल (झूठ) मिट गया और बातिल हमेशा मिट जानेवाली चीज है।' हज़रत मखदूम (रहम०) ने इस ख्वाब की तावीर (स्वप्न-फल) हज़रत शाह कमाल खतैली (रहम०) से दरियाफ्त की। उन्होंने कुछ विचार करने के पश्चात फरमाया कि तुम्हारे लड़का पैदा होगा। इससे अज्ञानता रूपी अन्धकार, नास्तिकता और बिदअत (धर्म में नई बात) दूर होगी।

कहा जाता है कि एक बार बचपन में (दूध पीने की अवस्था में) इतने गम्भीर रूप में बीमार पड़ गये कि जीने की आशा न रही। संयोग से हज़रत शाह कमाल खतैली (रहम०) वहाँ पधारे। हज़रत के पूज्य पिता जी ने शाह साहब के पास दम कराने को (झाड़ फूँक के लिये) ले गये। हजरत शाह साहब (रहम०) ने अपनी ज़बान हज़रत के मुँह में देदी और आप उसको देर तक चूसते रहे। हज़रत शाह साहब (रहम०) ने आपके पूज्य पिताजी को विश्वास दिलाया कि 'निश्चित रहो, यह लड़का दीर्घायु (बड़ी उम्र वाला) होगा। वह बड़ा विद्वान और ब्रह्म-ज्ञानी होगा। यद्यपि यह घटना बचपन की है, परन्तु हज़रत फरमाया करते थे कि मुझको अभी तक याद है। जब आपने विद्यार्थी जीवन में प्रवेश किया तो आपको मक़तब में दाखिल किया गया। थोड़े ही समय में आपको कुरआन मजीद कंठाग्र हो गई। इसके बाद आपने अपने पूज्य पिताजी से शिक्षा ग्रहण की। अधिकांश शिक्षा आपने अपने पूज्य पिताजी से प्राप्त की और कुछ विद्या दूसरे बड़े विद्वानों से ग्रहण किया। स्यालकोट में जाकर मौलाना कमाल कश्मीरी जो उस समय के उच्चकोटि के विद्वानों में थे उनसे शिक्षा ग्रहण की। इसके पश्चात् हदीसों के सभी महत्वपूर्ण ग्रन्थ तथा कुरआन मजीद की व्याख्याएँ अन्य विद्वानों से पढ़ीं। सत्रह वर्ष की आयु में संसारी

विद्या का अध्ययन समाप्त करके आप अध्ययन-अध्यापन के कार्य में संलग्न हुये। आप अपने विद्यार्थियों को बड़े ही परिश्रम व लगन से पढ़ाया करते थे।

इसी अवधि में आपका आगरा (जो उस समय देश की राजधानी थी) जाने का संयोग हुआ। इस यात्रा में आपका अबुल फज़ल से भी मिलने का इत्तफाक हुआ। मगर आप उनसे अपने धर्म में अविश्वास होने के कारण नाराज हो गये और फिर उनसे मिलना छोड़कर अपने वतन को वापस आये और अपने पूज्य पिता जी से सिलसिला चिश्तिया की रूहानियत की तालीम और इज़ाज़त हासिल की, लेकिन संगीत व वज्द (संगीत की रसानुभूति से उत्पन्न आत्म विस्मृति) से, जो चिश्चिया सिलसिले की रस्म है, परहेज़ किया।

इसी ज़माने में आप सख्त बीमार पड़ गये। आपकी बीबी साहिबा (धर्मपत्नी) ने दो रक़अत नमाज़ पढ़कर आपके स्वास्थ्य-लाभ के लिये दुआ माँगनी शुरू की और रो-रोकर आर्द्र आराधना करने लगीं। इसी हालत में नींद आ गई। मालूम हुआ कि जैसे कोई कह रहा है कि तुम निश्चित रहो। हमको इस शख्स से बहुत काम लेने हैं। अभी हज़ारों में से एक भी पूरा नहीं हुआ। इसके बाद आप शीघ्र ही स्वस्थ हो गये।

हज़रत को सदैव तवाफ (परिक्रमा) बैतुल्लाह (काबा शरीफ) और हज़रत मुहम्मद रसूल अल्लाह (सल्ल०) के मज़ार शरीफ के दर्शनों की उत्कट अभिलाषा बनी रहती थी लेकिन अपने पूज्य पिताजी की वृद्धावस्था में उनकी सेवा से अलग होना पसन्द नहीं करते थे। सन् १००७ हिजरी में हज़रत के पूज्य पिताजी का शरीरान्त हो गया और सन् १००८ हिज़री में हज करने के इरादा से सफर पर रवाना हुये। जब देहली पहुँचे तो मौलाना हसन कश्मीरी (रहम०) ने, जो हज़रत के दोस्तों में थे, उनसे हज़रत

बाकी बिल्लाह (रहम०) की तारीफ की और इनसे मिलने की चाह हज़रत के दिल में पैदा की। चूँकि हजरत को भी नक्शबन्दिया सिलसिले की रूहानी निस्बत का बहुत शौक था, अतः वह हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) की खिदमत में हाजिर हुये। हजरत ख्वाजा (रहम०) बड़ी ही प्रसन्नता से मिले और उनसे मिलने का उद्देश्य तथा इरादा दरियाफ्त किया। हजरत ने अपना इरादा ज़ाहिर किया। यद्यपि हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) अपने को बहुत ही गुप्त रखते थे और लोगों को बड़ी ही मुश्किल से बहुत देर में अपनी शरण में लेते थे परन्तु हजरत मुजद्दिद अल्फसानी (रहम०) के निवेदन करने पर इन्होंने अपनी इस आदत को त्याग करके फरमाया कि 'तुम्हारा इरादा मुबारक है लेकिन अगर कुछ दिन कम से कम एक महीना या एक हफ्ता इस फकीर के पास रुको तो क्या हर्ज है ?' हजरत उनके आदेशानुसार एक हफ्ता उनकी सेवा में रहे। अभी केवल दो ही दिन व्यतीत हुये थे कि आप में इनाबत (ईश्वर की ओर उन्मुख होने तथा तौबा करने) और अख्ज तरीका (नक्शबन्दिया सिलसिले की साधना पद्धति को ग्रहण करने) का शौक ग़ालिब हो गया। आपने हजरत ख्वाजा (रहम०) से अपना हाल अर्ज किया। हजरत ख्वाजा (रहम०) ने तत्काल उनको दाखिल तरीका किया और एकान्त में ले जाकर तवज्जोह शुरू की। अतः उसी वक्त हजरत का दिल ज़ाकिर हो गया (हृदय चक्र जागृत हो गया) और हलावत (माधुर्य, मिठास) व इल्तज़ाद (आनन्द) पैदा हुआ। फिर वह हालतें पैदा हुईं जो कभी देखने व सुनने में नहीं आई। दो महीने और कुछ दिनों की अल्प अवधि में तमाम निस्बत नक्शबन्दिया पूर्ण विस्तार के साथ हज़रत को हासिल हुई। इन्हीं दिनों का जिक्र है कि एक रोज हजरत ख्वाजा (रहम०) ने हजरत मुजद्दिद अल्फसानी (रहम०) की उलूअ इस्तिदाद (श्रेष्ठ सामर्थ्य) को

देखकर उनको एकान्त में बुलाया और अपनी घटनाएँ सुनाईं और फरमाया कि जब मुझको मेरे पीर मुर्शिद हजरत ख्वाजगी इमकिन की (रहम०) ने आदेश दिया कि तुम हिन्दुस्तान जाओ। वहाँ तुमसे यह तरीका प्रचलित होगा। मैंने अपने में इसकी पात्रता और योग्यता न पाकर अत्यन्त संकोच किया और इस्तिखारा किया (परोक्ष ज्ञान से यह जानना चाहा कि मेरा हिन्दुस्तान जाना शुभ है या नहीं)। इस्तिखारा में मुझे मालूम हुआ कि मानो एक तूती (तोता या मैना) पेड़ की डाल पर बैठी है। मेरे दिल में ख्याल आया कि अगर यह तूती मेरे हाथ पर आकर बैठ जाये तो मुझको हिन्दुस्तान की यात्रा में सफलता मिलेगी और मेरा उद्देश्य पूरा होगा। तूती मेरे हाथ पर आ गई। मैंने अपने मुँह का लुआब उसके मुँह में डाला और उस तूती ने मेरे मुँह में शकर डाली। सुबह उठकर मैंने यह ख्वाब हजरत ख्वाजगी इमकिन्की (रहम०) से अर्ज किया। उन्होंने सुनकर फरमाया कि तूती हिन्दुस्तानी पक्षियों में होती है। हिन्दुस्तान में तुमसे एक ऐसे शख्स का जुहूर (आविर्भाव) होगा जिससे संसार रौशन (प्रकाशित) होगा और तुम भी उससे बहरयाब (भाग्यवान) होगे।

फरमाया जब सरहिन्द पहुँचा आत्मा में ऐसा अनुभव हुआ कि कोई शख्स कहता है कि तुम कुत्ब (महान सन्त) के पड़ोस में आकर ठहरे हो और इस कुत्ब का हुलिया (आकृति) भी दिखाया। सुबह उठकर मैं उस जगह के सन्तों-महात्माओं से मिलने गया लेकिन किसी में वह क्षमता न पाई। मैंने सोचा कि शायद यहाँ के निवासियों में यह क्षमता होगी जो बाद को प्रकट होगी। अतः जब तुमको देखा तो वही हुलिया पाया और तुम में पूर्ण समर्थ सन्त होने की क्षमता पाई।

और भी एक रोज देखा कि मैंने एक बड़ा चिराग (दीपक) जलाया है और प्रतिक्षण उस चिराग की रोशनी बढ़ती चली जा

रही है और लोग इस चिराग से बहुत से चिराग रौशन कर रहे हैं और जब सरहिन्द के समीप पहुँचा तो वहाँ के जंगलों को मशालों से भरा पाया और इस बात को भी तुम्हारे ही विषय में संकेत समझा।

इस प्रकार हजरत बाकी बिल्लाह (रहम०) ने हजरत मुजद्दिद अल्फसानी (रहम०) को उक्त घटनायें सुनाईं और उन्हें रूहानियत की मुकम्मिल तालीम देकर सरहिन्द भेज दिया। थोड़े समय वहाँ रहकर आप फिर हजरत ख्वाजा (रहम०) की खिदमत में हाजिर हुये। इस बार हज़रत बाकी बिल्लाह (रहम०) ने आपको सतगुरु की पदवी प्रदान कर जिज्ञासुओं और साधकों को तालीम देने की आज्ञा प्रदान की और अपने खास खास शिष्यों को रूहानी तालीम के लिये आपके सुपुर्द किया और खिलअत व खिलाफ़त आता फरमा कर (अपना आध्यात्मिक उत्तराधिकारी बनाकर तथा रस्म के मुताबिक इस अवसर पर अपने कुछ वस्त्र आदि भेंट स्वरूप देकर) आपको बिदा किया। हजरत सरहिन्द में पहुँचकर लोगों को रूहानियत की तालीम देने में सलग्न हुये और आपका लोगों पर इतना प्रभाव पड़ा कि साधना के क्षेत्र में साधकों और जिज्ञासुओं का वर्षों का काम घड़ी व घंटों में पूरा हो जाता था और लोग उनके पास च्यूँटियों व टिड्डियों की तरह झुंड के झुंड एकत्रित होने लगे। इसी समय हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) ने आपको पत्र लिखकर अपने पास बुलाया। हजरत वह पत्र पढ़ते ही देहली को रवाना हो गये। आपके शुभागमन की खबर जब हजरत ख्वाजा (रहम०) को पहुँची तो काबुली दरवाजा तक पैदल अपने सेवकों के साथ आपके स्वागत के लिये तशरीफ ले गये और हजरत को बड़े आदर-सम्मान के साथ अपने घर पर ले गये। वहाँ अपने सभी असहाब व मुरीदों को अपने पास एकत्रित करके उनको ताकीद की (निर्देश दिया) कि

इनके रूबरू (सामने) न कोई मेरी तरफ मुतवज्जेह हुआ करे और न कोई मेरी ताजीम (आदर) करे, बल्कि सब इन्हीं की तरफ मुतवज्जेह रहा करें (अपना ध्यान आकृष्ट किया करें)। इस आदेश के पालन में जिन कुछ लोगों को संकोच करते हुये देखा, तो आपने उन लोगों से फरमाया, 'मियाँ ! हजरत मुजद्दिद अल्फसानी (रहम०) आफताब (सूर्य) हैं कि हम जैसे सितारे इनकी रोशनी में गुम हैं और स्वयं भी दूसरे शिष्यों की तरह हजरत के सतसंग में दाखिल हुआ करते थे और जब सत्संग से उठकर बाहर तशरीफ ले जाते तो हजरत की तरफ पोठ न करते बल्कि कुछ कदम उल्टे पाँव तशरीफ ले जाते और इसी तरह हजरत को पत्र लिखने में भी बहुत नियाज़मन्दी (आज्ञाकारिता) जाहिर करते।

लेकिन हज़रत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) के बावजूद इस कदर अत्यधिक कृपा के हज़रत के भी अदब व एतक़ात (विश्वास) की कुछ सीमा न थी। हज़रत ख्वाजा हिसामुद्दीन (रहम०) एक जगह लिखते हैं कि जिस ज़माने में हज़रत ख्वाजा (रहम०) की हज़रत पर अत्यधिक कृपा थी और आपके सम्मान और प्रशंसा में अत्यधिक मुबालग़ा (अत्युक्ति) फरमाया करते थे, एक दिन किसी जरूरत से मुझको आपको बुलाने के लिये भेजा। जैसे ही मैंने जाकर कहा कि हज़रत ख्वाजा (रहम०) आपको बुला रहे हैं, यह सुनकर मारे खौफ के चेहरे का रंग बदल गया और तमाम बदन में कँपकपी पैदा हो गई। मैंने अपने दिल में कहा कि सुना करते थे कि 'नज़दीकान रबेश बुअद' (जो पास बैठने वाले हैं उन्हें हैरत ज्यादा होती है) आज देख भी लिया।

हज़रत मुजद्दिद अल्फसानी (रहम०) ने खुद रिसाला 'मुद्दाए उलमाद' में लिखा है हज़रत ख्वाजा (रहम०) के सभी शिष्यों में हम चार आदमी विशेष रूप से हजरत ख्वाजा (रहम०) की

खिदमत में रहा करते थे। हर शख्स का हजरत ख्वाजा (रहम०) से अलाकः (लगाव) व एतकाद (विश्वास) अलग-अलग था। मेरा तो यह विश्वास था ऐसी सुहबत, तर्बियत व इर्शाद बाद जमाना हजरत मुहम्मद रसूल अल्लाह (सल्ल०) के हर्गिज पैदा नहीं हुई और खुदा का शुक्र किया करता था कि यद्यपि हजरत रसूल अल्लाह (सल्ल०) की इस्लाम की सुहबत से मैं मुशर्रफ (सम्मानित) नहीं हुआ, पर खुदा का हजार हजार बार शुक्र है कि इस सौभाग्य से मैं वंचित नहीं रहा (अर्थात् वैसी ही सुहबत अर्थात् सत्संग मुझे अपने सतगुरुदेव हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) से प्राप्त हो रहा है)।

जब हजरत देहली से सरहिन्द तशरीफ ले गये तो हजरत ख्वाजा (रहम०) प्रायः अपने असहाब का हाल व मुकाम (आध्यात्मिक स्थिति) आपसे दरियाफ्त किया करते थे और उनके वास्ते दुआ तवज्जेह की ख्वास्तगारी (आकांक्षा) करते थे और उसमें (पत्र में) 'अजीज मुतवक्किफ' (तुम्हारा देर लगाने वाला प्यारा) के इशारा से किसी का हाल दरियाफ्त फरमाते और उसके वास्ते भी तवज्जेह बहिम्मत तलब फरमाते (साहस के साथ उसकी तरफ भी ध्यान देने के लिये इच्छा प्रकट करते)। सर्वप्रथम तो हजरत ने इस विचार से कि कहीं हजरत ख्वाजा (रहम०) उनकी परीक्षा न ले रहे हों बड़ी विनम्रता के साथ उनसे क्षमा याचना की, परन्तु जब हजरत ख्वाजा (रहम०) का इलहाह (विनती) सीमा से अधिक हो गया, इस भय से कि कहीं अपने सतगुरुदेव की आज्ञा का उलंघन तथा अदब का तर्क (छोड़ना) न हो, उनके आदेशों का पूर्ण रूप से पालन किया (अर्थात् हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) अपने जिन जिन शिष्यों की आध्यात्मिक स्थितियों के विषय में जानकारी करना चाहते थे, हजरत मुजद्दिद अल्फसानी (रहम०) अपनी आत्मिक शक्ति से उनका पता लगाकर हजरत

ख्वाजा को अवगत कराते थे)। इस विषय में हजरत मुजद्दिद अल्फसानी (रहम०) के कुछ खलीफाओं ने अपनी पुस्तकों में इस बात को स्पष्ट किया है कि 'अजीज मुतवक्किफ' से आशय स्वयम हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) हैं और हजरत ख्वाजा (रहम०) ने अपने लिये हजरत से दुआए तरक्की मुकाम चाही थी (अपनी आध्यात्मिक प्रगति के लिये हजरत की दुआ के आकांक्षी थे)। और यह भी लिखा है कि अन्तिम समय में हजरत ख्वाजा (रहम०) फरमाया करते थे कि हजरत मुजद्दिद अल्फसानी (रहम०) के सत्संग के प्रभाव से यह मालूम हुआ कि तौहीद (अद्वैतवाद) की गली सँकरी थी और इससे आगे शाह राह (राजपथ) चौड़ा है। लिखने का तात्पर्य यह कि जो मामला इन पीर व इन मुरीदों में गुजरा वह देखते तो कहाँ सुना भी नहीं बल्कि किताबों में भी नहीं पढ़ा।

हजरत ख्वाजा रहम० ने एक रोज फरमाया कि मियाँ अहमद (हजरत मुजद्दिद अल्फसानी रहम०) मुकम्मिल मुरादों व मुहिब्बों (प्रेमियों) से हैं। ('मुराद' उस साधक या शिष्य को कहते हैं, जिसको ईश्वर और सतगुरु का प्रेम और उनकी कृपा उसके बिना किसी साधना, अभ्यास व प्रयत्न के उसको हर क्षण प्राप्त होती रहती है। ऐसे कामिल व मुकम्मिल मुराद की स्थिति का वर्णन कबीरदास जी ने इस प्रकार किया है 'मोरा राम मोको भजे, तब पाऊँ विश्राम'।) हजरत ख्वाजा (रहम०) ने एक रोज फरमाया कि मैंने इन तीन चार वर्षों में पीरी नहीं की, बल्कि खेल खेला है मगर ईश्वर का लाख लाख शुक्र है कि मेरा खेल और दूकानदारी निष्फल नहीं गई और ऐसा शख्स जाहिर (प्रकट) हुआ।

हजरत मुजद्दिद अल्फसानी (रहम०) फरमाया करते थे कि हजरत ख्वाजा (रहम०) की रूहानियत की तालीम की सरगर्मी (तेजी) उसी वक्त तक रही जब तक मेरी रूहानियत की तालीम

पूर्णता को नहीं प्राप्त हुई। जब मेरे काम (अध्यात्म की शिक्षा-दीक्षा) से निवृत्त हुये, तो ऐसा ज्ञात होता था कि उन्होंने अपने को पीरी के उत्तरदायित्व से प्रथक कर लिया है और सभी जिज्ञासुओं और शिष्यों को मेरे सुपुर्द कर दिया और फरमाया कि यह बीज बुखारा और समरकन्द से लाकर हिन्द में बोया। हजरत (रहम०) तीसरी बार सरहिन्द से देहली हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) की मुलाकात के लिये हाजिर हुये, हज़रत ख्वाजा (रहम०) ने फरमाया कि बदन में कमजोरी बहुत मालूम होती है। जीने की आशा कम है और अपने दोनों सुपुत्रों को (ख्वाजा उबैदुल्लाह और ख्वाजा अब्दुल्लाह को) जो उस वक्त दूध पीने वाले बच्चे थे बुलवा-कर अपने सामने हज़रत (रहम०) से तवज्जोह कराई और उनकी पूज्य माताओं को भी ग़ायबाना (परोक्ष रूप से) तवज्जोह कराई! इसके बाद जब हज़रत सरहिन्द वापस तशरीफ ले गये, फिर हजरत ख्वाजा (रहम०) से मुलाकात नहीं हुई। सरहिन्द पहुँच कर थोड़े दिन हज़रत वहाँ रुके। इसके बाद लाहौर तशरीफ ले गये। वहाँ के तमाम छोटे, बड़े, बूढ़े व बड़े बड़े विद्वान व ज्ञानी नक्शबन्दिया सिल-सिले में दाखिल हुये और हज़रत (रहम०) का सत्संग व आध्यात्मिक प्रभाव बहुत तेजी से फैलने लगा।

उसी समय में हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) के शरी-रान्त का दुखद समाचार मिला। आप अत्यन्त व्याकुलता के साथ देहली को रवाना हुये और वहाँ पहुँचकर हजरत ख्वाजा (रहम०) के परिवारवालों तथा गुरुभाइयों को सान्त्वना प्रदान की। हजरत ख्वाजा (रहम०) के असहाब ने आपका वहाँ तशरीफ ले जाना अपना परम सौभाग्य समझा और आपके सत्संग में हाजिर होने लगे। हजरत (रहम०) अपने पीर की वसीयत के मुताबिक सभी असहाब को रूहानियत की तालीम देने लगे और थोड़े ही दिनों में हजरत ख्वाजा (रहम०) के वक्त में जो ताज़गी व सरगर्मी थी

हजरत की तवज्जोह की बरक़त से पुनः पैदा हो गई। मगर इस ताजगी और सरगर्मी के बावजूद कुछ ईर्ष्यालु व्यक्तियों ने कुछ असहाब (सत्संगी भाइयों) को उनके विरुद्ध भड़काना शुरू किया। सबसे पहिले हजरत (रहम०) ने अपने विरोधियों को समझाया और उपदेश दिया। मगर जब इससे काम न चला, कुछ लोगों की रूहानी निस्बत सल्ब कर ली। इधर हजरत ख्वाजा (रहम०) के कुछ मुरीदों ने भी हजरत (रहम०) की हत्या के लिये हजरत ख्वाजा (रहम०) की मज़ार पर खुत्में पढ़े और दुआएँ की मगर 'चिरागे रा कि ईज़द बर फरोज़द, कसे को पफ रेशश बसोज़द' (जिस चिराग को खुदा रौशन करता है, जो उस पर फूक मारेगा उसकी खुद डाढ़ी जल जायेगी)। किसी से कुछ न हुआ और हजरत (रहम०) सरहिन्द वापस तशरीफ ले गये। उक्त घटना के कुछ दिनों के बाद ईश्वरीय प्रेरणा के फलस्वरूप उनके सभी विरोधियों ने अपने गुनाह के लिये क्षमा याचना की। हजरत (रहम०) ने कृपा कर उन सभी को क्षमा कर दिया और इसके बाद हर साल माह जमादिउल आख़री में, जो हजरत ख्वाजा (रहम०) के शरीरान्त का महीना था और उसी अवसर पर हजरत ख्वाजा (रहम०) का उर्स (भण्डारा) होता था, हजरत (रहम०) देहली तशरीफ लाते और कुछ दिनों वहाँ रुककर सरहिन्द वापस जाते। दो तीन बार आगरा तक भी जाने का संयोग हुआ, अन्यथा आप हमेशा सरहिन्द में ही रहे। या आखिरी उम्र में बादशाह द्वारा दी गई तकलीफों के कारण फौज के साथ रहने और घूमने का संयोग हुआ। (इस घटना का विस्तृत विवरण ईश्वर-इच्छा से आगे अंकित किया जायेगा)।

हजरत की अच्छाइयाँ और विशेषताएँ इतनी हैं अधिक कि उनका सविस्तार वर्णन करना असम्भव है। फिर भी कुछ नीचे प्रसाद रूप में अंकित की जा रही हैं :—

(१) आपको खमीर तीनत (आपकी प्रकृति व स्वभाव का सार तत्त्व) उस मिट्टी से बना कि जो हजरत रसूल अल्लाह (सल्ल०) की तहकीक (अनुसंधान) व तक़मील (पूर्णता) से शेष रही थी। अतः इसका इशारा हज़रत ने अपने पत्रों के संकलन की तीसरी जिल्द के सौवें पत्र में किया है। ऐसा होना असम्भव भी नहीं प्रतीत होता क्योंकि अल्लाह तआला फरमाता है 'व इन मिन शैइन इल्ला इन्दना ख़जाइनहू' (कोई चीज भी नहीं है दुनिया की, मगर उसका ख़जाना हमारे पास है)। इसके अलावा जनाब रसूल अल्लाह (सल्ल०) ने फरमाया है कि मैं और अबू बक्र (रजि०) व उमर (रजि०) एक ही तीनत (प्रकृति) से पैदा हुये हैं और उबैदुल्लाह बिन जफर (रजि०) को भी फरमाया कि तू मेरी तीनत से पैदा हुआ है और तेरा बाप फरिश्तों (देवताओं) के साथ आसमान में उड़ता था। अतः यह उचित है कि जिस खाक (मिट्टी) को अल्लाह तआला ने अपने हबीब (प्रेमपात्र) के लिये तैय्यार की हो और उसको अनवार (प्रकाशपुंजों) और बरकात (ईश्वरीय उपहारों) से परवरिश (पोषित) किया हो उसके कुछ शेष अंश से अपने किसी औलिया (संत) का खमीर-तीनत बना दिया हो।

(२) अल्लाह तआला ने आपको 'क़य्यूमत' की महान पदवी प्रदान की थी। (कय्यूम ईश्वर का एक नाम भी है जिसका अर्थ होता है जिससे तमाम चीजें कायम (अस्तित्व में) हैं। हजरत ने फरमाया कि एक रोज मैं जुहर की नमाज (दोपहर की नमाज) के बाद मराकिब (ध्यान में) बैठा था और हाफिज कुरआन पढ़ रहा था कि यकायक मैंने अपने ऊपर एक खिलअत (वस्त्र जो किसी के सम्मान में दिया जाता है) अत्यन्त प्रकाशवान पाया। ऐसा मालूम हुआ कि यह खिलअत कय्यूमियत तमाम मुम्किनात है (जिन बातों का होना अथवा अस्तित्व सम्भव हो, उन सभी का कय्यूम होने का उपहार रूपी यह वस्त्र मुझे प्रदान किया गया है),

जो हजरत मुहम्मद रसूल अल्लाह (सल्ल०) के विरासत (उत्तराधिकार) व ताबेअत (आज्ञाकारिता, अनुकरण) के रूप में मुझे प्राप्त हुआ है। इतने ही में हजरत मुहम्मद (सल्ल०) तशरीफ लाये और अपने शुभ हाथों से मेरे सर पर पगड़ी बाँधी और क़य्यूमत की महान पदवी प्राप्त होने के लिये मुझे मुबारकबाद दिया। हजरत के मकतूब (पत्र) ७९-८० (तीसरी जिल्द) में 'कय्यूम' की व्याख्या सविस्तार की गई है परन्तु स्थानाभाव के कारण उसका यहाँ उल्लेख करना सम्भव नहीं है, बल्कि हजरत के सुपुत्र तथा खलीफा हजरत ख्वाजा मुहम्मद मासूम (रहम०) की पुस्तक 'मकतूबात मासूमिया' के मकतूब (पहिली जिल्द) से निम्न लिखित अंश दिया जा रहा है जो संक्षेप में है और जिसे समझा भी जा सकता है—

'इस दुनिया का कय्यूम अल्लाह ही है (ईश्वर से ही इस संसार का अस्तित्व है)। और उसके कायम मुकाम (स्थानापन्न) औलिया लोग (ऋषिगण) उसके साये के घेरे में और अब्दाल लोग (पूर्ण समर्थ सन्त) उसके दरियाए कमाल में तैरते हैं। दुनिया के तमाम लोग उसी की तरफ तवज्जोह रखते हैं (आकृष्ट रहते हैं) और तमाम लोगों की तवज्जोह (ध्यान, आकर्षण) का किबला (केन्द्र बिन्दु) वही है। चाहे लोग उसको समझें या न समझें बल्कि तमाम आलमों (लोकों) का वजूद (अस्तित्व) उसी की ज़ात (हस्ती) से है तो अफ़ादे-आलम (मनुष्य-लोक) का क्या जिक्र किया जाये। चूँकि यह लोग अस्मा व सिफाते इलाही (ईश्वर के नामों व गुणों) के जाहिर होने की जगह हैं और उनके दरमियान (मध्य) में कोई और मौजूद नहीं है तो सारे के सारे उसी के (ईश्वर के) औसाफ (गुण) हैं और औसाफ (गुण) मौसूफ़ (गुणी) से अलग नहीं हो सकते। जब तक कि इनका क़याम (अस्तित्व) उस खुदा की जात से होगा तब तक खुदा का यह हुक्म जारी रहेगा कि बहुत सी सदियों के बाद किसी आरिफ (ब्रह्मज्ञानी, परम सन्त) को अपनी ज़ात से

कोई हिस्सा इनायत फरमायेगा (प्रदान करने की कृपा करेगा) और अपनी नूरानी जात का अक्स (प्रतिबिम्ब) देगा ताकि उसकी नयाबत (सहायक) और खिलाफत (खलीफा अर्थात उत्तराधिकारी होने) की वजह से वह तमाम चीजों का दुरुस्त करने वाला बने और तमाम चीजें उसी की वजह से कायम हों !"

(३) हजरत (रहम०) को 'मुजद्दिद अल्फसानी' क्यों कहा जाता है इस तथ्य की व्याख्या हजरत (रहम०) ने स्वयं अपने पत्रों के संकलन की दूसरी जिल्द के चौथे पत्र में की है, जिसमें 'इल्मुल यकीन' का वर्णन करते हुये फरमाते हैं :—

".....ऐनुल यकीन (किसी चीज का पूर्ण विश्वास के साथ जानना) हक्कुल यकीन (अटल विश्वास) क्या बतायेंगे (अर्थात ईश्वर पर अटल विश्वास रखने वाले और ईश्वर को पूर्ण विश्वास के साथ जानने वाले उस परमात्मा की हस्ती का वर्णन नहीं कर सकते) और अगर वह बता भी दें तो कौन समझेगा और कौन इसकी हकीकत को समझेगा। यह 'मारिफत' (अध्यात्म) की बातें विलायत (ऋषि या वली) की हद से बाहर हैं। साहबाने विलायत (ऋषि तथा महात्मा) और उल्मा (ज्ञानी लोग) दोनों उसके समझने से आजिज़ (विवश) हैं। यह उलूम (अर्थात अध्यात्म विद्याएँ) अनवार नबूवत (अवतार के प्रकाश पुंजों) के मिश्कात (वह बड़ा ताक जिसमें चिराग रखे जाते हैं) से हासिल किये जाते हैं। दूसरी हजारवीं की तश्दीद (पुनरावृत्ति) के बाद उनकी विरासत (उत्तराधिकार) की तौर से यह मारफतें (अध्यात्म विद्याएँ) ताजी हुई हैं और सामने आई हैं। [इस कथन में इस बात को बतलाया गया है कि हजरत मुहम्मद रसूल अल्लाह सल्ल० के एक हजार वर्षों के बाद दूसरा हजार वर्षों का काल आरम्भ होने पर हजरत मुजद्दिद अल्फसानी रहम० द्वारा उन सभी अध्यात्म विद्याओं का नवीनता

और विशेषता लिये हुये आविर्भाव हुआ है। 'मुजद्दिद' का शाब्दिक अर्थ होता है 'पुरानी चीज को नये सिरे से बनाने वाला, पुरानी चीज का सुधार करने वाला' और 'अल्फसानी' का अर्थ है 'दूसरा हजार'। हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के एक हजार वर्षों के बाद दूसरा हजार वर्षों का काल आरम्भ होने पर हजरत मुजद्दिद अल्फसानी का आध्यात्मिक क्षेत्र में आविर्भाव हुआ और आपने मारिफत (ब्रह्मज्ञान, अध्यात्म) की उन सभी पुरानी बातों को एक नवीनता और विशिष्टता प्रदान की, जो हजरत मुहम्मद (सल्ल०) द्वारा आविर्भूत हुई थीं। इसीलिये आपको 'मुजद्दिद अल्फसानी' रहम० के नाम से पुकारा जाता है।]

इन उलूम और मआरिफ (अध्यात्म-विद्याओं) का मालिक इस हजारवीं साल का मुजद्दिद यह है (अपनी ओर संकेत किया है), जैसा कि इसके उलूम व मआरिफ के मुतआलः (समीक्षा, गम्भीर अध्ययन) करने वालों पर पोशीदा (गुप्त) नहीं है। जिन मआरिफ को इसने (हजरत मुजद्दिद अल्फसानी रहम०) ने खुदा की जात (हस्ती) व सिफात (गुण, विशेषताएँ) और अफआल (कृतियों) के बारे में बयान किये हैं और अहवाल (रूहानी हालतें) और जुहूर (अध्यात्म की गुप्त बातों का प्रकटीकरण) और तजल्लियात (अध्यात्म-ज्ञान रूपी प्रकाश पुंज) जो उसने जाहिर की हैं, उनका मुतआलः करने वाले यह यकीन करेंगे कि यह मआरिफ और उलूम उलमा (ज्ञानियों) के उलूम से और औलिया के मआरिफ के हद से बाहर हैं, बल्कि इन लोगों का इल्म इन उलूम के मुकाबिल (तुलना) में छिलके की हैसियत रखता है और यह मआरिफ इस छिलके का मग्ज (गूदा) है। और यह भी समझ लें कि हर सौ साल के बाद एक मुजद्दिद पैदा हुआ है लेकिन सौ साल के बाद वाला मुजद्दिद और है और हजार साल के बाद वाला मुजद्दिद और है जितना कि खुद सौ और हजार में फर्क है, उतना ही इन मुजद्दिदों

में भी फर्क है, बल्कि उससे भी ज्यादा फर्क है। मुजद्दिद वह है कि उस ज़माने में जो कुछ भी फैज उसके जरिये से उम्मत (किसी अवतार या पैगम्बर को मानने वाले समुदाय) को पहुँचे, चाहे वह लोग (औलिया, सन्त महात्मा) उस जमाने के आफताब (सूर्य) और औताद (खूँटे) हों उस फैज़ को उम्मत वालों तक पहुँचा दें।...."

(४) एक रोज़ हजरत को हल्का व मराकबा में दीद कुसूर गालिब हुई (अपना कोई अपराध या गलती दिखाई दी)। उसी समय इलहाम हुआ (ईश्वर की ओर से हृदय में यह बात पैदा हुई) "बख्शा (क्षमा किया) तुझे और जिस शख्स ने तेरा वसीला (साधन, ज़रिया) बवास्ता या बिला वास्ता (बिना माध्यम के) क़यामत तक पकड़ा।"

(५) हजरत ने फरमाया कि जो कोई मेरे तरीके में बवास्ता या बेवास्ता मर्द-औरत कयामत (प्रलय) तक दाखिल होंगे सबको मेरे पेश नजर (सामने) किया गया और इसका नाम, वंश, जन्म स्थान तथा घर बतलाया गया है। अगर चाहूँ तमाम बयान कर दूँ।

(६) हजरत को ग़ायत इन्किसार से (अत्यन्ता विनम्रता की भावना सहित) यह ख्याल आया कि जो कुछ मैं लिखता हूँ मालूम नहीं कि अल्लाह तआला की मर्जी व मकबूल (पसन्द) है या नहीं। इसी समय गैबी (परोक्ष से) आवाज आई कि यह उलूम कि जो कुछ तुमने लिखे हैं तमाम मकबूल हैं। फिर उसी वक्त इलहाम हुआ कि जो कुछ लिखा बल्कि जो कुछ तुम्हारी बातचीत में आया वह भी मर्जी व मकबूल है (वह भी ईश्वर की इच्छानुसार लिखा गया है और वह ईश्वर को पसन्द है), बल्कि वह तमाम हमने (ईश्वर ने) कहा है और हमारा बयान है।

(७) हजरत ने फरमाया कि हजरत इमाम मेंहदी (अलैउल

रिज़वान) इस तरीके (नक्शवन्दिया सिलसिले) की निस्बत हासिल करेंगे ।

हज़रत (रहम०) के कश्फ[1] व ख़वारिक[2]–

(१) कहा जाता है कि एक मरतबा हजरत को जियारत बैतुल्लाह (काबा शरीफ के दर्शनों) का शौक अज़हद (अत्यधिक) गालिब हुआ । एक रोज इसी बेकरारी (व्याकुलता) में आपने देखा कि सारा संसार, जिन्न व इन्सान नमाज पढ़ते हैं और सिज़्दा हजरत की तरफ करते हैं (हजरत की तरफ झुककर माथा टेकते हैं) । हजरत यह देखकर अत्यन्त अचम्भित हुये और कश्फ के जरिये इस घटना का रहस्य जानना चाहा । मालूम हुआ कि क़ाबा शरीफ आपकी मुलाकात के वास्ते आया है और आपका अहाता किया है (आपको घेर लिया है) । इस वजह से जो काबा को सिज्दा करता है वह आपकी तरफ मालूम होता है। इसी समय इलहाम हुआ कि तू हमेशा जियारत काबा का मुश्ताक (आकांक्षी) रहता है, इस वास्ते हमने काबा को तेरी जियारत (दर्शनों) के वास्ते भेजा है ।

कहा जाता है कि एक रोज हजरत (रहम०) अपने मुरीदों के साथ मराकबा में बैठे थे कि हजरत शाह सिकन्दर (रहम०) व शाह खितैली (कु० सि०) तशरीफ लाये और और एक खिर्का[3] आपके कंधों पर डाल दिया । हजरत ने जो आँख खोली तो देखा शाह सिकन्दर (रहम०) हैं । जल्दी से उठे और सम्मान सहित उनसे गले मिले । हजरत शाह सिकन्दर (रहम०) ने फरमाया कि मेरे जद्दे अमजद (दादा, बाबा) अपने शरीरान्त के निकट यह

---

१. कश्फ = आत्म-शक्ति द्वारा गुप्त बातों का ज्ञान । २. खवारिक = वह आचार-व्यवहार जो दूसरे व्यक्तियों के लिये आश्चर्यजनक हों ।

३. खिर्का = किसी संत का पहिना हुआ वस्त्र ।

जुब्बा (लम्बा अँगरखा) जो कि हजरत अब्दुल कादिर जीलानी (रहम०) (कादरिया सिलसिले के प्रवर्त्तक) से पुश्त दर पुश्त हमारे यहाँ चला आता है मेरे सुपुर्द किया था और फरमाया था कि इसको धरोहर के रूप में अपने पास रख लो। जिसको मैं कहूँगा उसके हवाले करना। अब कुछ मर्तबा मुझसे मेरे जद्दे अहमद (रहम०) ने तुम्हारे हवाले करने के वास्ते ख्वाब में कहा, लेकिन मेरे लिये इस तबर्रुक (प्रसाद, उपहार) का अलहदा करना बहुत मुश्किल काम था। मगर इस बार उन्होंने सख्ती के साथ ताड़ना देकर मुझे हुक्म दिया है, अतः विवश होकर यह खिर्का लाया हूँ। हजरत (रहम०) खिर्का पहिन कर खिलवत (एकान्त) में तशरीफ ले गये। वहाँ आपके दिल में खतरा (दुर्विचार) गुजरा कि मशायख (सतगुरुजनों) के भी अजीब मामूल (दस्तूर, नियम) हैं कि जिसको जामा (वस्त्र) पहिना दिया वही खलीफा बन गया। वरना यह चाहिये कि पहिले खिलअत मानवी (अभ्यान्तरिक वस्त्र) पहिनायें, फिर अपना खलीफा बनायें (पहिले अपने सिलसिले की रूहानी निस्बत की तालीम देकर उसमें पारंगत बनायें, फिर अपना खलीफा बनायें)। इस दुर्विचार के आते ही तत्काल हजरत अब्दुल कादिर जीलानी (रहम०) अपने सभी खलीफाओं के साथ तशरीफ लाये और अपने सिलसिले की खास रूहानी निस्बत के अनवार (प्रकाश पुंज) से मालामाल कर दिया। उस वक्त आपके दिल में यह ख्याल पैदा हुआ कि मेरी रूहानी परवरिश (पालन-पोषण) नक्शबन्दिया सिलसिले में हुई है। यह ख्याल आते ही उसी समय हजरत अब्दुल खालिक गुज्दवानी कु० सि० से लेकर हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) तक के सभी सतगुरुजन तशरीफ लाये और हजरत अब्दुल कादिर जीलानी (रहम०) के बराबर बैठे। नक्शबन्दिया सिलसिले के सतगुरुजनों ने फरमाया कि शैख अहमद (हजरत मुजद्दिद अल्फ-सानी रहम०) हमारी तरबियत (रूहानी तालीम) से कमाल व

तकमील को पहुँचे। आपको इनसे क्या सम्बन्ध है ? कादरिया सिलसिले के सतगुरुजनों ने फरमाया कि इन्होंने सबसे पहिले चाशनी हमारे सिलसिले से खाई है (यह उस बात की तरफ इशारा है कि हज़रत शाह कमाल खिलैती कु० सि० हजरत की दूध पीने की उम्र में तशरीफ लाये थे और हजरत उस जमाने में बीमार थे और शाह साहब ने अपनी ज़बान उनके मुँह में दे दी थी और आपने उसको खूब चूसा था) और अब खिर्का भी हमारा पहिना है। इस बहस में हजरात चिश्तिया व सुहरवर्दिया भी तशरीफ लाये और कहा कि इनके हम भी दावेदार हैं क्योंकि हमारे खानदान की हजरत को अपने पूज्य पिताजी से, हजरत बाकी बिल्लाह (रहम०) से गुरु-दीक्षा प्राप्त होने के पहिले, खिलाफत मिली थी (खलीफा बनाये गये थे)। हजरत मुजद्दिद अल्फसानी (रहम०) के खलीफा मौलाना बदरुद्दीन सरहिन्दी (रहम०) ने अपन ग्रन्थ 'हजरातुल कुद्स' में लिखा है कि हजरत (रहम०) की जबानी सुना गया है उस वक्त इतनी अधिक संख्या में सन्तों महात्माओं की महान आत्माएँ जमा हुईं कि तमाम मकान व गली कूचा भर गया और इस बहस को होते हुये सुबह से दोपहर का वक्त आ गया। इसी मौके पर हजरत मुहम्मद रसूल अल्लाह (सल्ल०) तशरीफ लाये और अपनी महान दया-कृपा से सबको तसल्ली व दिलासा फरमा कर इर्शाद फरमाया कि चूँकि शेख अहमद (रहम०) की तक़मील (तालीम की पूर्णता) तरीका नक्शबन्दिया में हुई है इस वास्ते यह इसी सिलसिले की तालीम की तर्वीज़ करें (प्रचार करें, फैलायें) और बाकी दूसरे सिलसिलों की रूहानी निस्बत भी इल्का करें (दिल में रखें) कि इनका हक़ भी साबित है और इसी पर फातिहा खैर पढ़ा गया और सब बिदा हो गये।

कहा जाता है कि एक रोज हाफिज हल्का (सत्संग) में कुरआन मजीद पढ़ रहा था यकायक कुरआन शरीफ के बारे में कुछ वसा-

विस (बुरे विचार) मेरे दिल में आने लगे। ख्याल आया कि नफ्स मुतमईय्यना हो गया (मन विभिन्न वासनाओं के प्रभाव से मुक्त होकर सन्तुष्ट हो गया है) तथा विलायत मुतहक्किक (यकीनी, निश्चित) फना व बका हासिल हो गई, फिर यह खतरात (बुरे विचार) कहाँ से पैदा हुये। इसीलिये इस राज़ के क़श्फ (इस रहस्य को आत्म-शक्ति द्वारा जानने) के लिये मुतवज्जेह हुआ। विशेष तवज्जेह व बेहद बेचैनी के बाद क्या देखता हूँ कि एक मुर्ग (पक्षी) अजीबुल खिल्कत (जिसकी आकृति और बनावट विचित्र है) मेरे सीने से निकलकर बाहर हो गया है। गौर किया तो मालूम हुआ कि सीने में भी खन्नास (पिशाच) था जो वसवसा (बुरे विचार) डालता था और हजरत पैगम्बर (सल्ल०) को इसी खन्नास के शर (उपद्रव) से बचने के वास्ते यह हुक्म हुआ था—'ऐ पैगम्बर तुम कहो कि मैं उस शैतान के वसवसों से, जो वह लोगों के दिलों में पैदा करता है ख्वाह जो जिन्नात में हों या आदमियों में, पनाह माँगता हूँ तमाम लोगों के पालने वाले से और तमाम लोगों के मालिक से और तमाम लोगों के खुदा से।' और इलहाम हुआ कि असल दीन में जो खतरा (बुरा विचार) गुजरता है उसी का मंशा (आशय) यही खन्नास है जो सीने में आशयाना (घोंसला) रखता है और हर वक्त नेशजनी करता रहता है (डंक मारता रहता है)। फिर इलहाम हुआ इसके घोंसले को तेरे सीने से दूर कर दिया। हजरत ने फरमाया कि उस खन्नास के निकल जाने के बाद अजब शर्हा सद्र (रूहानी फैज़ में महान विस्तार व बढ़ोत्तरी) हासिल हुई)।

नकल है कि हजरत (रहम०) ने फरमाया कि मैंने ख्वाब में देखा कि हजरत पैगम्बर (सल्ल०) के हुजूर में (समक्ष) हाजिर हुआ कि हजरत खातमियत (यमराज) ने एक इज़ाजतनामा (अधिकार-पत्र), जैसा कि मशायख (सतगुरुजन) अपने खलीफाओं को लिखकर दिया करते हैं, मुझको प्रदान करने की कृपा की है।

लेकिन बाद को मालूम हुआ कि इस इज़ाजतनामा में अभी कुछ कमी है कि इतने में एक शख्स आकर मुझसे वह इजाज़तनामा हजरत पैगम्बर (सल्ल०) के पास ले गया और उस पर कुछ लिखवाकर और हजरत महबूब रब्बुल आलमीन (हजरत मुहम्मद सल्ल०) की मुहर से मुजय्यिन कराकर (सजा कर) मुझको लाकर दे दिया। उसकी पीठ पर अल्ताफ अजीमा (महान दयायें, कृपाएँ, मेहरबानियाँ) दुनिया के मुतअल्लिक (संसार के विषय में) लिखे हैं और उसकी पुश्त (पीठ) पर लिखा है कि तुमको इजाजत नामा आखिरत अता हुआ व मुकाम शफाअत मरहमत फरमाया (वह उच्च-कोटि की आध्यात्मिक स्थिति प्रदान की गई कि जिसके द्वारा उन्हें यह अपूर्व सामर्थ्य प्राप्त हुआ कि वह कयामत अर्थात प्रलय के समय जिस किसी की नजात (मुक्ति) के लिये ईश्वर से सिफारिश करेंगे उसको मुक्ति प्रदान की जायेगी।) उस इज़ाजतनामा के कागजात बहुत तूलानी हैं (विस्तार से हैं) और इस पर बहुत सी सतरें (पंक्तियाँ) लिखी हुई हैं। फरमाया कि मैं जनाब रसूल अल्लाह (सल्ल०) के पास इस तरह बैठा हूँ जैसे कि बेटा बाप के पास बैठा हो। इस समय मैं वह इजाजतनामा लपेटा हुआ हाथ में लिये हुए हरम शरीफ (जनान खाना) में हजरत मुहम्मद रसूल अल्लाह (सल्ल०) के साथ दाखिल हुआ। हजरत खदीजा रजि० (हजरत मुहम्मद साहब सल्ल० की धर्मपत्नी) मुझसे हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के सामने फरमाने लगीं कि मैं तेरे इन्तजार में थी और तू यह काम कर (उस इजाजतनामा में उन्हें जो काम सौंपा गया था अर्थात कयामत के दिन लोगों की नजात (मुक्ति) के लिये ईश्वर से सिफारिश करने का उसे पूरा करना)। फरमाया कि मुझको आँ हजरत रसूल अल्लाह सल्ल० व हजरत खदीजा रजि० की यह उप-स्थिति गैर नहीं मालूम होती थी (अर्थात मैं यह अनुभव कर रहा था कि मैं अपने ही परिवार वालों के बीच बैठा हूँ)।

हज़रत ने फरमाया कि एक रोज मैं बैठा हुआ था कि दायरा गजब इलाही ज़ाहिर हुआ (ईश्वर का महान भयावह अचम्भित करने वाला विराट रूप जाहिर हुआ।) जिस वक्त उसमें सैर की, तरह-तरह के गजब जाती व सिफाती व इंतकामानः व सुवहाना मुताला किये (ईश्वर के विभिन्न गुणों से युक्त अनेकों रूप अर्थात् रौद्र रूप व अत्यन्त मनमोहक सुन्दर रूपों के दर्शन किये। भगवान कृष्ण ने अर्जुन को अपने इसी महा विराट रूप का दर्शन कराया था)। इसके बाद उस दायरे से ऊपर की सैर हुई। यह दायरा इस्ति-ग़नाई (निस्पृहता) का था। इस जगह रंग रंग की इस्तिगनाई जाती व सिफाती अल्लाह तआला की नज़र से गुज़री। इसके बाद इससे ऊपर के मुकाम की सैर हुई। मालूम हुआ कि यह रहमत (दया) का मुक़ाम है। इस पर सिर्फ जमाल ही जमाल (सौन्दर्य ही सौन्दर्य) का ज़हूर (प्रकटीकरण) है, जलाल (प्रताप, तेज) व इस्तिगनाई का नहीं। सबसे ऊँचे मुकाम की सैर हुई जिसके लिये खुदा का लाख लाख शुक्र है और जो वर्णन से परे है।

हजरत ने फरमाया कि एक रोज मैं अपने सत्संगी भाइयों की तरफ मुतवज्जेह था, उसी समय यह मालूम हुआ कि शैख ताहिर लाहौरी (रहम०) का नाम दफ्तर सादान (नेक लोगों की सूची) से खारिज करके दफ्तर अश्किया (निर्दय, कठोर हृदय वाले लोगों की सूची) में दाखिल कर दिया गया है। अतः उसी वक्त मैं शैख ताहिर (रहम०) को इस दुर्भाग्य से मुक्त करने के लिये बड़ी बेचैनी और दीनता के साथ अल्लाह तआला से दुआ करने में तल्लीन हो गया। इसी हालत में मुझे मालूम हुआ कि लौह महफूज में (भाग्य की तख्ती में) क़ज़ा (किसी अपराध के दंड का न्याय) अटल और अकाट्य है और वह किसी शर्त पर आधारित नहीं है। उस वक्त मैं पूर्णरूप से निराश हो गया। तत्काल उसी क्षण हजरत मुहीउद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी (रहम०) का कथन याद आया कि उन्होंने

एक मर्तबा फरमाया था कि "कज़ा मुब्रम (अवश्यंभावी न्याय) में तब्दीली करने का साहस एवं सामर्थ्य किसी में नहीं है, लेकिन मुझमें यह सामर्थ्य है। अगर मैं चाहूँ तो वहाँ भी तसर्रुफ कर सकता हूँ (अपनी आत्म-शक्ति से परिवर्तन कर सकता हूँ)।" इस कथन का स्मरण आते ही मैं पुनः अत्यन्त विनम्रता एवं व्यग्रता के साथ दुआ करने लगा और इस दुआ में मैंने अर्ज किया कि 'या खुदा, तूने अपने एक बन्दे को अपनी विशेष दया कृपा से फैज़याब किया है, अगर इस आजिज़ को भी इसी प्रकार मुमताज फरमाये (इसी प्रकार की विशेष सामर्थ्य प्रदान करे) तो तेरी असीम कृपा इस अकिंचन सेवन पर होगी।' अतः उसी वक्त ईश्वर की अहेतुकी दया से शेख ताहिर (रहम०) को उस बला से नजात (मुक्ति) हो गई। मगर उस वक्त मालूम हुआ कि एक किस्म की कजा (किसी अपराध के दंड का न्याय) है जो लौह महफूज में मुब्रम होती है (भाग्य की तख्ती में अटल और अकाट्य होती है अर्थात उस अपराध का दंड अपराधी को अवश्य ही भोगना पड़ता है) लेकिन ईश्वर के निकट वह स्वच्छन्द होती है और इसमें कुछ विशेष सन्तों और महात्माओं को दस्ते तसर्रुफ होता है (आत्मिक शक्ति द्वारा उस भाग्य रेखा में परिवर्तन करने की सामर्थ्य होती है)। और उक्त घटना इसी प्रकार की थी—

औलिया राहस्त कुदरते इज़ाला
तीर जुस्ता बाज़ गरदानद जेराह

(सन्तो को उस तीर के हटाने की ताकत है जो कमान से निकल चुका है। वे उस तीर का रास्ता मोड़ सकते हैं)।

कहा जाता है कि एक शख्स हजरत (रहम०) से तरीका कादरिया से मुरीद हुआ उसी समय हजरत (रहम०) के पास कोई मेहमान आया। उसने उस शख्स की सिफारिश करते हुये आपसे

अर्ज किया कि 'इसके पिता से मेरा प्रेम था। आपने इसको तरीका कादरिया में दाखिल किया है। आप कृपाकर हजरत गौसुल सकलैन (हजरत मुहीउद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी रहम०) से भी इसको मिला दीजिये। उसके थोड़ी देर बाद हजरत मकान से बाहर तशरीफ लाये और उस शख्स को, जिसे उन्होंने कादरिया सिलसिले में बैअत किया था (दीक्षित किया था), बुलाकर फरमाया कि कुतुबतारा (ध्रुवतारा) की तरफ देख। उसने जो देखा तो उस तारे में से एक शख्स काला कम्बल पहने हुये तीर की तरह उस जगह आ गये। हजरत ने फरमाया यही गौसुल सकलैन (रहम०) है। अतः उस शख्स ने हजरत गौसुल सकलैन (रहम०) के चरणों में गिरकर उनको दंडवत प्रणाम किया। उसके बाद हजरत गौसुल आजम (रहम०) वहाँ से बिदा हुये और उसी ध्रुवतारा में जाकर विलीन हो गये।

कहा जाता है कि एक शख्स हजरत की खिदमत में अभी हाजिर नहीं हुआ था। उसने आपकी सेवा में एक निवेदन पत्र लिख कर भेजा और उसमें यह निवेदन किया कि हजरत पैगम्बर (सल्ल०) के असहाब उनकी एक ही सोहबत औलिया (संतों) से अफजल (श्रेष्ठतर) हो जाते थे, उसकी क्या वजह थी ? क्या एक ही सोहबत में ऐसी हालत हो जाती थी कि औलिया के जमीअ हालात (सभी रूहानी हालतों) पर मुशर्रफ ले जाते थे (उनसे अधिक श्रेष्ठता व सम्मान प्राप्त करते थे)। हजरत (रहम०) ने जवाब में लिखा कि इस सवाल का जवाब सोहबत पर निर्भर करता है। अतः वह शख्स हजरत (रहम०) की खिदमत में हाजिर हुआ और पहली सुहबत में वह हालत पैदा हो गई कि बयान नहीं हो सकती। उसी रोज हजरत (रहम०) ने उसको बुलाकर फरमाया कि आज मैंने तेरे सवाल का जवाब दे दिया है। तेरी समझ में आ गया होगा। उसने हजरत (रहम०) के कदमों पर सर रख दिया।

कहा जाता है कि एक शख्स ने वसीयत की थी कि जब मेरा शरीरान्त हो जाये तो मेरी लाश को हजरत (रहम०) की खिदमत में ले जाना और अर्ज करना कि दाखिल तरीका फरमायें क्योंकि हजरत (रहम०) का तरीका था कि अमवात (मृतक लोगों) को भी अपनी रूहानी निस्बत से फैजयाब कर देते थे। जब उसका शरीरान्त हो गया, उसका लड़का उसके जनाजे को हजरत (रहम०) की खिदमत में लाया। आपने फरमाया कि कल्ह इन्शा अल्लाह (ईश्वर इच्छा से) मालूम हो जायेगा। दूसरे रोज उसके लड़के ने हल्के में (सत्संग) में देखा कि उसका बाप हजरत (रहम०) से एक आदमी के फासले पर बैठा हुआ सरगर्म जिक्र है (जप करने में तल्लीन है)।

एक शख्स वर्षों से बीमार चला आ रहा था। न कोई दवा फायदा करती थी, न दुआ। हजरत (रहम०) की शोहरत सुनकर उसने एक निवेदन-पत्र आपकी सेवा में भेजते हुये उनसे अपने स्वास्थ्य-लाभ के लिये दुआ करने तथा प्रसाद रूप में अपना कोई वस्त्र भेजने के लिये विनम्र निवेदन किया। हजरत ने उसके उत्तर में यह पत्र प्रसाद रूप में वस्त्र भेजते हुये लिखा :—

'ऐ मख्दूम ! कब तक मुहब्बत वाली माँ की तरह अपने ऊपर डर से काँपते रहोगे और कब तक गुस्सा और रंज से परेशान होते रहोगे। अपने को और सबको मरा हुआ समझना चाहिये और बेहरकत (गति हीन) पत्थर की तरह समझना चाहिये। 'इन्नका मईयतुन व इन्नहू मईयतुन' (तुम भी मर जाओगे और वह लोग भी मर जायेंगे।) यह खुली हुई दलील (हुक्म) है दिल की बीमारी के दूर करने की। इस थोड़ी सी उम्र में अल्लाह की याद करना सबसे अहम (महत्वपूर्ण) चीज है और बातिनी (आन्तरिक) बीमारियों का इलाज अल्लाह की याद कर लेने से बेहतरीन कोई दूसरा नहीं है। वह शख्स जो गैर के काबू में है वह अपने से कम की तरफ झुक

रहा है। नफ्से अम्मारा (मन की वह शक्ति जो बुरे कार्यों की ओर प्रवृत्त करती है) उससे बेहतर है। इसलिये तमाम लोग अपने दिल की सलामती चाहें और रूह (आत्मा) की आजादी तलाश करें। लेकिन कोताह हिम्मत (कम हिम्मत वाले) लोग रूह की गिरफ्तारी के असबाब (आत्मा के बन्धन के कारण और साधन) के हासिल (प्राप्त) करने की फिक्र में रहते हैं और उनका दिल अल्लाह से दूर हो गया है। अफसोस ! क्या किया जा सकता है। 'वमा जुल्म हुमुल्लाहो वलाकिन कानूँ अन फुसहुम यजलेमून' (अल्लाह ने उन पर जुल्म नहीं किया लेकिन उन लोगों ने अपने नफ्स पर खुद जुल्म किया है)।

दूसरी यह बात कि कमजोरी के आ जाने से परेशान न हो। अल्लाह ने चाहा तो आपको सेहत हो जायेगी (आप स्वस्थ हो जायेंगे।) मेरा दिल इस दुनिया से मुतमइन (निश्चित) है। जो आपने पैरहन (वस्त्र) माँगा था भेजा जा रहा है, उसको पहिनें और उसके नतीजों और फायदों के मुन्तजिर रहें (प्रतीक्षा करें)।

शेर—हरकस अफसाना बख्वानद अफसाना अस्त
व आँकि दीदश नक्द खुद मरदाना अस्त

(जिसने ईश्वर ज्ञान की किताबें कहानी की तरह पढ़ीं और उनको कार्यान्वित नहीं किया तो उसने बस एक कहानी पढ़ी और जिसने उन पुस्तकों की शिक्षानुसार अपने हृदय और आत्मा की सुरक्षा की और अल्लाह के नूर अर्थात प्रकाश से हृदय को प्रकाशित किया वही महात्मा है।)....।

जिस वक्त हजरत (रहम०) का खत और कपड़ा उस शख्स के पास पहुँचा और उसने उस कपड़े को पहिना, वह तत्काल स्वस्थ हो गया।

जहाँगीर बादशाह द्वारा हज़रत (रहम०) की गिरफ्तारी की घटना—

जब जहाँगीर के शासन काल में नूरजहाँ का प्रभाव बढ़ा। रफ्ज़

व रवाफिज़ (शियों के एक गिरोह) का बाहुल्य हुआ, हजरत ने उनके अकीदा (उनके भ्रान्त धारणाओं व विश्वासों) के विरुद्ध खतूत (पत्र) व रिसाले लिख-लिख कर जगह-जगह प्रकाशित कराये। अतः वह लोग इस बात से हजरत (रहम०) की जान व आबरू (इज्जत) के दुश्मन हो गये और एक रोज मौका पाकर हजरत (रहम०) का एक खत बादशाह के सामने पेश कर दिया और कहा कि शैख अहमद अपने को हज़रत अबूबक्र सिद्धीक (रजि़०) से अफजल (श्रेष्ठ) बतलाता है और अपना मुकाम उनके मुकाम से बरतर (उत्तम) कहता है। इस बात पर बादशाह बहुत नाराज़ हुआ और हजरत (रहम०) को बुलवा कर पूछताछ की।

हज़रत (रहम०) ने फरमाया कि जो शख्स हजरत अली मुर्तजा (रजि०) को हजरत अबूबक्र सिद्धीक़ (रजि०) से बेहतर समझता है वह दायरे अहले सुन्नत व जमात (इस्लामी धर्मशास्त्र को मानने वालों तथा अपने समुदाय) से खारिज (अलग) समझा जाता है। यह कैसे हो सकता है कि कोई अपने को हजरत सिद्धीक (रजि०) से अफजल समझे ? यद्यपि सूफियों का सिद्धान्त यह है कि जो शख्स अपने को सगे गर्गी से (ऐसा कुत्ता जिसे खुजली का रोग हो), जो इस संसार का सबसे घ्रणित जानवर है उससे बेहतर जाने, वह उस खुजली के रोग वाले कुत्तें से बदतर (बुरा) है। (इस कथन का आशय यह है कि सूफियों का यह सिद्धान्त है ईश्वर-भक्त को स्वयं को संसार का सबसे बदतर (बुरा) प्राणी समझना चाहिये। 'बुरा जो देखन मैं चला बुरा न दीखा कोय, जो दिल खोजा आपना मुझसे बुरा न कोय।)' और जिस 'इबारत से लोग यह समझे हैं वह सैर उरूज (ऊँची आध्यात्मिक स्थिति की अनुभूति) का हाल है जो प्रायः सूफियों को साधना की आरम्भिक दशा में अनुभव में आती है और वे पुनः अपने असली मुकाम पर आ जाते हैं। उदाहरण स्वरूप बादशाह के दरबार मे हर एक अमीर, वजीर व बादशाह तक

पहुँचने का रास्ता निर्धारित है। अगर बादशाह किसी शख्स को किसी काम से अपने पास ज़रा सी देर के लिये बुलाये और चुपके से कान में कोई बात करके उसको वापस कर दे, तो वह शख्स जो तमाम पदाधिकारियों की जगहों से होता हुआ वापस जायेगा, क्या उन पदाधिकारियों के रुत्बे (रौब) व दर्जा (पद) में उनके बराबर हो जायेगा। वही हाल इस उरूज बातिनी (आन्तरिक उत्थान) का है।

इसके अलावा इस मेरे खत में लिखा है कि मैंने अपने को इस मुकाम के अक्स (प्रतिबिम्ब) से रंगीन पाया। इसकी मिसाल ऐसी ही है कि कोई चीज सूर्य के प्रतिबिम्ब से प्रकाशित हो जाये तो यह नहीं कह सकते कि वह सूर्य हो गया। पृथ्वी प्रतिदिन सूर्य के प्रतिबिम्ब से प्रकाशित होती है, मगर यह नहीं कहा जाता कि पृथ्वी सूर्य हो गई। हजरत (रहम०) के इन माकूल जवाबात ने बादशाह की ऐसी तसल्ली कर दी कि उसका गुस्सा जाता रहा। खाफिज ने जब देखा कि उनकी चाल पूरी नहीं हुई बादशाह को हजरत (रहम०) से सिज्दा करने (बादशाह के सम्मान में सर झुकाने) की तरफ मुतवज्जह कर दिया, लेकिन हजरत ने सिज्दा नहीं किया और इस बात पर नाराज होकर उसने आपको ग्वालियर के किला में कैद कर दिया। इस घटना से आपके मुरीदों और शुभचितकों को अपार दुख हुआ। आपको कैद से छुड़ाने के लिये तमाम कोशिशें की गईं लेकिन कोई भी सफलता न मिली। इस जमाने में हजरत (रहम०) ने जो पत्र अपने मुरीदों और मित्रों को लिखे हैं वह अजब चाशनीदार हैं। अपने खलीफा मीर मुहम्मद नोमान (रहम०) को जो पत्र लिखे हैं उनके कुछ अंश नीचे दिये जा रहे हैं :—

'अल्लाह का शुक्र है और खुदा के इन बन्दों पर जिनको उसने चुन लिया है सलाम है। मीर मुहम्मद नोमान को मालूम हो कि

यह बात मुझे मालूम हुई है कि जितनी भी मेरे शुभ-चिंतक मित्रों ने मेरी रिहाई के लिये कोशिशें कीं मुफीद (लाभदायक) साबित नहीं हुई। जो अल्लाह करता है वही बेहतर है इस बात से इन्सानियत के तकाजे की वजह से (मानव-प्रकृति के कारण) सीना तंग होना शुरू हुआ (हृदय में संकीर्णता आनी शुरू हुई), परन्तु थोड़े समय बाद ही ईश्वर-कृपा से वह दुख और संकीर्णता खुशी में बदल गई और मुझे विश्वास हो गया कि अगर वह लोग जो मुझे कष्ट पहुँचाने के लिये प्रयत्नशील हैं अगर इनकी मुराद (इच्छा) ईश्वर इच्छा के अनुकूल है तो यह (मेरी कैद) ईश्वर ही की इच्छा है और रंज करना उचित नहीं है और मुहब्बत के दावे के खिलाफ है क्यों कि महबूब (प्यारा अर्थात् ईश्वर) का रंज देना नेमत देने (उपहार देने) की तरह मुझे महबूब (पसन्द) है। दोस्त जिस तरह की महबूब की नेमतों से लज्जत (आनन्द) पाता है उसके दुख देने में भी वही मजा पाता है बल्कि दुख सहने में मजा कुछ ज्यादा आता है।.....राहे मुहब्बत के दीवानों का मामला उल्टा ही है। पस उस शख्स की बुराई चाहने से उसको बुरा समझना मुहब्बते इलाही के खिलाफ है। वह आदमी (जो हमें कष्ट पहुँचा रहा है) फेले महबूब (ईश्वर के व्यवहार) का एक आइना है। वह लोग जो मुझे तकलीफ देने में आगे हैं मेरी नजर मे महबूब मालूम होते हैं।.....वह लोग जो हमें तकलीफ देने में लगे हैं, यह मेरे लिये बुरा नहीं, बल्कि मुझे चाहिये कि उनके फेल (व्यवहार) से लज्जत हासिल करूँ। अलबत्ता जब हमको दुआ करने के लिये कहा गया और खुदा को दुआ करना और गिड़गिड़ाना पसन्द है लिहाजा मुसीबत के रफा (दूर) होने की दुआ माँगे।..... शैख मुहीउद्दीन अरबी के इस कथन का मतलब समझें कि उन्होंने कहा है कि आरिफ (ब्रह्मज्ञानी) को कोई जुर्रत (हिम्मत) नहीं है यानी वह जुर्रत जिससे कि वह बला (बिपत्ति) के दूर होने का इरादा करे आरिफ से छीन ली गई है क्योंकि आरिफ जब मुसीबत को

अल्लाह की तरफ से समझेगा तो उसको महबूब की मुराद समझेगा, अतः उसको दफा (दूर) करने की कैसे हिम्मत कर सकता है। अगर बला के दफा करने के लिये ज़बान हिलाये (दुआ करे) तो अल्लाह के इस हुक्म की इताअत (आज्ञा-पालन) होगी कि उसने दुआ करने का हुक्म दिया है लेकिन दर हकीकत (यथार्थ में) वह कुछ नहीं माँगता है और जो कुछ उसको मुसीबत पहुँचती है उससे लज्जत पाता है।

"खुदा के हम्द और हबीब की सना (तारीफ) के बाद तुम पर यह बात पोशीदा न रहे कि जब तक कि मुझ पर अल्लाह की इनायत (कृपा) से गजबे इलाही (ईश्वरीय प्रकोप) जाहिर नहीं हुआ और मैं कैद में नहीं आया, उस वक्त तक मैने शुहूद (ईश्वर-साक्षात्कार) की तंग गलियों से नजात नहीं पाई और ख्याल और मिसाल (आदर्श, नजीर) के साये की गलियों से पूर्ण तौर से नहीं निकला और ईमान की शाह राह (राज-पथ) पर नाराजगी के आलम में आजादी से नाज की चाल (गर्व के साथ) नहीं चला और हाजिर से गायब की तरफ (व्यक्त से अव्यक्त की तरफ) और ऐन बाइल्म (यथार्थ ज्ञान सहित) शुहूद (ईश्वर साक्षात्कार) की हालत से पूर्ण तौर से कमाल के दर्जे से नहीं मिला (पूर्णता की स्थिति नहीं प्राप्त हुई) और अपने हुनर को ऐब और दूसरे के ऐबों को हुनर समझने में अपने कामिल जौक (आनन्द) की वजह से कोई रुकावट नहीं पाई और मीठे-मीठे शरबत बगैर तंगी (कमी) के मजेदार (स्वादिष्ट) मुरब्बों को खाकर रुसवाई (निंदा, अपयश) को नहीं चक्खा और लोगों के मलामत (भर्त्सना) और एतराज करने से मैने कोई लज्जत (आनन्द) नहीं पाई और जुल्म के हुस्न और लोगों की बलाओं से महफ़ूज (सुरक्षित) नहीं रहा और कामिल होने के मरतबे को पाने के लिये (अध्यात्म में पूर्णता की स्थिति प्राप्त करने के लिये) अपने इरादा (संकल्प) और अख्ति-

यार (कर्त्तापन के भाव) को तर्क नहीं किया (नहीं त्यागा) और ख्वाहिशे दुनिया (सांसारिक कामनाएँ) और ख्वाहिशे नफ्स (मन की इच्छाओं) को पूरी तरह से नहीं तोड़ा और अल्लाह के सामने दुआ करना, गिड़गिड़ाना, आजजी करना (दीनता प्रकट करना), अपने को ज़लील (अधम) समझने का मरतबा नहीं पाया और खुदा की बुलन्द मन्जिलत (उच्च पद) इस्तिगना (निस्पृहता) के दर्जे को जो बुजुर्गी और अल्लाह की बड़ाई से घिरी है उसका मैंने मुशाहिदा नहीं किया (देखा नहीं) और अपने को जलील (अधम), बेइतबार (अविश्वासनीय), बेहुनर, मुहताज और फकीर (भिक्षुक) नहीं यकीन किया। मै अपने नफ्स को पाक (पवित्र) तहीं समझता क्योंकि नफ्स बुरी बातों का हुक्म देता है, लेकिन जिस बन्दे पर अल्लाह रहम करे (लेकिन जिस पर ईश्वर की कृपा होती है वह मन के कुप्रभाव से बच जाता है)। बेशक वह (ईश्वर) बड़ा बख्शने वाला (क्षमाशील) और रहम (दया) करने वाला है। अगर अल्लाह की मेहरबानी और करम (कृपा) और पै दर पै (पग-पग) की नेमतें इस दुनिया में मुझ जलील पर आती न रहतीं तो करीब था कि नाउम्मीदी (निराशा) की मंजिल आ जाये और उम्मीद का रिश्ता टूट जाये। उस अल्लाह का शुक्र है जिसने मुझको बला से महफूज (सुरक्षित) रक्खा और जुल्म के वक्त मेरी इज्जत बरक़रार रक्खी और मुसीबत के आलम में मुझ पर एहसान किया और रंज और खुशी में शुक्र अदा करने की मुझे तौफीक दी और पैगम्बरों की इत्तिबा (अनुकरण) करने वालों में और औलिया (संतों) के निशाने कदम (पद-चिह्नों) पर चलने वालों में और उलमा (ज्ञानियों) और नेक लोगों के दोस्तों में मुझको बनाया। दुरूद और सलाम हो तमाम पैगम्बरों पर और पैगम्बरों की तसदीक करने वालों पर।

हजरत (रहम०) की एक लम्बी अवधि कैद में गुजर गई।

और अल्लाह तआला को वहाँ जिस-जिस को फायदा बातिनी पहुँचना था पहुँच गया और खुद हज़रत को बवजह इन मसाइब के (इन विपत्तियों के कारण) जो तरक्की होनी थी हो चुकी। बादशाह अपने किर्दार (आचरण) से लज्जित हुआ और हज़रत (रहम०) को बड़े सम्मान के साथ बुलवाकर अपनी गलती के लिये क्षमा याचना की। हज़रत ने कैद की अवधि में कभी भी बादशाह के लिये दुआए-बद (उसका अहित होने के लिये दुआ) नहीं की बल्कि उनके शिष्यों में अगर कोई बादशाह को नुकसान पहुँचाने के लिये मुतवज्जेह होता तो उसको स्वप्न में अथवा जागृत अवस्था में मना कर देते और फरमाते कि अगर बादशाह मुझको कैद न करता, यहाँ के लोगों को किस तरह फायदा पहुँचाता। इसके बाद हजरत (रहम०) कई साल तक बादशाह के हुक्म से शाही फौज के साथ रहे और इस अपनी बेअख्तियारी (असमर्थता), नाकामी व नामुरादी (मनोरथ में असफलता) का निहायत जौक व लुत्फ उठाते रहे।

शाही फौज के साथ हजरत (रहम०) अजमेर शरीफ में तशरीफ रखते थे कि उन्हें अपने शरीरान्त का समय निकट मालूम हुआ। अपने सुपुत्रों को खत लिखकर बुलवाया और इर्शाद फरमाया कि मेरा इस दुनिया से कोई ताल्लुक नहीं रहा। अपने सुपुत्र हजरत ख्वाजा मुहम्मद मासूय (रहम०) से फरमाया कि मनसब क़य्यूमत (कय्यूमत की पदवी, जिसका वर्णन पहिले किया जा चुका है) तुमको अता हो (प्रदान की जाये) और अशिया (दुनिया की चीजें व लोग) तुम्हारी क़य्यूमत पर बनिस्बत मेरे ज्यादा राजी हैं। हजरत ख्वाजा मुहम्मद मासूम (रहम०) इस महान सम्मान जनक एवं प्रतिष्ठित पदवी के प्राप्त होने पर भी ज़ार ज़ार रोने लगे। हजरत ख्वाजा मुहम्मद मासूम (रहम०) की इस कदर बेक़रारी (व्याकुलता) देखकर हज़रत (रहम०) ने फरमाया कि अभी थोड़ी

मुद्दत (अवधि) के लिये मुझको छोड़ दिया गया है। इस अवधि में अशिया का क़याम (निर्भरता) तुम पर है और तुम्हारा कयाम मुझ पर है। अब हज़रत की इच्छा हुई कि बाकी उम्र बिल्कुल गोशा तनहाई (एकान्तवास) में गुज़ारें। अतः आपको शाही फौज से मुक्त कर दिया गया। आपने मकान पर आकर एकान्तवास ग्रहण किया। वहाँ सिवा आपके सुपुत्रों तथा एक दो सेवकों के कोई नहीं पहुँच सकता था। हजरत सिवा जुमा (शुक्रवार) व जमात के बाहर तशरीफ न लाते थे। और कारबार इर्शाद (उपदेश देने का कार्य) हजरत ख्वाजा मुहम्मद मासूम (रहम०) के सुपुर्द कर दिया। जो शख्स बैअत होने (दीक्षा लेने के लिये) आता उसको उन्हीं के पास भेज देते।

बारहवीं मुहर्रम को हजरत ने अपने मुरीदों के बीच फरमाया कि मुझको आगाह किया है कि चालीस पचास दिनों के बीच इस दुनिया से तुमको जाना होगा और कब्र की जगह भी दिखलाई है। इसलिये इसके बाद हर रोज दिन गिने जाया करते थे, यहाँ तक कि बाइस सफर (इस्लामी दूसरा महीना) को फरमाया कि इस मियाद (अवधि) के चालीस दिन गुजर गये (व्यतीत हो गये)। अब देखिये इस पाँच सात दिनों में क्या होता है और यह भी फरमाया कि इन अईयाम (इन दिनों) में जो कमाल कि नौअ बशर (मानव जाति, इन्सान) को सिवा नबूवत (हजरत मुहम्मद सल्ल० के सिवा) हासिल होने मुमकिन थे वह मुझको अल्लाह तआला ने बतुफैल अपने हबीब (हजरत मुहम्मद सल्ल०) के अता फरमाये (प्रदान किये)। और अब हजरत पर मर्ज का गलबा शुरू हुआ और कमजोरी बढ़ती गई। इस मर्ज व कमजोरी की हालत में नमाज तहज्जुद, फ़रायज़ बजमात, जिक्र व मराकबा वगैरह बदस्तूर जारी था और किसी बात में फर्क न आया।

कहा जाता है कि जिस रात की सुबह को आपका शरीरान्त

हुआ उस रात को तहज्जुद की नमाज के वास्ते उठे और वुजू करके नमाज पढ़ी और फरमाया कि यह आखिरी तहज्जुद है। सुबह को इश्राक (सूर्योदय के पश्चात् के समय) के बाद बोल (पेशाब करने) के वास्ते तसला मँगवाया लेकिन उसमें रेत न थी। आपने फरमाया कि रेत लाओ कि बिला रेत छींटे उड़ने का अन्देशा है और उसी तरह बिला पेशाब किये आपने फरमाया कि लिटा दो। शायद हजरत को मालूम हो गया होगा कि अब वुजू की मुहलत नहीं है। अतः दाहिना हाथ दाहिने गाल के नीचे रखकर दाहिने करवट से आप लेट गये और जिक्र (जप) में तल्लीन हो गये। सूए तनफ्फुस शुरू हो गया (साँस उखड़ गई)। आपके सुपुत्रों ने दरियाफ्त किया कि अब क्या हाल है। आपने फरमाया कि जो दो रक़अत नमाज पढ़ी हैं वही काफी हैं। इसके बाद कोई कलाम न फरमाया और इस्मजात (नाम जप) में मशगूल रहे और एक लमहा (क्षण) के बाद पार्थिव शरीर त्याग दिया।

आपका शरीरान्त बतारीख २७ सफर उल मुजफ्फर १०३४ हिजरी बमुकाम सरहिन्द हुआ। नमाज जनाजा आपके दूसरे सुपुत्र ख्वाजा मुहम्मद सईद (रहम०) ने पढ़ाई और हजरत (रहम०) के बड़े सुपुत्र हजरत ख्वाजा मुहम्मद सादिक (रहम०) के महाज में (उनकी कब्र के सामने), जिनका शरीरान्त हजरत के जीवन काल में हो चुका था दफन किया गया। एक दफा हजरत ने इस जगह पर दफन होने के लिये इशारा फरमाया था।

हजरत (रहम०) के पत्रों के कुछ उद्धरण

हजरत (रहम०) के सभी पत्रों को तीन जिल्दो (भागों) में प्रकाशित किया गया है। (इन तीनों ग्रन्थों का उर्दू अनुवाद दो स्थानों से प्राप्त हो सकता है (१) मकतबा निशात सानियाँ, मुअज्जम जाही मार्केट, हैदराबाद–१ (आन्ध्र प्रदेश)। (२) नाशिरउल जन्नतहा

उल इल्मिया, चंचलगोड़ा, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।) और उनके कई महत्वपूर्ण लेखों का संकलन भी कुछ पुस्तिकाओं के रूप में हुआ है। यह सभी पत्र व लेख इस सिलसिले के सालिकान (साधकों) के लिये बहुत ही उपयोगी हैं क्योंकि इनमें अध्यात्म के बड़े ही गूढ़ विषयों की सविस्तार व्याख्या की गई है। यहाँ पर केवल तबर्रुकन (प्रसाद रूप में) कुछ उद्धरण दिये जा रहे हैं:—

"जब किसी शैख (सतगुरु) के सामने कोई तालिबे इल्म (जिज्ञासु) आये तो शैख को चाहिये कि तीन इस्तिखारों से सात इस्तखारों तक का अमल करे (किसी कार्य में किसी आध्यात्मिक साधना द्वारा यह पता लगाना कि इसमें ईश्वर इच्छा से सफलता मिलेगी या नहीं 'इस्तिखारा' कहलाता है)। किसी कामिल शैख के दिल का मुतवज्जेह हो जाना (आकृष्ट हो जाना) भी इस्तिखारा की तरह है और अगर इस्तिखारा भी कर लें तो बहुत बेहतर है। पहिले तालिब (जिज्ञासु) को तौबा करने का तरीका सिखायें और तौबा कराने में इख्तिसार से काम ले (जिज्ञासु को तौबा करने का संक्षिप्त ढंग बताये) और उसकी तफ्सील (विस्तृत ढंग) कुछ ज़माना (अवधि) व्यतीत हो जाने पर उसको बताये क्योंकि आज-के जमाने में हिम्मतें छोटी हैं। अगर शुरू में तौबा की तफ्सील चाही जायेगी तो लामहाला (अन्ततोगत्वा) उसके हासिल में देर लग जायेगी और हो सकता है कि इस लम्बी अवधि में उसकी तलब (अध्यात्म सीखने की जिज्ञासा) में किसी तरह सुस्ती आ जाये और वह तलब करना छोड़ दे, बल्कि तौबा ही न करे। इसके बाद ऐसे तरीके से जो तालिब की काब्लियत (क्षमता, पात्रता) के मुआफिक (अनुकूल) हो उसको तालीम दे और उसकी पात्रता और क्षमता को ध्यान में रखते हुये उसको सिखायें और उस पर विशेष ध्यान रक्खे और उस पर दया करे और इस सहूलियत के रास्ते के तरीके व आदाब (शिष्टाचार) व शरायत (शर्तें) उससे

बयान करे और उसको आमादा (तत्पर) करे कि वह कुरआन शरीफ व सुन्नते रसूल और गुजरे हुये नेक लोगों के पदचिह्नों पर चले और बिना फरमाबरदारी (अनुकरण, आज्ञा पालन) के अपने लक्ष्य का प्राप्त होना असम्भव समझे और उसको यह भी बता दे कि वह हालात (दशाएँ) जो किताब (कुरआन शरीफ) व सुन्नत के विरुद्ध होते हैं उन पर विश्वास न करे और अल्लाह से अपने पापों की क्षमा याचना करे और अहले सुन्नत की राय के मुताबिक अपने अकीदों (विश्वासों) के सही होने की कोशिश करे (वह लोग जो उन कार्यों और आचरणों का अनुकरण करते हैं, जो हजरत मुहम्मद सल्ल० द्वारा किये गये हों, अहले सुन्नत कहलाते हैं)। और फिर उसको (जिज्ञासु साधक) को अहकाम (इस सिलसिले की साधना पद्धति से सम्बन्धित बातें) सिखाने में तल्लीन हो जाये।

"जरूरी अहकामे इलाही के मालूम करने और उस पर अमल करने के लिये तालिब को सचेत करे, क्योंकि इस रास्ते में इन दोनों बाजुओं (हाथों) के (यानी पहला ईश्वर के आवश्यक आदेशों का जानना और दूसरा उस पर अमल करना इन दोनों के बिना) परवाज़ करना (उड़ना अर्थात् प्रगति करना) नामुमकिन है। और तालिब को इस बात के लिये भी सचेत करे कि हराम की चीजों में और शक की चीजों में एहतियात रक्खे और जैसा भी उसका दिल चाहे न खाये और जहाँ से भी पाये उसको मुँह में न रखले जब तक कि रोशन शरीअत का फत्वा उसको जायज न करे (जब तक कि धर्म शास्त्र द्वारा निर्धारित नियमों द्वारा वह भोजन ग्रहण करना उचित न ठहराया गया हो)। संक्षेप यह है कि इन तमाम मामलों में 'मा आता कुमर्रसूलो फा खुजहो वमा नहाकुम अनहो फनतहू' (जो तुमको रसूल ने तालीम दी है उसी पर चलो और जिससे रोक दिया है उससे बाज रहो अर्थात बचो) इसी पर चले।

"तालिबों का हाल दो तरह से खाली नहीं है। या तो वह मारिफत वाले हैं (ब्रह्म-ज्ञानी) है या जाहिल (अज्ञानी) और (असमंजस) में रहने वाले हैं। लेकिन जब यह दोनों ही प्रकार के लोग इल्म (आत्म-ज्ञान) की मंजिलें तय कर लेंगे और उनके सामने से पर्दे हट जायेंगे तो यह दोनों गिरोह अल्लाह तक पहुँच जायेंगे और अल्लाह तक पहुँचने में एक को दूसरे पर कोई बड़ाई नहीं है जिस तरह कि दो आदमी कोसों की मंजिलें तय करके काबा शरीफ तक पहुँचते हैं। उनमें से एक तो रास्तो को देखता हुआ और हर मंजिल की विस्तृत जानकारी अपनी योग्यता और क्षमता के अनुसार करता हुआ काबा शरीफ पहुँचा और दूसरा रास्ते के तमाशों से आँखें बन्द करके मंजिलों की जानकारी किये बिना काबा शरीफ पहुँचा। तो दोनों आदमी काबा शरीफ तक पहुँचने की इज्जत में बराबर हैं। एक को दूसरे पर कोई बुजर्गी (बड़ाई, श्रेष्ठता) नहीं है। जानना चाहिये कि तासीर (प्रभाव, असर) का कम होना काब्लियत (पात्रता, योग्यता) के कम होने की निशानी नहीं है। एक गिरोह जो अच्छी काब्लियत रखने वाला होता है इस मुसीबत में फँस जाता है। (इस कथन का भावार्थ यह है कि वह लोग जो सुपात्र होते हैं अर्थात जो साधना के क्षेत्र में उन्नतशील होते हैं प्रायः अपनी साधना के अभ्यास और तपस्या का अहंकार होने के कारण उस साधना के वांछित प्रभाव से वंचित रह जाते हैं)।

"तुम जान लो कि आदाबे सुहबत (सतगुरु के सत्संग से सम्बन्धित शिष्टाचार) का लिहाज और शरायत (शर्तों) का ख्याल करना इस राह की जरूरी चीजों में है और इसी तरीके से सीखने और सिखाने का रास्ता खुलता है और इसके बगैर पीर के साथ रहने से और साथ बैठने से कोई फायदा न होगा। जरूरी शरायत या आदान में से कुछ बयान किये जा रहे हैं। ध्यान से सुनना चाहिये :—

तुम जान लो कि तालिब को चाहिये कि अपना दिल तमाम तरफ से मोड़कर अपने पीर की तरफ मुतवज्जेह (आकृष्ट) रक्खे कि बगैर उसकी इजाजत के सुन्नती नमाजें और जिक्र खुदा में न मशगूल हो और उसकी मौजूदगी में किसी और तरफ मुतवज्जेह न हो और पूरे तौर से पीर ही की तरफ मुतवज्जेह होकर बैठे। यहाँ तक कि जिक्र इलाही में भी मशगूल न हो मगर यह कि (केवल जब कि) वह (पीर) हुक्म दे (जिक्र करने का)। और वाजिब फर्ज़ नमाज के अलावा सुन्नती नमाजें उसके सामने अदा न करे। लोग किस्सा बयान करते है कि उस वक्त के बादशाह जिसके सामने उसका वजीर (मंत्री) खड़ा हुआ था वजीर ने अपने कपड़े की तरफ ध्यान दिया और उसका बन्द अपने हाथ से ठीक करने लगा। उस वक्त सुल्तान की नजर वजीर पर पड़ गई कि वह दूसरी तरफ मुतवज्जेह है। उसने नाराज़ होकर कहा कि मैं यह बात तेरी बरदाश्त नहीं कर सकता कि तू मेरा वजीर हो और मेरे सामने अपने कपड़े को दुरुस्त करे। इस बात को सोचना चाहिये कि जब दुनिया के जरिओं (साधनों) में अदब से रहना ज़रूरी है तो अल्लाह तक पहुँचने के ज़रिओं में इन आदाब का लिहाज़ रखना और भी ज्यादा जरूरी है। जहाँ तक हो सके ऐसी जगह पर न खड़ा हो कि अपनी परछाहीं उसके कपड़े पर या उसकी परछाहीं पर पड़े और उसके मुसल्ले (नमाज पढ़ने के कपड़े) पर पैर न रक्खे और उसके वुज़ू करने की जगह पर वुज़ू न करे और उसके सामने न खाये, न पिये और किसी से बात न करे बल्कि किसी की तरफ मुतवज्जेह न हो और जब पीर मौजूद न हो तो उसके बैठने की जगह की तरफ अपने पैर न फैलाये और उधर थूके नहीं। और जो भी पीर बात करे या कहे उसको दुरुस्त (ठीक) समझे, यद्यपि जाहिर में ठीक न हो। पीर जो कुछ करता है वह इलहाम (ईश्वरीय प्रेरणा) से करता है और अल्लाह की इजाजत से करता है। इस लिहाज से उस पर

एतराज़ (आपत्ति) करना सही नहीं है। यद्यपि बाज़ सूरतों में उसके इलहाम में गलती हो सकती है, फिर भी एतराज न करे क्योंकि इलहामी गलती इज्तिहादी गलती के बराबर है (जहाँ कुरआन और हदीस का आदेश स्पष्ट न हो, वहां अपनी राय से कोई निर्णय लेना 'इज्तिहाद' कहलाता है) मुज्तहिद (धार्मिक मामलों में राय जाहिर करने वाले) की गलती पर एतराज करना दुरुस्त नहीं है। और यह भी है कि जब उसके दिल में पीर की मुहब्बत पैदा हो चुकी है तो महबूब (सतगुरु) से जो बात सादिर हो (निकले) उसको पसन्द करे। लिहाजा एतराज की कोई गुंजाइश नहीं है। छोटे बड़े सभी मामलों में पीर की तकलीद (अनुसरण) करे चाहे खाने में हो, लिबास पहिनने में हो या सोने में। और उसी की तरह नमाज पढ़ना चाहिये और उसी के अमल से खुदा का हुक्म समझना चाहिये।

शेर :—आँरा कि दर सराये निगारस्त फारिग अस्त
अज बोस्ताँ व तमाशाए लालजार

(जिस शख्स की सराय में महबूब स्वयं बैठा है, उसका दिल बाग और लालजार के फूलों की सैर करने की आकांक्षा नहीं रखता)

और उसकी हरकतों पर किसी तरह का कोई एतराज (आपत्ति) न करे, चाहे वह एतराज राई के दाने के बराबर हो, क्योंकि एतराज करने से बदबख्ती (अभागापन) पाने के अलावा कोई हासिल (प्राप्ति) नहीं है और तमाम लोगों में सबसे ज्यादा बुरा इस गिरोह के ऐबों का ढूँढ़ने वाला है। खुदा हमको इस बला से नजात (छुटकारा) दे। और अपने पीर से करामात और मोजिजे (आध्यात्मिक चमत्कार) का सवाल न करे (इनको दिखाने के लिये आग्रह न करे), अगर वह सवाल उसके दिल में

वसवसे (दुर्विचारों) की वजह से पैदा हुआ हो। क्या तुमने कभी सुना है कि किसी मोमिन (मुसलमान) ने पैगम्बर (सल्ल०) से मोजजे (चमत्कार) का सवाल किया है। मोजज़ा तलब करने वाले वह लोग होते हैं जो खुदा का इन्कार करते हैं :—

शेर—मोजिजात अज बहरे क़हरे दुश्मनस्त,
बुए जिन्सियत पये दिल बुर्दनस्त।
मूजिबे ईमाँ न बाशद मोजिज़ात,
बुए जिन्सियत कुनद जज्बे सिफ़ात।

[दुश्मन को परास्त करने के लिये मोजिजे (चमत्कार) जाहिर किये जाते हैं परन्तु यह तो दिल को ईश्वर की ओर से विमुख करके सांसारिक कामनाओं की ओर ले जाना है। करामतें (चमत्कार) ईमान का सबब (कारण) नहीं होतीं। सांसारिक कामनाओं की ओर उन्मुखता आध्यात्मिक सतगुणों तथा विशेषताओं का शोषण कर लेती है अर्थात् उन्हें नष्ट कर देती है।]

अगर कभी शुबहा (सन्देह) पैदा हो तो उनके सामने अर्ज करे और अगर शक दूर न हो तो अपनी अज्ञानता समझे और पीर से पोशीदा (गुप्त) न रक्खे और पीर से ख्वाब की ताबीर (स्वप्न-फल) दरियाफ्त करे और जो ताबीर तालिब (जिज्ञासु) के दिल में पैदा हुई हो उसको भी पीर से बयान करे। और दुरुस्ती और नादुरुस्ती (उसके सही व गलत होने) का निर्णय पीर से कराये और अपनी अक्ल पर कभी एतबार (विश्वास) न करे क्योंकि दुनिया में हक और बातिल (सत्य और असत्य) मिले हुये हैं और गलती और दुरुस्ती (ठीक होना) एक साथ मिले हैं। और बगैर उस पीर की इजाजत के बिला जरूरत उसकी मुरीदी (शिष्यता) से अलग न हो कि उसके मुकाबिल में (उसके सामने) दूसरे को पसन्द करना मुरीदी के खिलाफ है। और अपनी आवाज भी पीर

पर बुलन्द न करे और जोर से उससे बात न करे, यह सिड़ीपन है। और जो फैज़ व कुशाइश (प्रगति) हासिल हो उसको पीर का दिया हुआ सदक़ा (दान) समझे और अगर ख्वाब में देखे कि किसी दूसरे पीर से कोई फैज़ पहुँचा है उसको भी अपने पीर से समझे और यह जान ले कि जब पीर तमाम कमालात और फैजों (विशेषताओं और कृपाओं) का जामे (संग्रह करने वाला) है तो यह खास फैज़ भी उसी पीर की तरफ से है। यह उसी पीर का कमाल है कि फैज़ उसी की तरफ से हुआ है और मुरीद को पहुँचा है और यह एक ऐसा लतीफ़ा (अद्भुत व अनोखी बात) है कि पीर उस फैज़ से मुनासबत (सम्बन्ध, लगाव) रखता है और उस दूसरे पीर की सूरत में जाहिर हुआ है। अपने मुरीदों का इम्तहान लेने की गरज से उसको दूसरे पीर की सूरत में दिखाया है और दूसरे पीर से उस फैज को समझ लेना बहुत बड़ी गलती है। खुदा इस गलती से बचाये और पैगम्बर और उनकी औलाद के तसद्दुक (अनुकम्पा, मेहरबानी) में पीर की मुहब्बत पर साबित कदम रक्खे। सारांश यह है कि अदब का तरीका अख्तियार करे। यह कहावत प्रसिद्ध है कि कोई बेअदब खुदा तक नहीं पहुँचता और अगर आदाब (चिष्टाचारों) के लिहाज करने में मुरीद अपने को आजिज़ (बेबस) समझे और आदाब पूरे तौर से न अदा करे और कोशिश करने पर भी आदाब व शरायत न बजा ला पाये तो काबिले मुआफी है (क्षमा करने योग्य है), लेकिन अपनी कोताही (कमी, गलती) का इकरार (स्वीकार) करना जरूरी है। खुदा की पनाह (ईश्वर उसकी रक्षा करे), अगर वह आदाब का भी लिहाज न करे और अपने को कोताही करने वाला न समझे तो इन बुजुर्गों की बरकतों से महरूम (वंचित) हो जायेगा।

हर किरा रूये ब बहबूद न दाश्त
दीदने रूये नबी सूद न दाश्त

(जिसके दिल का झुकाव भलाई की तरफ नहीं है, तो पैगम्बर के दर्शन से उसको कुछ फायदा नहीं होता।)

"तुम यह जान लो कि लोगों ने कहा है कि शैख (सतगुरु) जिन्दा भी करता है और मारता भी है। जिन्दा करना और मारना शैखी के मरतबे (पद) के लवाजिम (आवश्यक कामों) में है। जिन्दा करने से मुराद (आशय) रूह (आत्मा) का जिन्दा करना है, जिस्म का जिन्दा करना मक़सूद (लक्ष्य) नहीं है। इसी तरह मारने का मतलब रूह का मुर्दा कर देना है न कि जिस्म का मुर्दा करना और जिन्दगी और मौत से वह फना और बका की मन्जिल मुराद है जो इन्सान को विलायत और कमाल के मरतबे तक पहुँचाता है और पीर अल्लाह के हुक्म से इन दोनों बातों का जिम्मेदार होता है। पस शैख को इस तरह की जिन्दगी और मौत देना जरूरी है। जिन्दा करने और मारने से मतलब बक़ा और फ़ना देना है। जिस्मानी (शारीरिक) जिन्दगी और मौत देने से शैख का कोई सम्बन्ध नहीं है। पीर कहरुबा की तरह है (कहरुबा एक प्रकार का पत्थर होता है, जो घास के तिनकों को अपनी ओर खींच लेता है)। जो आदमी उससे मुनासिबत (लगाव) रक्खे, वह तिनकों की तरह उसके पीछे चलता है और अपना पूरा पूरा हिस्सा पीर से पा लेता है। करामतें (चमत्कार) मुरीदों को अपनी तरफ खींचकर लाने के लिये नहीं होतीं। मुरीद एक बातिनी मुनासिबत (आत्मिक लगाव) की वजह से पीर की तरफ खिंचता है और जो शख्स इन पीरों से कोई मुनासिबत नहीं रखता, उनके कमालों (विशेषताओं) से महरूम (वंचित) रहता है, चाहे वह इन पीरों के हाँथों पर हजारों करामतें (चमत्कार) क्यों न देखे। अबू जहल और अबू लहब को इस मतलब का गवाह समझना चाहिये। अल्लाह तआला ने कुरआन शरीफ में उनके विषय में फरमाया है कि अगर यह लोग बहुत से मोजिजे (चमत्कार) भी

देख लें तब भी तुम पर (हजरत मुहम्मद सल्ल० पर) ईमान न लायेंगे और जब तुम्हारे पास आयेंगे तुमसे झगड़ा करेंगे और यह कहेंगे कि यह सब पुरानी बातें हैं।"

".....औलिया अल्लाह (संतजन) भी चूँकि इन्सान होते हैं, तो जिन चीजों के आम लोग (सर्वसाधारण) मोहताज होते हैं, यह लोग भी इन चीजों के मोहताज होते हैं। विलायत (वली अर्थात् संत का पद) हासिल कर लेने की वजह से मोहताज होने से छुटकारा नहीं पा सकते। आम लोगों की तरह इनको भी गुस्सा आता है। जब कि पैगम्बर फरमाते हैं कि जिस तरह इन्सान को गुस्सा आता है उसी तरह मुझको भी गुस्सा आता है, तो औलिया (सन्तजन) कैसे गुस्से से बच सकते हैं। इसी तरह यह औलिया खाने-पीने, बच्चों के साथ रहने और उनसे मुहब्बत करने में दूसरे लोगों की तरह हैं। वह विभिन्न प्रकार के ताल्लुकात (लगाव) जो इन्सानी जिन्दगी की आवश्यकताओं में हैं, आम व खास दोनों लोगों से अलग नहीं हो सकते। खुदा ने फरमाया है कि 'हमने उनका ऐसा जिस्म नहीं बनाया है कि वह खाना न खायें' और जाहिर (बाह्यरूप) के देखने वाले पैगम्बर का इन्कार करते थे। वह कहते थे कि यह पैगम्बर कैसा है कि खाना भी खाता है और बाजारों में चलता है। पस जिसकी नजर अल्लाह वालों के जाहिर पर पड़ी वह महरूम (वंचित) रह गया और दुनिया और आखिरत (लोक-परलोक) का नुकसान उसके हिस्से में आ गया। इसी जाहिर (बाह्यरूप) की तरफ देखने की वजह से अबू जहल और अबू लहब इस्लाम से महरूम रह गये और हमेशा के नुकसान में मुब्तला (ग्रस्त) हो गये। सौभाग्यशाली वह है जिसकी नज़र की तेजी इनकी बातिनी सिफ़ात (आत्मिक गुणों) तक पहुँच जाये और वह बातिनी ही पर रहे।

".....यह भी हम फकीरों के लिये लाजिम है हमेशा अपने

को कमतर (छोटा) समझना और गिड़गिड़ाना और आज़जी करना और अल्लाह की बन्दगी के फरायज़ (कर्त्तव्य) अदा करना और शरई (धर्म शास्त्र द्वारा निर्देशित) बातों की हिफाजत करना और सुन्नते रसूल की पैरवी करना और नेकी करने में नियत दुरुस्त रखना और बातिन को खालिस (शुद्ध) रखना और अपने ऐबों को देखने के वक्त और गुनाह में मुब्तला होते वक्त अल्लाह की सज़ा से डरना और अपनी नेकियों को चाहे ज्यादा हों कम समझना, शोहरत (यश) से डरना और काँपते रहना और ख़ल्क (संसार) के नजदीक मक्बूल (सर्वप्रिय) होना। आँ हजरत सल्ल० ने फरमाया है कि यह इन्सान की बुराई है कि उसकी तरफ किसी दीन या दुनिया के मामले में अंगुश्तनुमाई (आलोचना) की जाये, मगर जिसको अल्लाह इस बुराई से बचा दे। और अपनी नेकियों को चाहे वह बिल्कुल साफ और जाहिर हों कम समझना और अपने अहवाल (आध्यात्मिक स्थितियों) को और अपनी तहकीकात (आध्यात्मिक बातों की जानकारी) पर चाहे वह सही भी हों उन पर भरोसा नहीं करना चाहिये। केवल दीन की मदद करना और मज़हब को फैलाना और लोगों को हक़ की दावत देने (ईश्वर की ओर उन्मुख करने) को भी कम नेकी समझना चाहिये क्योंकि यह काम बदकार (बुरे) लोग भी करते हैं। आँ हजरत (सल्ल०) ने फरमाया है कि अल्लाह इस दीन (धर्म) की मदद एक मर्द बदकार के हाथों करेगा।

"जो मुरीद तलब व इर्शाद के लिये (सतगुरु से अध्यात्म की शिक्षा और उपदेश प्राप्त करने लिये) हाजिर हो उसको शेर बबर समझना चाहिये और डरना चाहिये कि कहीं ऐसा न हो कि इस तरह वह बर्बाद हो जाये और खुदा के अजाब (प्रकोप) के करीब हो जाये। जितना मुरीद के आने से खुशी महसूस करें उसको कुफ्र और शिर्क समझें और उसी का इलाज तौबा और इस्तिग़फार

(पापों के लिये क्षमा याचना) से करें कि वह खुशी ज़ायल (नष्ट) हो जाये बल्कि खुशी के बदले रंज व ग़म समा जाये और इस बात से अच्छी तरह सचेत रहें कि मुरीद के माल का लालच और उससे दुनियावी मुनाफा की उम्मीद न पैदा हो जाये क्योंकि इससे मुरीद भी खराब होगा और पीर भी खराब होगा। वहाँ खालिस दीन दरकार है। खुदा के लिये खालिस दीन चाहिये। वहाँ किसी तरह के शिर्क (दीन अर्थात धर्म के अलावा कोई और चीज) की वहाँ गुंजाइश नहीं है। जो तारीकी (अंधकार) और मैल दिल पर तारी (आच्छादित) हो, उसका दूर करना तौबा और इस्तिगफार से सम्भव है लेकिन जो तारीकी दुनिया की मुहब्बत से पैदा होती है वह दिल को गन्दा और ज़लील करती है और उसका दूर करना बहुत कठिन है। पैगम्बर सल्ल० ने सच फरमाया है कि 'दुनिया की की मुहब्बत तमाम ख़ताओं (अपराधों) की इब्तिदा (आरम्भ) है।' हम सब को अल्लाह दुनिया की मुहब्बत से, दुनिया वालों की मुहब्बत और उनकी सोहबत से नजात (छुटकारा) दे, क्योंकि यह ज़हर कातिल (घातक विष) और हलाक करनेवाली (मार डालने वाली) बीमारी है।

•

हज़रत ख्वाजा मुहम्मद मासूम रहमतुल्लाहु अलैहि

हजरत ख्वाजा मुहम्मद मासूम (रहम०) हजरत मुजद्दिद अल्फसानी (रहम०) के खलीफा व तीसरे पुत्र थे। आपका शुभ जन्म सन १००७ हिजरी में मुकाम बस्सी में जो सरहिन्द के निकट है हुआ। हरत मुजद्दिद (रहम०) फरमाया करते थे कि 'मुहम्मद

मासूम का जन्म मेरे लिये निहायत मुबारक (कल्याणकारी) साबित हुआ। इनके जन्म के थोड़े ही समय के बाद मैं हजरत ख्वाजा बाकी बिल्लाह (रहम०) की खिदमत में मुशर्रफ हुआ (सम्मानित हुआ, उनका शिष्य बना)'। जब हजरत मुहम्मद मासूम (रहम०) विद्याध्ययन की उम्र को पहुँचे, आपको मक़तब में दाखिल किया गया। वहाँ थोड़े ही समय में आपने कुरआन शरीफ कंठाग्र करके दूसरे विषयों का ज्ञान प्राप्त करने की ओर ध्यान दिया। बचपन से ही हजरत मुजद्दिद अल्फसानी (रहम०) की उन पर निगाह थी। फरमाया करते थे कि 'बेटे! जल्द इस दुनियावी इल्म को हासिल करने से निवृत्त हो, क्योंकि मुझको तुमसे बड़े बड़े काम लेने हैं। फरमाते कि चूँकि इल्म (विद्या) मुब्देहाल है (रूहानी हालतों को आरम्भ करने वाला है), इसका हासिल करना जरूरी है और इसी वजह से हजरत ने इनको सभी महत्वपूर्ण व उपयुक्त ग्रन्थों का अध्ययन पूरे प्रयत्न के साथ कराया। प्रायः अधिकांश विद्याएँ उन्होंने अपने पूज्य पिताजी से और कुछ अपने बड़े भाई हजरत ख्वाजा सादिक़ (रहम०) और शेख मुहम्मद ताहिर लाहौरी (कु० सि०) से, जो हजरत मुजद्दिद अल्फसानी (रहम०) के बड़े खलीफाओं में से थे, सीखीं। हजरत मुजद्दिद (रहम०) उनकी उलू बातिनी इस्तेदाद (रूहानी क्षमता की महानता) की अत्यन्त प्रशंसा किया करते थे। अतः एक पत्र में फरमाया है—'मुहम्मद मासूम की फरज़न्दी के बारे में क्या लिखूँ। वह स्वयं इस दौलत के काबिल हैं यानी खास विलायत मुहम्मदिया हासिल किये हुये हैं'। और फरमाया कि मुहम्मद मासूम 'महबूब खुदा' (ईश्वर के प्यारे) हैं और इसी वजह से बड़े सम्मान व इज्जत की नजर से देखते थे। अतः कहा जाता है कि एक मरतबा हजरत ख्वाजा मुहम्मद मासूम (रहम०) बचपन में हजरत के साथ देहली गये। गर्मी का मौसम था। दोपहर को अपने पूज्य पिताजी के पलँग पर सो रहे। उसी समय हजरत मुजद्दिद (रहम०) भी तश-

रीफ लाये। नौकर ने चाहा हजरत मासूम (रहम०) को जगाये। मगर हज़रत ने रोक दिया और स्वयं बाहर आकर बैठ गये और फरमाया कि अल्लाह का दोस्त आराम करता है। खौफ लगता है कि कहीं उसको तकलीफ पहुँचे और मलाल हो, यहाँ तक कि हजरत मुहम्मद मासूम स्वयं जग गए।

ग्यारहवें साल आपने अपने पूज्य पिताजी से अख्ज तरीका फरमाया (नक्शबन्दिया सिलसिले की साधना पद्धति की शिक्षा ग्रहण की) और चौदहवें साल हजरत से बयान किया कि मैंने ख्वाब देखा है कि एक नूर (प्रकाश) मेरे बदन से निकलता है और सारा संसार उससे प्रकाशित हो रहा है और हर कण कण में वह प्रकाश व्याप्त है। अगर सूर्य की तरह वह प्रकाश अस्त हो जाये तो सारे संसार में अंधेरा हो जाये। हजरत ने यह ख्वाब सुनकर फरमाया कि 'तुम कुत्बे-वक्त (अपने समय के कुत्ब अर्थात सन्त शिरोमणि) होगे और इस बशारत (शुभ सूचना, भविष्य वाणी) को याद रखना। सचमुच यह भविष्य वाणी सार्थक हुई और संसार उनके अनवार व बरक़ात (उनके अध्यात्म रूपी प्रकाश पुंजों तथा उपहारों) से परिपूर्ण हो गया। सोलह साल की उम्र में आप सांसारिक विद्याओं का ज्ञान अर्जित करने के बाद रूहानियत की तालीम हासिल करने की ओर उन्मुख हुये और अपने पूज्य पिता जी से रूहानियत के सभी गूढ़ विषयों तथा रहस्यों की तालीम हासिल की।

कहा जाता है कि एक रोज आपको इलहाम हुआ कि बारह रोज के बाद दोपहर को तेरा शरीरान्त होगा। दूसरे रोज इलहाम हुआ कि ग्यारह रोज के बाद शरीरान्त होगा। यहाँ तक कि हर रोज एक दिन घटता जाता था। जब एक दिन बाकी रह गया, तब आपने अपने पूज्य पिताजी से इसका जिक्र किया और खात्मा बिल खैर की दरख्वास्त की (निवेदन किया कि उनका प्राणान्त शान्ति

एवं कुशल से हो)। हजरत मुजद्दिद (रहम०) ने फरमाया कि तुम कुछ चिंता मत करो। इससे यह मुराद है कि उस वक्त तुम्हारा नजूल (इस पृथ्वी पर तुम्हारा अवतरण) कामिल (सर्वांगपूर्ण) होगा (अर्थात उस समय तुम पूर्ण समर्थ सन्त की स्थिति में पहुँच जाओगे)। कहा जाता है कि हजरत मुजद्दिद (रहम०) ने फरमाया कि 'मुहम्मद मासूम (रहम०), मनसब क़य्यूमत (कय्यूम का पद) तुमको अता हुआ (प्रदान किया गया)।' (इस कथन का वर्णन पिछले अध्याय में किया जा चुका है)।

हजरत मुजद्दिद अल्फसानी (रहम०) ने जब जीवन के अन्तिम काल में एकान्तवास ग्रहण किया था, उस समय रूहानियत की तालीम देने व बैअत करने तथा इमामत मस्जिद इन्हीं के सुपुर्द कर दी थी। अतः अपने पूज्य पिता जी के शरीरान्त के पश्चात् आपने सद्गुरु की पदवी को सुशोभित किया। लिखा है कि करीब नौ लाख आदमियों ने आपके हाथ पर तौबा की। सात हजार खलीफा साहबे इर्शाद (सतगुरु) हुये। एक हफ्ते में आपकी सोहबत में साधक को फना और बक़ा हासिल हो जाती थी। एक महीने में कमालात विलायत से मुशर्रफ (प्रतिष्ठित) हो जाता था। कश्फ़ मुकामात (आत्मिक शक्ति द्वारा साधक की आध्यात्मिक स्थितियों तथा दशाओं का पता लगा लेना) निहायत सही था। अपने मुरीदों को दूर जगहों पर होते हुये भी बतला दिया करते थे कि तेरी विलायत मुहम्मदी है या मौसूई (हजरत मूसा अलैहिस्सलाम की) या ईसवी (हजरत ईसा मसीह अलैहिस्सलाम की) है। आरंगजेब भी आपके हल्के (सतसंग) में हाजिर हुआ करता था और बिना संकोच के जहाँ जगह मिल जाती थी बैठ जाता था। आपका रोब इस कदर ग़ालिब था कि बादशाह आरंगजेब जबानी बातचीत नहीं कर सकता था। जो निवेदन करना होता था लिखित रूप में पेश करता था।

आप हज के लिये काबा तशरीफ ले गये। इस यात्रा में उन्हें अल्लाह तआला तथा हजरत पैगम्बर (सल्ल०) के जो रूहानी इनामात (आध्यात्मिक अनुभव रूपी उपहार) मिले, उनमें से कुछ का वर्णन सविस्तार आपके दूसरे पुत्र हजरत ख्वाज अब्दुल्लाह (रहम०) ने लिखा है, परन्तु स्थानाभाव के कारण यहाँ उनमें से कुछ हालात संक्षेप में नीचे अंकित किये जा रहे हैं :—

कहा जाता है कि जब हजरत बहरी सफर (समुद्री यात्रा) तय करके खुश्की में रवाना हुये, फरमाया कि तमाम नशेब व फराज (ऊँचे-नीचे स्थान) यहाँ के हजरत पैगम्बर (सल्ल०) के अनवार से पुर (पूर्ण) पाता हूँ और तमाम चीजें इस नूर में ग़र्क (लिप्त) हैं। एक रोज फरमाया कि इस सफर खुश्की में जहाज के सफर की अपेक्षा काबा शरीफ के अनवार (प्रकाशपुंज) अधिकता में प्रकट होते हैं और आज मालूम हुआ कि काबा शरीफ अपने मकान शरीफ से हटकर मेरी तरफ बड़ी खुशी के साथ मुस्कराता हुआ आया। फरमाया कि एक रोज मैं तवाफ़ (काबा शरीफ की परिक्रमा) करता था कि इसी समय क़ाबा शरीफ ने मुझसे मुआनक़ा किया (गले मिला)। फरमाया कि एक रात मैं रुक्न ईमानी के नजदीक हाजिर होकर नमाज वतर पढ़ता था। मालूम हुआ कि वहाँ फरिश्तों (देवताओं) की एक बड़ी भीड़ इकट्ठा है जैसा कि हदीस शरीफ में आया है कि सत्तर हजार फरिश्ते रुक्न ईमानी (एक विशेष खम्भा) के नजदीक हाजिर रहते हैं और वे काबा शरीफ की परिक्रमा करने वालों के आमाल (कर्मों) का लेखा जोखा अंकित करते हैं। ये फरिश्ते मेरे गिर्द (चारों ओर) आकर जमा हो गये। उनके हाथ में कलम दावात है और मेरी हकीकत मामला कुछ लिखने लगे। मालूम हुआ कि यह सब मेरी प्रशंसा में कुछ लिख रहे हैं।

फरमाया कि एक रोज तवाफ (काबा शरीफ की परिक्रमा)

से वापस होकर अपने साथियों के साथ मराक़बा (ध्यान) में मशगूल था कि उसी समय गैबत (बेखुदी) हो गई। उस हालत में मालूम हुआ कि कोई शख्स खुदा की मुझ पर असीम दया-कृपा की खबर देता है। उसी वक्त मुझको मालूम हुआ कि एक अत्यन्त सम्मान जनक खिलअत (वस्त्र) जिसकी सूरत अत्यधिक प्रकाश पुंजों के कारण पहिचान में नहीं आ रही थी, बल्कि वह एक केवल नूर (प्रकाश) था, मुझको पहिनाया। उसके बाद मैं मस्जिद से उठकर आया और लेट रहा। वहाँ पर भी वह खिलअत अपने ऊपर पाया। इतने में किसी ने आवाज दी कि अल्लाह तआला ऐसा ही बमुनासिब इसके (इस वस्त्र के अनुरूप ही) लिबास (वस्त्र) पहिनता है, अतः हदीस कुदसी में लिखा हुआ है—'बुजर्गी मेरी चादर है और बड़ाई मेरी इज़ार (पाजामा) है।'

हज़रत के तसर्रुफ़ात (चमत्कार)

हजरत के तसर्रुफात (आध्यात्मिक चमत्कार) अत्यधिक हैं। यहां उनमें से कुछ संक्षेप में नीचे अंकित किये जा रहे हैं :—

एक योगी जादू से आग बाँध देता था और लोगों को उस जादू से अचम्भित और मुग्ध करता था। हजरत को यह सुनकर गैरत आई और बहुत सी आग जलवा कर एक वजीफा (मंत्र) पढ़कर दम (फूँक मारी) और उस शख्स को फरमाया कि इसमें बैठकर जिक्र कर। चुनाँचे ज्योंही वह बैठकर जिक्र (जप करने) में मशगूल हुआ, आग उस पर जलने लगी। वह चिल्लाता हुआ अपनी जान बचाकर भाग खड़ा हुआ और फिर वह कभी बस्ती में नहीं दिखलाई पड़ा।

एक मरतबा कुछ खास शिष्य हजरत की खिदमत में काफी दूर से आकर हाजिर हुये। हजरत ने हर एक को उपहार रूप में एक वस्त्र प्रदान किया लेकिन उनमें से एक उस वस्त्र से वंचित रह गया। जब वह अपने मकान में अपने साथियों के साथ वापस आया,

उसको उपहार के न मिलने का बड़ा अफसोस रहा और इसी पश्चाताप में था कि उसे हजरत के आगमन का शोरोगुल सुनाई दिया। और लोग उनके आदर सत्कार के लिये चले। वह शख्स भी बड़ी प्रसन्नता के साथ रवाना हुआ। जब शहर के बाहर पहुँचा क्या देखता है कि हजरत घोड़े पर सवार हैं। उसको देखकर फरमाने लगे 'तू क्यों दुखी होता है ? यह तबर्रुक़ (प्रसाद) ले और कुलाह शरीफ (टोपी) उसके हाथ में दे दी। वह कुलाह देने के बाद तत्काल हजरत निगाह से गायब हो गये और वह कुलाह शरीफ उसके हाँथ में रह गई।

एक रोज हजरत वुजू फरमा रहे थे कि यकायक सेवक से लोटा लेकर दीवाल पर मारा। अतः वह लोटा टूट गया। और दूसरे लोटे से वुजू किया। वहाँ उपस्थित लोगों ने यह घटना देखी और उसको स्मरण रक्खा। काफी समय बाद एक सौदागर आया। उसने बतलाया कि एक दफा मैं एक जंगल में था। क्या देखता हूँ कि एक शेर मेरी तरफ गुर्राता चला आरहा है। देखकर बहुत ही डर लगा। यकायक हजरत को देखा कि लोटा लिये आरहे हैं और उस शेर की तरफ उसे फेंक कर जोर से मारा। उस खौफ से शेर भाग गया और मैं सुरक्षित रहा।

एक शख्स अपने बेटे को हजरत की खिदमत में लाया और निवेदन किया कि यह किसी औरत पर आशिक हो गया है। हमारे हाथों से बिलकुल जाता रहा। न काम दुनिया का करता है, न आक़बत का। हजरत उसको समझाने लगे। उसने एक शेर पढ़ा—

दर कुए नेक नामी मरा गुज़र नदानन्द
गर तू नमी पसन्दी तब्दील कुम कज़ा रा।

(हमको नेकनामी की गली में गुज़रने नहीं दिया गया। अगर तुम नहीं पसन्द करते हो तो हमारी कज़ा अर्थात भाग्य रेखा बदल

दो)। यह सुनकर हजरत ने फरमाया कि हमने तेरी कज़ा तब्दील कर दी। अतः वह तत्काल ताइब हुआ (उस बुरी आदत पर लज्जित हुआ और उससे दूर रहने की प्रतिज्ञा की।) और उसी वक्त उसके दिल से इश्क का ख्याल जाता रहा।

एक मरतबा हजरत की सवारी में एक सैय्यद उनके सम्मान में आगे आगे पैदल चले जा रहे थे। तमाम लोगों की भीड़ की वजह से वह एक गली में गिर पड़े। दिल में खतरा गुजरा (दुर्विचार आया) कि मैं सैय्यद और ऐसा जलील कि बिला सवारी के चल रहा हूँ। इस दुर्विचार के आते ही हजरत ने फरमाया कि सैय्यद साहब मैंने आपसे कब कहा था कि आप बिला सवारी पैदल चलकर जलील हों। वह बेचारे अपने इस दुर्विचार पर बड़े लज्जित हुये और फौरन तौबा की।

हजरत के एक सेवक के घर छः मेहमान आये। उसके पास कुछ मौजूद न था। वह शख्स हजरत की खिदमत में हाजिर हुआ और खामोश बैठा रहा कि इतने में आम आये। हजरत की यह आदत थी कि सभी उपस्थित लोगों को दस दस आम दिये जाते थे। अतः हजरत ने उस शख्स को बुलाकर दस आम दिये और फरमाया कि यह तुम्हारा हिस्सा है और दस आम दिये और फर-कि तुम्हारे पहिले मेहमान का हिस्सा है। यहाँ तक कि छइयों का हिस्सा इसी तरह दिया और उसके बाद छः अशर्फियाँ जेब से निकाल कर दीं और फरमाया कि तुम हमारे फरजन्द (पुत्र) की तरह हो। जिस वक्त जरूरत हुआ करे बिना संकोच के खानकाह (आश्रम) से ले लिया करो और इन्शा अल्लाह (ईश्वर इच्छा से) यह तंगी (आर्थिक परेशानी) जल्दी ही दूर हो जायेगी। अतः ऐसा ही हुआ कि उस शख्स की आर्थिक स्थिति थोड़े दिनों में ही बहुत अच्छी हो गई।

हजरत का एक दामाद एक औरत की तरफ मुतवज्जेह (आकृष्ट) था। आपकी सुपुत्रियों ने हजरत से उसकी शिकायत की। आपकी जबान से सहसा निकला कि वह मर जायेगा। सुपुत्रियों ने अर्ज किया कि जीता रहे। फरमाया कि बस अब जो कुछ होना था हो गया। अब ईमान की दुआ करो। अतः इसके तीसरे चौथे दिन उसका शरीरान्त हो गया।

हजरत की वफ़ात (शरीरान्त)

हजरत को मर्ज वजा मफासिल (शरीर के जोड़ों में दर्द, गठिया) अक्सर रहा करता था। एक दफा इस कदर शिद्दत (पीड़ा) हुई कि कोई दवा कारगर (लाभकर) न हुई। तब हजरत ने फरमाया अब दवा कोई फायदा न करेगी। हकीम मुतलक़ (अर्थात ईश्वर) ने इस दवा के असर को नष्ट कर दिया है और फरमाया कि अल्लाह तआला ने मुझको इलहाम किया है कि मामला इर्शाद (साधकों को रूहानियत की तालीम देने का काम) इन्तिहा (पराकाष्ठा) को को पहुँच गया है गोया कि मेरी पैदाइश से जो मक़सूद (लक्ष्य) था वह हासिल हो गया। इसके बाद हजरत ने अपना तमाम कुतुब खाना (पुस्तकों का संग्रहालय) अपने सुपुत्रों में वितरित कर दिया। दस मुहर्रम सन् १०७९ हिजरी को सभी सुपुत्रों को बुलाकर वसीयत की कि मैंने तुमसे पहिले भी कहा था और अब भी कहता हूँ कि कुरआन व हदीस व इज़्माए उम्मत (किसी धार्मिक मामले में बहुमत), व अक्वाल (सतगुरुजनों के उपदेश), मुज्तहिदीन (धार्मिक विषयों में विवेकपूर्ण निर्णय करने वालों) पर अमल करना। फुकरा खिलाफ़ शराए (धर्मशास्त्र के विरुद्ध आचरण करने वाले फकीरों) से परहेज करना।

आखिर माह सफ़र में जब हजरत मुजद्दिद अल्फ़ुसानी (रहम०) का उर्स (भंडारा) हुआ, हजरत ने सभी उपस्थित लोगों के बीच

फरमाया कि बेअख्तियार यह दिल चाहता है कि माह रबीउल अव्वल में मैं भी जनाब रसूल अल्लाह (सल्ल०) की खिदमत में हाजिर हूँ। इसके बाद किर हज़रत की बीमारी पराकाष्ठा को पहुँच गई। शरीरान्त के दो तीन दिन पहिले आपने आस-पास के बुजुर्गों (सतगुरुजनों) को एक रुक्का मुतजम्मिन (सम्मिलित रूप में एक पत्र) इस्तदुआए सलामत खातिमा (आपका शरीरान्त सलामती के साथ हो इसके लिये दुआ करने के वास्ते) लिखा। नीचे यह इबारत लिखी:— 'फकीर मुहम्मद मासूम अज़ दुनिया मीरवद कि बदुआए खैरियत खात्मा ममदद मुआवन बाशन्द (फकीर मुहम्मद मासूम दुनिया से जा रहा है। आप उसके खैरियत के साथ खात्मे अर्थात शरीरान्त के लिये दुआ करके उसके सहायक और मददगार बनें)। इस पत्र के जवाब में सैय्यद मिर्जा नामी एक बुजुर्ग ने यह दो शेर लिखे थे—

दरे हर पीरज़न मीज़द पयम्बर,
कि ऐ ज़न दर्द दायम याद आवर।
यक़ीन मी दाँ कि शेराने शिकारी,
दरीं राह ख्वास तन्द अज़ मूर यारो।

[सन्देश भेजने वाले ने हर बुढ़िया औरत को (प्रत्येक अकिंचन व्यक्ति को) याद दिलाया कि ऐ बेकस और बेबस औरत ! (प्रणान्त की) मुसीबत को हमेशा याद रख। तू यकीन जान ले कि जब शेर भी मुसीबत में फँसता है तो च्यूँटी की भी मदद चाहता है। इस कथन का तात्पर्य यह है कि प्राणान्त का समय बहुत ही बेबसी का होता है। बड़े-बड़े सन्त-महात्मा भी कुशल पूर्वक शांतिमय प्रणान्त के लिये व्याकुल रहते हैं और हर तुच्छ से तुच्छ आदमी से भी ऐसे प्रणान्त के लिये सहायता चाहते हैं।]

शरीरान्त से एक रोज पहिले जुमा को नमाज के लिये मस्जिद में तशरींफ लाये। नमाज के बाद फरमाया 'उम्मीद नहीं कि कल्ह

इस वक्त तक दुनिया में रहूँ' और सबको सदुपदेश देकर एकान्त में तशरीफ ले गये। सुबह को हजरत ने पूरी नमाज अदा की। मराक़बा के बाद इश्राक की नमाज पढ़ी। इसके बाद आप पर सक़रात मौत शुरू हो गये (आपको चन्द्रा लग गई)। उस वक्त आपकी ज़बान जल्द जल्द चल रही थी। आपके सुपुत्रों ने कान लगाकर सुना तो मालूम हुआ कि आप यासीन शरीफ पढ़ रहे थे। आपका शरीरान्त दोपहर के वक्त दो शम्बा के दिन नवीं रबीउल अव्वल को सन् १०७९ हिजरी को हुआ। 'इन्ना लिल्लाहे व इन्नाइलैह राजेऊन' (सब कुछ अल्लाह के लिये है और सब उसी की तरफ लौट जायेंगे।

•

हज़रत शैख़ सैफुद्दीन कुद्स सिर्रहू

हजरत शैख सैफुद्दीन (कु०सि०) हजरत ख्वाजा मुहम्मद मासूम (रहम०) के पाँचवें पुत्र हैं। आप का शुभ जन्म १०४९ हिजरी को सरहिन्द में हुआ। जब आप विद्याध्ययन की आयु को पहुँचे, आपको मक़तब में दाखिल किया गया। थोड़े ही समय में आपने कुरआन कंठाग्र कर लिया और इसके बाद आपने सभी उपयुक्त व महत्वपूर्ण ग्रन्थ थोड़े ही अर्से में पढ़ डाले। विद्यार्थी-जीवन में ही आपने कमालात बातिनी हासिल करने शुरू कर दिये। ग्यारह साल की उम्र थी कि आपके पूज्य पिताजी ने आपको फनाए कल्ब (हृदय का प्रभु की याद में तल्लीन होने) की बशारत अता फरमाई और आपकी महान आध्यात्मिक क्षमता को देखकर हर क्षण आपकी आध्यात्मिक प्रगति का ध्यान रखते थे। आपके ज़र्फ (आध्यात्मिक सुपात्रता) को निहायत अमीक (अत्यन्त अगाध और गम्भीर) समझा करते थे, यहाँ

तक कि आप युवावस्था में ही पूर्ण समर्थ संत शिरोमणि की स्थिति को पहुँच गये।

एक बार बादशाह औरंगजेब ने हजरत ख्वाजा मासूम (रहम०) से निवेदन किया कि अपना कोई खलीफा मेरी हिदायत (मार्ग-दर्शन) व तवज्जोह के वास्ते भेजने को कृपा करें। हजरत ने अपने इन्हीं सुपुत्र हजरत शैख सैफुद्दीन (कु०सि०) को वहाँ भेजा। कहा जाता है कि जब आप देहली पहुँचे और किले में दाखिल होने लगे कि दरवाजे पर दो हाथियों के चित्र बने हुये थे जिस पर फीलवान भी सवार थे। आपने फरमाया कि मैं इस किले में दाखिल नहीं हूँगा कि जिस घर में तसबीर होती है वहाँ रहमत का फरिश्ता नहीं आता। अतः वह हाथी और फीलवान के चित्र बिलकुल नष्टकर डाले गये, तब आप दाखिल हुये।

एक रोज बादशाह ने आपको अपने शाही बाग में सैर करने की तकलीफ दी। वहाँ सोने की मछलियाँ थीं कि जिनकी आँखों में जवाहरात जड़े थे। हजरत ने देखकर फ़रमाया कि जब तक मछलियाँ न तोड़ दी जायेंगी मैं इस ज़गह न बैठूँगा। बाग की रखवाली करने वालों ने शाही नुकशान को ध्यान में रखते हुए इनके तोड़ने में तअम्मुल किया (असमंज़स में पड़ गये) लेकिन बादशाह ने तत्काल उन्हे तुड़वा दिया और कहा कि शैख़ की प्रसन्नता में ज्यादा नफ़ा (लाभ) है।

बादशाह औरंगजेब आपसे तवज्जोह लिया करता था और अजीबो ग़रीब हालात (अनुभूतियाँ) कि जो बादशाह के वास्ते अन्काए रोजगार हैं (जिनकी उपलब्धि इस युग में दुर्लभ है) दारद होते थे (अनुभव में आते थे)। राजधानी में आपके इर्शाद (उपदेश) की बड़ी वसअत (शक्ति, सामर्थ्य) थी। बादशाह अपने राजकुमार, मंत्रियों तथा अन्य पदाधिकारियों के साथ नक्शबन्दिया-मुर्जाद्

दिया सिलसिले में दाखिल हुये और सत्संग व मजलिस में इस कदर लोगों की भीड़ होती कि बयान के बाहर है। कुछ समय तक आप राजधानी में रुके रहे और वहाँ अमर मारुफ व निही मुन्किर (धर्मशास्त्र के नियमों द्वारा मान्य कृत्यों के करने और उन नियमों द्वारा वर्जित कृत्यों के निषेध के लिये आवश्यक मार्ग दर्शन तथा आदेश देने) तथा इर्शाद खल्क़ (लोगों को आध्यात्मिक शिक्षा देने) में तत्पर रहे। इसके बाद अपने वतन सरहिन्द वापस आ गये और अपने पूज्य पिताजी की सेवा में रहते हुये रूहानी अनवार व बरकात हासिल करते रहे और उनके शरीरान्त के पश्चात उनके जानशीन (उत्तराधिकारी, वारिस) हुये।

कहा जाता है कि प्रायः आधी रात की अन्तिम बेला में आप हजरत मुजद्दिद अल्फसानी (रहम०) की रौजा (कब्र) मुबारक पर जाते और उसके चारों तरफ फिरा करते थे। फरमाया करते थे कि मैं मुजद्दिद अल्कसानी (रहम०) की दरगाह का कुत्ता हूँ।

आपके खानकाह (आश्रम) में चार सौ आदमी जमा रहते थे और जो शख्स जो फरमाइश करता उसके वास्ते वही खाना तैयार होता। आपकी सेवा में उच्चकोटि के साधक, महात्मा और जिज्ञासु आपसे आध्यात्मिक शिक्षा व उपदेश ग्रहण करने के लिये उपस्थित होते थे।

एक बार शैख (सन्त) ने तक़लीले गिज़ा (इन्द्रिय निग्रह के लिये मिताहार) करना चाहा। हजरत ने फरमाया कि तकलीले गिजा की जरूरत नहीं है। हमारे बुजुर्गों ने बिनाए कार (साधना से सम्बन्धित कर्मों की आधार शिला) दवाम वकूफ़ क़ल्बी व सोहबत शैख (सदैव हृदय की चौकसी और सतगुरु के सत्संग) पर रक्खा है। तपस्या तथा अत्यन्त कठिन इन्द्रिय निग्रह से आध्यात्मिक चमत्कार तथा ऋद्धियाँ सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं, परन्तु हमारे यहाँ इनकी कोई जरूरत नहीं है। यहाँ दवाम जिक्र व तवज्जेह

अल्लाह (सदैव जप तथा ईश्वर के ध्यान में लगे रहना) व इत्तबा सुन्नत (हजरत पैगम्बर सल्ल० द्वारा किये गये कामों और आचरणों का अनुकरण करना है)।

एक बार एक शख्स हजरत के खादिमों में से काबुल से ईरान को जा रहा था। रास्ते में एक राफ़जी (शिया) घोड़े पर चढ़ा हुआ आपके आगे आगे जा रहा था। यकायक उसकी ज़बान से नक्शबन्दिया सिलसिले के बुजुर्गों के खिलाफ कुछ बेअदबी की बातें निकलीं। उस शख्स ने यह बातें सुनते हो उसका सर तलवार से काट डाला। इसके बाद यह खौफ हुआ कि उसके साथी कहीं मुझको कष्ट न पहुँचायें। तत्काल एक सवार नकाब पोश पहुँचा और एक डन्डा उस मृतक को मारा और मुझसे फरमाया कि निश्चित रहो, हमने उसको गदहा कर दिया है। उस शख्स ने जो गौर किया तो वह गदहे की लाश हो गई थी। उसने उस नकाब पोश सवार से अर्ज किया कि आप मुझको अपना दर्शन देने की कृपा करें। उन्होंने नकाब उल्टा, देखा तो शैख सैफुद्दीन (रहम०) थे। उन्होंने फरमाया कि अगर इसकी सूरत तब्दील न कर देता तो इसके साथी तुझको तकलीफ देते। उसी समय उसके साथी भी आ गये। उसका घोड़ा खाली पाया और लाश गदहे की पड़ी थी। शरमिन्दा हुये और कुछ न पूँछा। घोड़ा लेकर चुपके से चले गये।

एक मरतबा आपके बड़े भाई हजरत हजतहुल्लाह नक्शबन्द (कु० सि०) हज की यात्रा के लिये जा रहे थे। बिदा होते समय आपसे कहा 'मेरी उम्र आखिर हो गई है। लड़कों के हाल पर मेहरबानी रखना।' आप ने फरमाया कि अल्लाह तआला की ज़ात से उम्मीद है कि आपकी उम्र बहुत हो, अलबत्ता मुझको अपनी उम्र की बिलकुल उम्मीद नहीं है। आप मेरे बच्चों पर नजरे इनायत (कृपा दृष्टि) राखियेगा। अतः ऐसा ही हुआ और हजरत

हजतहुल्लाह (रहम०) का शरीरान्त आपसे १९ साल के बाद हुआ।

आपका मामूल (नियत) था कि बाद दोपहर अपनी धर्म-पत्नियों को जमा करके हदीस सुनाया करते थे। एक रोज अपने नियम के विरुद्ध हदीस पढ़ना जल्द खत्म कर दिया। धर्मपत्नियों ने कहा कि अभी बहुत वक्त है, कुछ और पढ़िये। आपने फरमाया 'और मुहम्मद आज़म से पढ़वाना।' (मुहम्मद आजम आपके बड़े लड़के का नाम था)। उसके बाद आप बीमार पड़ गये और फिर हदीस सुनाने का संयोग न हुआ और उसके बाद आपके सुपुत्र मुहम्मद आज़म ने सुनाया होगा।

आपने ४७ साल की उम्र में छब्बीस जमादिउल अव्वल सन् १०९६ हिजरी में अपना पार्थिव शरीर त्याग दिया।

कहा जाता है कि जब आपका जनाजा दफन करने ले चले वह हवा पर जाता था। हरचन्द लोग चाहते कि कन्धे पर रखें, परन्तु सम्भव न हुआ और कब्र के पास खुद बखुद जाकर रख गया।

•

हज़रत सैय्यद नूर मुहम्मद बदायूनी (रहम०)

हजरत सैय्यद नूर मुहम्मद बदायूनी (रहम०) इल्म जाहिर (सांसारिक विद्या) में मेधावी एवं उच्चकोटि के विद्वान थे। आपने हजरत ख्वाजा मुहम्मद मासूम (रहम०) के सुपुत्र एवं खलीफा हजरत शैख सैफुद्दीन (रहम०) से आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त कर सभी रूहानी मुकामात व साधना की विभिन्न स्थितियों को प्राप्त किया और वर्षों उनकी खिदमत में हाजिर रहकर उच्च-

कोटि की आध्यात्मिक अनुभूतियों से मुशर्रफ (सम्मानित) हुये। हजरत ख्वाजा मुहम्मद मासूम कु० सि० के खलीफा शैख अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी (रहम०) के सुपुत्र हजरत हाफिज मुहम्मद हसन (कु० सि०) की खिदमत में भी हाजिर रहे। आध्यात्मिक साधना के आरम्भ में १५ वर्षों तक हर समय ईश्वर के ध्यान में तल्लीन रहते थे। केवल नमाज के वक्त उनकी यह तल्लीनता टूटती थी और नमाज के बाद फिर तन्मयता की स्थिति में हो जाते थे। १५ वर्षों के बाद उनकी यह तल्लीनता समाप्त हुई। अधिकांश समय मराक़बा (ध्यान) में रहने की वजह से आपकी पीठ टेढ़ी हो गई थी। इत्तबा सुन्नत (सुन्नत के अनुकरण) को बहुत जरूरी समझते थे और हमेशा इसका ध्यान रखते थे। अख्लाक (शिष्टाचार) पर आपकी हमेशा दृष्टि रहती थी और उसी के अनुसार आप आचरण करते थे। थोड़ा सा भी अदब का तर्क (त्याग) न होता था और अगर बमुक्तजाए बशरीयत (मानवीय स्वभाव वश) कभी हो जाता तो तत्काल उससे सचेत हो जाते।

एक मरतबा खिलाफ सुन्नत पहिले दाहिना पाँव बैतुल ख़ला (शौचालय) में दाखिल होते समय रख गया। तीन रोज तक बातिनी अहवाल (आन्तरिक हालतों) में कब्ज़ हो गया (मन उचाट रहने लगा और इबादत में एकाग्रता और तल्लीनता नहीं रहने लगी)। जब अत्यधिक पश्चाताप किया तब आपकी आन्तरिक स्थिति ठीक हुई।

भोजन में इतनी सावधानी रखते थे कि अपने हाथ से कुछ दिनों के लिये भोजन पका लिया करते थे और उसको अधिक भूख लगने पर खा लिया करते थे। फरमाया करते थे कि तीस साल से तबियत का लगाव भोजन के स्वाद व किस्म से नहीं रहा और भूख में जो कुछ मिल गया वही खा लिया। आपके दो पुत्र थे। एक को

घी और एक को शकर दिया करते थे। अमीरों (धनी लोगों) का खाना कभी नहीं खाया करते थे। फरमाया करते थे कि वह शुबहा (सन्देह) से खाली नहीं होता (उसमें यह सन्देह बना रहता है कि वह ईमानदारी व हलाहल की कमाई का है या नहीं)।

एक मरतबा किसी दुनियादार के घर से खाना आया। आपने फरमाया कि इसमें जुल्मत (अन्धकार, तामस) मालूम होती है। आपने अपने खलीफा हज़रत मीरज़ा मज़हर जान जाना (रहम०) से फरमाया कि तुम भी गौर करो। उन्होंने मुतवज्जेह होकर फरमाया कि खाना हलाल की कमाई का मालूम होता है लेकिन बवजह रिया (आडम्बर व दिखावा के कारण) एक किस्म की बदबू इसमें पैदा हो गई है। अगर किसी दुनियादार के घर से किताब मँगवाते तीन रोज़ तक उसको न पढ़ते और फरमाते दुनियादारों की सोहबत (सम्पर्क) से इस पर जुल्मत (अन्धकार, तामस) के गिलाफ की तह लिपट गई है। जब आपकी सोहबत से वह जुल्मत नष्ट हो जाती तब उसका अध्ययन करते। नूरे फरासत (आत्मिक ज्ञान के प्रकाश से लोगों की सूरत देखकर उनके स्वभाव व व्यक्तित्व को जान लेना) और कश्फ (आत्मिक शक्ति से परोक्ष बातों को जान लेना) इस क़दर सही था कि जैसा उनको हृदय के नेत्रों से ज्ञात हो जाता था औरों को स्थूल बाह्य नेत्रों से नहीं ज्ञात होता था।

एक मुरीद आपकी खिदमत में हाजिर होने के लिये घर से रवाना हुआ। रास्ते में एक नामहरम (अपरचित स्त्री) पर नजर पड़ गई। आपने उसको देखते ही फरमाया कि तुम में जुल्मत जिना (काम वासना का अन्धकार) मालूम होती है। शायद नामहरम पर नजर पड़ गई। आपने विशेष कृपा करके अपनी तवज्जोह से उस जुल्मत को दूर किया। इसी तरह एक रोज आपके एक सेवक को रास्ते में शराबी मिल गया था। जिस वक्त खिदमत में हाजिर

हुआ, देखकर फरमाया 'आज तुम्हारी बातिन (अन्तःकरण) में जुल्मत शराब मालूम होती है, शायद कि शराबी से मुलाकात हुई है।' फरमाया कि बुरे लोगों की मुलाकात से रूहानी निस्बत लुप्त हो जाती है। अगर कोई शख्स आपकी खिदमत में जिक्र तहलील (कलमा शरीफ 'ला इलाहः इल्लल्लाह' अर्थात 'एक ईश्वर के सिवाय कोई ईश्वर नहीं है' का जप करके जाता था, आप फरमा देते थे कि जिक्र तहलील करके आये हो और अगर दरूद शरीफ पढ़कर जाता तो उसको फरमा देते कि दुरूद शरीफ पढ़कर आये हो। (हज़रत मुहम्मद सल्ल० तथा उनके कुल वालों के कल्याण के लिये ईश्वर से प्रार्थना करना 'दुरूद' कहलाता है)।

एक मरतबा एक औरत आपकी खिदमत में हाजिर हुई और अर्ज किया कि मेरी लड़की को जिन उठाकर लेगये हैं। जितने प्रयत्न व टोना टोटका किये गये सब बेकार साबित हुये। आप इस मामले में मेरी मदद करने की कृपा कीजिये। यह सुनकर आप थोड़ी देर मराकिब रहे (ध्यान में हो गये) उसके बाद फरमाया कि फलाँ वक्त तेरी लड़की हाजिर होगी। अतः वह लड़की उसी वक्त आ गई। लड़की से जो घटना दरियाफ्त की गई, उसने कहा कि मैं एक जंगल में बैठी थी। वहाँ से एक बुजुर्ग मेरा हाथ पकड़ कर इस जगह ले आये। आप से किसी शख्स ने दरियाफ्त किया कि आपने कुछ देर के बाद क्यों फरमाया कि तेरी लड़की फलाँ वक्त आयेगी। आपने फरमाया कि मैंने पहिले अल्लाह तआला के दरबार में प्रार्थना की कि अगर मेरी हिम्मत में असर हो तो तेरी दया कृपा से उस लड़की को जिनों से मुक्त कराऊँ। जब इलहाम हो गया कि तेरी हिम्मत में असर है तब मैंने हिम्मत की और कहा कि फलाँ वक्त तेरी लड़की आ जायेगी।

आपके पड़ोस में भंग बेचने वाले की दूकान थी। आपने एक रोज फरमाया कि भंग की जुल्मत से बातिनी निस्बत क्षीण हो

जाती है। आपके किसी शिष्य ने जाकर अपने प्रभाव से उस भंग बेचने वाले को वहाँ से हटा दिया। आपने यह सुनकर फरमाया कि अब निस्बत पहिले से भी ज्यादा क्षीण हो गई है क्योंकि तुम्हारा यह व्यवहार भी शरीअत के खिलाफ हुआ है। पहिले उसको नर्मी से समझाकर तौबा करानी चाहिये थी, फिर सख्ती करनी थी। अतः उसको तलाश करके बुलवाया और मुरीदों की तरफ से माजिरत की (विवशता प्रकट किया) और कुछ रुपये उसको दिये और फरमाया कि शरीअत के खिलाफ पेशा अच्छा नहीं होता, कोई मुबाह (जाइज़, उचित) पेशा अख्तियार करो। अतः उसने तत्काल तौबा की और उस पेशे को छोड़कर दूसरा पेशा अख्तियार किया।

एक मरतबा आप हाफिज मुहम्मद मुहसन (रहम०) की मज़ार पर जियारत (दर्शन) के वास्ते गये। मराक़बे में मालूम हुआ कि तमाम बदन व कफन ठीक हालत में है, मगर पाँव के चमड़े तथा कफन में मिट्टी का असर पहुँच गया है। इसकी वजह दरियाफ्त की तो साहबे मज़ार ने (जिन बुजुर्ग की मजार थी उन्होंने) फरमाया कि एक गैर शख्स का पत्थर उसके बिना इज़ाज़त वुजू की जगह रख लिया था कि जिस वक्त वह आयेगा वापस दे दूँगा। एक वक्त उस पत्थर पर कदम रक्खा गया था। उसकी वजह से मिट्टी ने पाँव व कफ़न में असर किया। वास्तव में जिसका कदम तक़वा (इन्द्रिय निग्रह) में ज्यादा, उसको कुर्ब विलायत (समर्थ सन्त-पद की निकटता) ज्यादा।

आपका शरीरान्त ग्यारह जीक़दा ११२५ हिजरी में हुआ। आपकी मज़ार शरीफ हजरत निजामुद्दीन औलिया कु० सि० की समाधी के पीछे नाला पार करके एक पक्के बाड़े में, जिसे पंच ख्वाजा कहते हैं, नीम के पेड़ के नीचे स्थित है।

●

हजरत मिर्ज़ा मज़हर जान-जाना (रहम०)

हजरत मिर्जा मजहर जानजाना (रहम०) का शुभ जन्म तारीख ग्यारहीं रमजान ११११ हिजरी जुमा (शुक्रवार) के दिन हुआ था। आपके पूज्य पिताजी हजरत मिर्जा जान सम्राट आरंगजेब के शासन काल में एक पदाधिकारी थे। आपको संसार से अत्यधिक विरक्ति थी। उन्होंने अपने सुपुत्र के जन्म के कुछ समय पूर्व ही अपने पद से त्याग पत्र दे दिया और अपने निवास स्थान आगरे के लिये प्रस्थान किया। जब वे मालवा प्रान्त की सीमा पर पहुँचे तो हजरत मजहर जानजाना (रहम०) का जन्म वहीं पर काला बाग नामक स्थान पर हुआ। उस समय सम्राट आरंगजेब दक्षिण में विजय-यात्रा पर गया हुआ था और वहाँ के शासन प्रबन्ध में संगलग्न था। जब उसे हजरत मिर्जा मजहर (रहम०) के जन्म का शुभ समाचार मिला तब वह बहुत प्रसन्न हुआ और उसने आपका नाम जान-जान रक्खा कि बेटा बाप की जान हुआ करता है (आपके पूज्य पिताजी का नाम मिरजा जान था इसीलिये आरङ्गजेब ने आपका नाम जान-जान रक्खा)। धीरे-धीरे लोग आपको जान-जाना के नाम से सम्बोधित करने लगे। आप आगे चलकर अपनी युवा अवस्था में एक अच्छे कवि हुये और कविता में आपका उपनाम 'मज़हर' था, इसी लिये आप 'मिरज़ा मज़हर जान-जाना' के नाम से प्रसिद्ध हैं। हाजी मुहम्मद अफज़ल ने आप-को 'शम्सुद्दीन हबीबुल्लाह' की पदवी से भी सुशोभित किया था अतः आपके नाम के साथ यह पदवी भी लिखी जाती है।

आप जन्म से ही बड़े प्रेमी स्वभाव के थे। आप फरमाया करते थे कि मुझको याद है कि मेरी छै माह की उम्र थी। एक हसीन

(सुन्दर) औरत ने मुझको दाया की गोद से अपनी गोद में ले लिया। उसके सौंदर्य को देखते ही मेरा दिल हाथ से जाता रहा और उसके साथ मुहब्बत पैदा होगई। उसको बिना देखे चैन नहीं आती थी और उसकी प्रतीक्षा में रोया करता था। पाँच साल की उम्र में यह बात प्रसिद्ध होगई कि लड़का आशिक़ मिज़ाज़ (प्रेमी स्वभाव का) है।

बाल्यावस्था से ही मजहर के पूज्य पिजाजी ने उनको अच्छी से अच्छी शिक्षा प्रदान करने के लिये विशेष प्रबन्ध किया और आप स्वयं भी उनको पढ़ाया करते थे। यद्यपि हजरत मजहर जान जाना (रहम०) का बाल्यकाल ही था परन्तु आपके पूज्य पिताजी प्रत्येक विषय को निर्धारित समय पर पढ़ने के लिये विशेष जोर देते थे। उनका कहना था कि इस बहुमूल्य जीवन को व्यर्थ के कामों में नष्ट नहीं करना चाहिये। अतः मज़हर को दरबार सम्बन्धी शिष्टाचार, सैनिक शास्त्र, कला, विज्ञान, और उद्योग धन्धों की शिक्षा भी दी गई थी। वे कहा करते थे, 'यदि तुमने एक सामन्त का जीवन ग्रहण किया तो उस समय तुमको कलाकारों के गुणों को जानने में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होगी। इसके विपरीत यदि तुमने मेरी तरह सन्यास और संसार से वैराग्य धारण किया तो उस स्थिति में भी तुमको कलाकारों और उद्योगियों की आवश्यता नहीं होगी।' इस प्रकार हजरत मजहर जान जाना (रहम०) प्रत्येक शास्त्र एवं कला के मर्मज्ञ विद्वान हो गये। प्रत्येक व्यवसाय के उद्योगी उनसे शिक्षा ग्रहण करते थे और जो व्यवसायी उनसे एक बार भेंट कर लेता उनको अपना गुरु मानने लगता था।

शाह गुलाम के कथनानुसार हजरत मिरजा मजहर जान जाना (रहम०) शस्त्र विद्या में इतने कुशल थे कि यदि बीस तलवार चलाने वाले एक ही समय में उन पर आक्रमण करें और उनके पास

केवल एक लाठी ही हो तो भी ईश्वर इच्छा से उनमें से कोई भी उनको आहत नहीं कर सकता था। एकबार आप एक अन्धकार पूर्ण स्थान पर संध्या की नमाज पढ़ रहे थे। एक व्यक्ति ने अकस्मात आकर आप पर तलवार का वार किया। आपने तत्क्षण उस व्यक्ति के हाथ से तलवार छीन ली और फिर उसे देदी कि वह पुनः वार करे। इस प्रकार सात बार आपने उसके हाथ से तलवार छीनी और पुनः उसको देदी। परन्तु आपको घायल न कर सका। अन्त में वह लज्जित होकर क्षमा याचना करके चला गया। फरमाया कि एक मरतबा एक मस्त हाथी रास्ते में आरहा था और मैं सामने से घोड़े पर सवार जा रहा था। फीलवान ने शोर मचाया कि हट जाओ। मुझको ख्याल आया जानवर के सामने से भागना बड़ी नामर्दी है। इतने ही में हाथी ने मुझे सूँड़ में लपेट लिया। उसी वक्त मैंने खंजर निकाल कर उसके सूँड़ में मारा। हाथी ने चीख मारकर मुझको छोड़ दिया।

सोलह वर्ष की आपकी आयु थी कि आपके पूज्य पिताजी का शरीरान्त हो गया। पूज्य पिताजी के शरीरान्त के पश्चात आपके शुभ चिंतक दो वर्षों तक इसी कोशिश में रहे कि आपको मौरूसी मनसब (पद) शाही दरबार में मिल जाये। अतः एक रोज फर्रुखसियर बादशाह से मिलने के लिये गये। बादशाह को उस रोज जुकाम था, अतः वह दरबार में नहीं आया। इस कारण से उससे आपकी मुलाकात उस दिन न हो सकी। उसी रात को आपने ख्वाब में देखा कि एक बुजुर्ग ने मजार से निकल कर अपनी कुलाह (टोपी) आपके सर पर रख दी। शायद कि वह बुजुर्ग हजरत ख्वाजा कुतुबद्दीन बख्तियार काकी (रहम०) थे। इस ख्वाब के देखने से मौरूसी मनसब (पद) के प्राप्ति की इच्छा आपके दिल से जाती रही और बुजुर्गों (सतगुरुजनों) से मिलने का शौक दिल में पैदा हो गया और जिस जगह किसी समर्थ सन्त के बारे में सुनते

उनके दर्शनों के लिये हाजिर होते। अतः शैख वली मुल्लाह चिश्ती (रहम०) और मीर हाशिम जालेसरी व शाह मजफर क़ादरी की खिदमत में हाजिर हुये। आप फरमाते थे जिस वक्त मैं शाह मजफर कादरी (रहम०) से मिलने गया, वहाँ किसी ने शाह मजफर (रहम०) से दरियाफ्त किया कि क्या इस वक्त भी औताद व अब्दाल (ईश्वर के परम भक्त और पूर्ण समर्थ सन्त) होंगे। उन्होंने फरमाया कि कोई ज़माना (युग) सन्तों और महात्माओं से खाली नहीं रहता और जिसको औताद व अब्दाल देखना हो, मेरी तरफ इशारा करके कहा कि इस जवान को देखे। यह उन्होंने अपने नूरे फरासत (आत्मिक शक्ति के प्रकाश) से मालूम किया, अन्यथा उस वक्त मैंने कोई आध्यात्मिक साधना पद्धति ग्रहण नहीं की थी।

एक रोज आपके मकान पर किसी खुशी में आपके दोस्तों व शुभ चिंतकों की भीड़ इकट्ठा थी और उनकी खातिरदारी के लिये सभी सामान वगैरह तैयार था कि इसी समय किसी शख्स ने हजरत सैय्यद मुहम्मद बदायूनी (रहम०) की विशेषताओं और सद्गुणों का जिक्र किया। यह सुनते ही आप उनसे मिलने के लिये बेचैन हो गये और उस जल्सा में उपस्थित लोगों के मना करने पर भी आप उसी दम सैय्यद मुहम्मद बदायूनी (रहम०) के दर्शनों के लिये गये। चूँकि मकान पर तमाम दोस्तों और मिलनेवालों को छोड़ गये थे, अतः हजरत सैय्यद मुहम्मद बदायूनी (रहम०) की सेवा में थोड़ी ही देर बैठकर चाहा कि जल्द वहाँ से उठें और अर्ज़ किया कि इन्शा अल्लाह (ईश्वर इच्छा से) फिर किसी वक्त हाजिर हूँगा। यद्यपि जब कोई शख्स हजरत सैय्यद (रहम०) की खिदमत में हाज़िर होता, तो पहिले उसकी लगन, पात्रता, व क्षमता का पता लगाते और इस्तखारा के जरिये इस बात की पुष्टि कर लेते कि उस शख्स को रूहानियत की तालीम देना मुनासिब है या नहीं, तब कहीं उस जिज्ञासु को नक्शबन्दिया सिलसिले की साधना पद्धति

के अनुसार ईश्वर की अराधना और नाम-जप आदि का तरीका बतलाते। मगर आपने मिरजा मजहर जान जाना (रहम०) से उस समय बिना उनके निवेदन किये ही फरमाया कि आँखें बन्द करके कल्ब की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाओ और खुद तवज्जोह देना शुरू की, चुनाँचे उसी तवज्जोह में अन्दर के सभी षट चक्र जागृत हो गये और इसके बाद उनको बिदा किया। अगले दिन हजरत मिरजा जान जाना (रहम०) ने हज़रत सैय्यद (रहम०) की खिदमत में जाने का इरादा किया और अपनी आदत के अनुसार चलते वक्त अपनी सूरत आइना में देखी तो हजरत सैय्यद (रहम०) की सूरत पाई। इससे मुहब्बत और अक़ीदा (विश्वास) और ज्यादा हो गया। थोड़ी ही मुद्दत में इस सिलसिले की साधना पद्धति की अनुभूतियों से बातिन (अन्तःकरण) व्याप्त हो गया। चार साल तक आपने इनकी खिदमत में इस्तफादा किया (लाभान्वित हुये) और समर्थ संत की स्थिति को पहुँच गये। उस वक्त हजरत सैय्यद (रहम०) ने आपको इजाजत तरीका मय तबर्रुक पैरहन अता फरमायी (निर्धारित शिष्टाचार के अनुसार अपना एक वस्त्र प्रदान करते हुये आपको सतगुरु के अधिकार दिये) और अपने सिलसिले के सतगुरुजनों तथा सुन्नत के अनुकरण करने वालों पर विश्वास व श्रद्धा रखते हुये उनकी सेवा करने तथा धर्म में नई बातों व नई रस्मों से दूर रहने की वसीयत फरमायी। उसके बाद हजरत सैय्यद (रहम०) का शरीरान्त हो गया।

शरीरान्त के पश्चात हजरत सैय्यद (रहम०) ने हजरत मिरजा (रहम०) से ख्वाब में फरमाया कि कमालात इलाही (ईश्वरीय गुण व विशेषताएँ) अत्यधिक हैं। उनके हासिल करने के लिये पूर्ण समर्थ सन्तों का सतसंग करना चाहिये। अतः अपने सतगुरु देव के इस आदेश के अनुपालन में उन्होंने उस जमाने के सन्तों की सोहबत की ओर अपना ध्यान आकृष्ट किया और हजरत

शैख गुलशन (कु० सि०), हजरत ख्वाजा मुहम्मद जुबैर (रहम०), हजरत हाजी मुहम्मद अफ्जल (रहम०), हजरत हाफिज सैय्यद उल्लाह (रहम०) व हजरत शैख मुहम्मद आबिद (रहम०) की सोहबतें अख्तियार कीं (इन सन्तों के सतसंग में रहे।) इन सभी बुजुर्गों में से हजरत शैख मुहम्मद आबिद (रहम०) की सोहबत से आपको विशेष लाभ पहुँचा। आप फरमाते थे कि हजरत शैख मुहम्मद (रहम०) के सत-संगियों में जो ख़ूसियत (विशेषता) मुझको मिली थी वह किसी को न मिली।

कहा जाता है कि एक रोज हजरत शैख मुहम्मद आबिद (रहम०) ने फरमाया कि आज रात को अल्लाह तआला ने ऐसे कमालात जदीद (नवीन विशेषतायें) अता फरमाये (प्रदान किये) कि उनके सामने पिछले सभी कमालात कुछ न थे। हजरत मिरज़ा मज़हर जान जाना (रहम०) ने उनसे अर्ज किया 'उस वक्त काफी रात बाकी थी और उस समय आपकी कृपा और आशीर्वाद से मुझ पर भी अजीब हालतें गुजरीं और विचित्र इस्रार (भेद, रहस्य) अनुभव में आये थे।' हजरत शैख मुहम्मद आबिद (रहम०) ने फरमाया कि तुम ठीक कहते हो, खुदा ने तुमको हमारा जिम्नी (अंशी, समान अन्तःकरण वाला) बनाया है, अतः जो कुछ मुझे आध्यात्मिक उपहार व चमत्कार मिलते हैं उनमें से तुमको भी हिस्सा मिलता है।

आपने फ़रमाया कि एक रोज हजरत मुहम्मद आबिद (रहम०) से मैंने क़ादरिया खानदान की इजाजत के वास्ते अर्ज किया। उन्होंने फरमाया कि आओ तुमको इस खानदान की इजाजत से जनाब रसूल अल्लाह (सल्ल०) से सरफ़राज़ (सम्मानित) करायें। अतः खुद भीं जनाब रसूल अल्लाह (सल्ल०) की तरफ मुतवज्जेह होकर बैठ गये और मुझको भी मुतवज्जेह होने को फरमाया। क्या देखता हूँ कि

हजरत मुहम्मद रसूल अल्लाह (सल्ल०) अपने असहाब व कई पुराने बुजुर्गों (सन्तों) के साथ एक अत्यन्त सुसज्जित एवं आलीशान दरबार में पदासीन हैं और वहीं हजरत गौसुल सकलीन (हजरत सैय्यद अब्दुल कादिर जीलानी रहम०) एक अत्यन्त प्रकाशवान स्थिति में खड़े हैं। हजरत मुहम्मद आबिद (रहम०) ने जाकर जनाब रसूल अल्लाह (सल्ल०) से अर्ज किया कि मिरज़ा जान जाना खानदान कादरिया की इजाजत के आकांक्षी हैं। फरमाया कि इस मामले में सैय्यद अब्दुल कादिर रहम० से कहो। चुनाँचे उनसे अर्ज किया। उन्होंने हजरत मुहम्मद आबिद (रहम०) के निवेदन को स्वीकार किया और मुझे एक खिरका (वस्त्र) प्रदान करते हुये कादरिया खानदान की इजाजत से सम्मानित किया। उसी क्षण मुझे कादरिया सिलसिले की आध्यात्मिक अनुभूतियों और इस सिलसिले की साधना सम्बन्धी विभिन्न विशेषताओं का दिल में बखूबी एहसास हुआ। आगे चलकर हजरत शैख मुहम्मद आबिद (रहम०) ने मुझको सुहरावर्दिया और चिश्तिया खानदान की भी इजाजतें प्रदान कीं।

फरमाया कि एक रोज हजरत सैय्यद मुहम्मद बदायूनी (रहम०) ने मेरी जूतियाँ सीधी करके रक्खीं और फरमाया कि तुमको अल्लाह तआला की जनाब में कुबूलियत तमाम है (ईश्वर की ड्योढ़ी अर्थात दरबार में तुम बहुत प्यारे हो)। हाजी मुहम्मद अफज़ल (रहम०) मेरी ताज़ीम (सम्मान) के लिये सीधे खड़े हो जाया करते थे और फरमाया करते थे कि तुम्हारे कमालात की ताजीम करता हूँ। हजरत हाफिज सैयदुल्लाह साहब मेरा बहुत आदर करते और फरमाया करते कि तुम मेरे किब्ला गाह की जगह हो (तुम मेरे लिये अत्यन्त सम्मानित और मान्य हो)। फरमाया कि एक मरतबा मुजद्दिदी साहब ज़ादा (हजरत मुजद्दिद अल्फसानी रहम० के परिवार की एक सन्तान) सरहिन्द को हजरत मुजद्दिद अल्फसानी रहम० की मज़ार शरीफ़ की जियारत (दर्शन) के लिये जा रहे थे। उनके

ज़रिये मैंने अपना अस्सलाम हजरत मुजद्दिद अल्फसानी (रहम०) को भेजा। जब उन्होंने मज़ार पहुँचकर मेरा अस्सलाम कहा, हजरत मुजद्दिद (रहम०) ने सीना तक अपना सर मुबारक उठा दिया और फरमाया 'कौन ? मिरजा !' फिर फरमाया कि वह हमारा शेफ्ता (आशिक, प्रेमी) और दीवाना है। यह कहते हुये आपने मेरा अस्सलाम स्वीकार किया और मुझे बहुत बहुत अशीर्वाद दिया। वह मुजद्दिद साहब ज़ादा जब सरहिन्द से लौटे तो मुझसे बहुत ही अपना आभार प्रकट किया और फरमाया कि तुम्हारी वजह से मुझको जियारत (दर्शन) नसीब हो गई और इस घठना के बाद वह मेरी बहुत ताजीम (आदर) करने लगे।

हजरत मिरजा जान जाना (रहम०) ने हजरत शैख मुहम्मद आबिद (रहम०) की सेवा में सात वर्षों तक रहकर साधना को उच्चतम स्थिति को प्राप्त किया। हजरत शैख मुहम्मद (रहम०) का १६६० हिजरी में स्वर्गवास हो गया। उनके पश्चात हजरत मिरजा मजहर (रहम०) ने नक्शबन्दिया मुजद्दिदिया सिलसिले के प्रसार एवं प्रचार का कार्य स्वयम आरम्भ किया और आपकी अध्यक्षता में यह सिलसिला अपनी उन्नति की चरम सीमा पर पहुँच गया और इसी लिये यह सिलसिला 'नक्शबन्दिया मुजद्दिदिया मज़हरिया' के नाम से पुकारा जाने लगा। आपने ३५ वर्ष इस सिलसिले की सेवा करके इसमें नवीन जीवन तथा प्रकाश का संचार किया। कोई दिन ऐसा नहीं होता था कि जिस दिन कम से कम सौ ईश्वर भक्त मजहर (रहम०) की खानकाह (आश्रम) में न आते हों। शैख अब्दुल अदल जुबैरी कहा करते थे कि जितने ईश्वर भक्त मजहर (रहम०) की सेवा में उपस्थित होते हैं उतने अन्य किसी सूफी संत की सेवा में नहीं हैं। आप अपने समय में हजरत मुजद्दिद अल्फसानी (रहम०) के नायब हैं। आपकी ख्याति सुनकर सुदूरवर्त्ती क्षेत्रों से लोग आपकी खानकाह की ओर भागे चले आते थे। उस युग के सूफी और शैख

उनसे लाभान्वित होते थे। धर्म शास्त्र वक्ता और सदाचार परायण व्यक्ति आपकी खानकाह में एकत्र होते थे और ईश्वर भक्ति के सिद्धान्तों का अध्ययन करते थे। हजारों व्यक्तियों ने आपसे दीक्षा ली थी और आपके लगभग दो सौ खलीफा हर समय लोक कल्याण में लगे रहते थे।

इन खलीफाओं में से अत्यन्त प्रसिद्ध बाईस खलिफाओं का अत्यन्त संक्षिप्त विवरण "सूफी सन्त मिर्जा मजहर जान जाना (रहम०)"[1] नामक ग्रन्थ में दिया गया है। इनमें से हजरत मौलवी शाह नईमुल्लाह बहिराइची (रहम०) हजरत मिर्जा मज़हर जान जाना (रहम०) के सर्वश्रेष्ठ खलीफा थे। इनका पवित्र जीवन चरित्र अगले अध्याय में दिया गया है।

हिन्दू धर्म के प्रति आपकी विचार धारा

हम सभी इस तथ्य से अवगत हैं कि अधिकांश मुसलमान हिन्दुओं को इस कारण काफिर (एक ईश्वर पर विश्वास न करने वाला, नास्तिक) कहते हैं क्यों कि हिन्दू मूर्ति पूजक होते हैं। हजरत मजहर जान जाना (रहम०) ने मुसलमानों के हिन्दुओं के प्रति इस दृष्टिकोण का कठोर शब्दों में खण्डन किया और तर्क पूर्वक यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि हिन्दुओं को किसी दृष्टिकोण से काफिर नहीं कहा जा सकता। आप द्वारा उल्लिखित कुछ उद्धरण दिये जा रहे हैं जिससे कि आपका हिन्दुओं के प्रति उदार दृष्टिकोण का पता चलता है :—

'इन हिन्दुओं के धर्म के नियम और सिद्धान्त बड़े उत्तम हैं जिससे ज्ञात होता है कि यह धर्म नियमित रूप से प्रवर्तित हुआ था।

१. यह पुस्तक हजरत उमर, प्राध्यापक इतिहास विभाग, जामिया रूरल इन्स्टीट्यूट, नई दिल्ली द्वारा लिखी गई है। प्रकाशक—भारत-प्रकाशन मन्दिर अलीगढ़।

परन्तु तत्पश्चात निरस्त हो गया। हमारी शरीअत में यहूदी और ईसाई लोगों की धार्मिक पुस्तकों के अतिरिक्त किसी अन्य धर्म ग्रन्थों का उल्लेख नहीं पाया जाता है, यद्यपि इनके अतिरिक्त अनेक धर्म निरस्त हो चुके हैं और अनेक धर्मों का अस्तित्व पूर्ण रूप से संसार से लुप्त हो गया है। परन्तु यह बात ध्यान में रहे कि कुरआन के अनुसार "प्रत्येक धर्म-सम्प्रदाय देवदूत की परम्परा से अस्तित्व में है" अर्थात् 'प्रेत्येक मानव जाति का अपना एक रसूल होता है।" इस भारत की भूमि पर भी नबी और रसूल (अवतार) भेजे गये हैं, जिनका उल्लेख उनके धर्मग्रन्थों में मिलता है। उस उल्लेख से ज्ञात होता है कि वे उच्चकोटि के व्यक्ति थे। भगवान ने अपनी असीम दया कृपा से इस भूमि के निवासियों को कभी वंचित नहीं किया।

".....इसी प्रकार कुरआन की दूसरी एक आयत के अनुसार अर्थात "इनमें से कुछ (देवदूतों) का विवरण तुम्हारे सम्मुख उपस्थित किया गया और कुछ का नहीं"। जब हमारी शरीअत बहुत से देवदूतों के सम्बन्ध में मौन है तो हमको भी भारतीय देवदूतों के बारे में मौन धारण करना उचित है।.....परन्तु यदि साम्प्रदायिक द्वेष न हो तो उनके प्रति उच्च एवं उदार विचार रखना चाहिये। उनके मूर्ति पूजन का रहस्य यह है कि कुछ देवदूत जो भगवान की आज्ञानुसार संसार में अपना कुछ प्रभाव रखते हैं अथवा कुछ महापुरुषों की आत्माएँ, जिनका प्रभुत्व मानव जीवन में घुल मिल गया है अथवा कुछ ऐसे ऋषि-मुनि जो खिज्र नामक ईश्वरीय दूत के समान अमर हैं इनकी मूर्तियाँ या चित्र बनाकर उनकी ओर आकर्षित होते हैं और इस प्रकार उपास्य से अपना सम्बन्ध जोड़ लेते हैं और उन्हीं को अपना इष्ट देव मानते है। इनका यह कर्म 'ज़िक्र-राब्ता' के अनुकुल है, जो मुसलमान सूफियों में 'तसव्वुरे शैख' के नाम से सामान्य रूप से प्रचिलित है, जिसमें अपने गुरुदेव की आकृति का ध्यान किया जाता है और भगवान की ही अनुकम्पा

प्राप्त की जाती है। केवल अन्तर इतना ही है कि सूफी लोग अपने गुरु का चित्र नहीं बनाते। हिन्दू इन देवताओं को परमात्मा अथवा संसार का भगवान नहीं मानने। हिन्दुओं का इन देवताओं की मूर्तियों के आगे माथा टेकने का अर्थ यह नहीं कि वे उस मूर्ति को परमात्मा मानते हैं, अपितु सम्मान और आदर हेतु, जिस प्रकार वे अपने शिष्टाचार के अनुकूल माता-पिता और गुरु के सामने माथा टेकते हैं जिसको वे 'दण्डवत' कहते हैं और आवागमन पर विश्वास रखने पर उन्हें काफिर नहीं कहा जा सकता।"

हजरत मजहर जान जाना (रहम०) की हत्या

मुस्लिम समुदाय साधारणतः दो वर्गों में विभक्त है—(१) सुन्नी सम्प्रदाय, (२ शिया सम्प्रदाय। इस विभाजन के मुख्य कारणों की समीक्षा इस स्थान पर करना इसलिये आवश्यक प्रतीत होता है क्योंकि मजहर जान जाना (रहम०) की हत्या केवल साम्प्रदायिक मतभेदों के कारण हुई थी।

हजरत मुहम्मद साहब (सल्ल०) इस्लाम धर्म के प्रवर्त्तक थे। उनके स्वर्गारोहण के उपरान्त मुस्लिम जनता के सामने एक जटिल समस्या उत्पन्न हुई कि उनका उत्तराधिकारी कौन हो। हजरत मुहम्मद (सल्ल०) ने जनतन्त्र पद्धति को ही स्वीकार किया था। इस विधान के अनुसार मुस्लिम जनता जिस व्यक्ति को निर्वाचित करे वही खलीफा (उत्तराधिकारी) बन सकता था। परन्तु उस समय मुसलमानों में एक ऐसा वर्ग उत्पन्न हो चुका था जिसके मतानुसार हजरत मुहम्मद सल्ल० के बाद उनका कोई सम्बन्धी ही उनका उत्तराधिकारी अर्थात् खलीफा हो सकता था। वे लोग इस मामले में जनतन्त्र पद्धति में विश्वास नहीं करते थे। हजरत मुहम्मद (सल्ल०) ने अपने पीछे कोई पुत्र नहीं छोड़ा था अतः उनके पुत्र के उत्तराधिकारी बनने का प्रश्न ही नहीं उठता। अतः उनके जामाता

हजरत अली (रजि०) का प्रश्न प्रस्तुत हुआ। यह दल हजरत अली (रजि०) का अनुयायी और समर्थक था। यही दल आगे चलकर 'शिया' कहलाया। परन्तु हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के देहावसान के बाद ही एक दूसरे शक्तिशाली वर्ग ने जो बहुमत में था हजरत मुहम्मद साहब (सल्ल०) के श्वसुर हजरत अबू बक्र सिद्दीक (रजि०) को खलीफा घोषित कर दिया। (यही दल आगे चलकर 'सुन्नी' कहलाया)। फलस्वरूप हजरत अली (रजि०) खलीफा नहीं बन सके। इसीलिये उस समय से सुन्नी और शिया सम्प्रदायों में द्वेष भाव विशेष रूप से चला आता है।

हजरत अबू बक्र (रजि०) के बाद क्रमशः हजरत उमर (रजि०) और उनके बाद हजरत उस्मान (रजि०) खलीफा हुये। इसी पारस्परिक संघर्ष के कारण जैसा कि अधिकांश इतिहासकारों का मत है हजरत उस्मान (रजि०) की हत्या हजरत अली (रजि०) के साथियों के हाथों हुई और अन्त में हजरत अली (रजि०) चतुर्थ खलीफा हुये। उनकी मृत्यु के पश्चात शिया सुन्नियों के मतभेद ने उग्ररूप धारण कर लिया। शियाओं ने पूर्ववर्त्ती तीन खलीफाओं को अपहरण कर्त्ता घोषित करके उनका खंडन शुरू कर दिया। सुन्नी मुसलमानों की दृष्टि में इन तीनों सम्मानित वीरों का शियाओं द्वारा तिरस्कार महान अपराध था परन्तु अन्य धार्मिक सिद्धान्तों में इन दलों के बीच अभी तक कोई विशेष मतभेद नहीं था।

करबला के संघर्ष में, जो हजरत अली (रजि०) के पुत्रों (इमाम हसन और इमाम हुसैन रजि०) एवं उनके सम्बन्धियों तथा हजरत मुआविया (जो सुन्नी थे) के पुत्र मजीद के बीच हुआ, हजरत अली (रजि०) के पुत्रों एवं सम्बन्धियों की निर्मम हत्या हुई। करबला की इस दुखद घटना ने शियाओं के हृदय में प्रतिहिंसा को उग्र रूप में भड़का दिया।

मुस्लिम शासन काल में, भारतवर्ष में इन दोनों सम्प्रदायों के बीच आन्तरिक रूप से संघर्ष होते रहे और सुन्नी शासकों ने शियाओं का जिनको वे अपना शत्रु और प्रतिद्वन्दी समझते थे सदैव बर्बरता से दमन किया। भारतवर्ष में शिया सम्प्रदाय का जोर बाबर और हिमायूँ के शासन काल से अधिक बढ़ गया था क्योंकि उन्होंने फारस के शासकों की सहायता से भारतवर्ष पर विजय प्राप्त की थी। जहाँगीर की पत्नी नूरजहाँ जो शिया थीं के कारण इस सम्प्रदाय को राजकीय महत्व मिला और इस प्रकार उस युग की राजनीति में उनका पर्याप्त प्रभाव बढ़ गया। फर्रुख शियर के शासनकाल में इस सम्प्रदाय के लोगों ने शासन में अपनी सत्ता स्थापित कर ली। सारांश यह कि १८ वीं शताब्दी में शियाओं का उत्तरी भारत में अत्यधिक जोर हो गया था। मुगल शासन क्षीण हो चुका था और इस सम्प्रदाय के बढ़ते हुये प्रवाह को रोकना असम्भव हो गया था।

शिया-सुन्नी मतभेद और शत्रुता का उपरोक्त उल्लेख इसलिये किया गया क्योंकि शिया सम्प्रदाय के हाथों हजरत मजहर जान जाना (रहम०) की हत्या हुई थी। 'तजकिरा गुलशने हिन्द' के लेखक ने इस हत्या से सम्बन्धित घटना का वर्णन अपनी इस पुस्तक में इस प्रकार किया है :—

'मुहर्रम की सातवीं तारीख को मजहर (रहम०) अपने मकान के छज्जे पर विराजमान थे। एक रोहेला सरदार, जो शिया था, उनसे भेंट करने आया था। अकस्मात उनके छज्जे के नीचे से शुद्दे (झंडे) निकले। उस रोहेला सरदार ने हजरत हसन और हुसैन के शोक में अपनी छाती पीटी और नत मस्तक हुआ। हजरत मजहर (रहम०) जिस शान से विराजमान थे उसी प्रकार बैठे रहे और मुस्कुरा कर बोले "जिस घटना को घटित हुये १२०० वर्ष व्यतीत

हो चुके हैं, उसको हर वर्ष तीव्र करना निषिद्ध है और लकड़ियों को पूजना और उनके समक्ष नतमस्तक होना मूर्खता है।" इस कथन को उन लोगों ने सुना जो शुद्दे और अलम (झंडे) लेकर जा रहे थे। हजरत मज़हर (रहम०) के इस कथन पर शिया लोगों ने दो तीन दिनों तक वाद-विवाद किया। अन्त में मुहर्रम की दसवीं तारीख को एक शिया उनके निवास-स्थान पर आया और उनको बाहर बुलाया। द्वारपालों ने कुछ लोगों के आने की सूचना हजरत मजहर (रहम०) को दी। आपने उनको भीतर बुला लिया। तीन व्यक्ति भीतर गये। उनमें से एक आदमी ईरानी मुगल था। हजरत मजहर (रहम०) विश्रमालय से आकर उनके सामने खड़े हो गये। उस मुगल ने पूछा, "आप ही मिरजा मजहर जान जाना हैं?" अन्य दो व्यक्तियों ने उत्तर में कहा "हाँ, यही मिरजा जान जाना हैं।" उस अभागे ने आप पर तमंचों से गोली मारी जो उनके हृदय के निकट दाईं ओर लगी। चूँकि आप वृद्ध और कमजोर थे, गोली लगते ही जमीन पर गिर पड़े। इस घटना का समाचार बिजली की भाँति नगर में फैल गया। वैद्य आये। दूसरे दिन प्रातः काल नवाब नजफ खाँ ने एक अंग्रेज डाक्टर भेजा परन्तु औषधियों से कोई लाभ नहीं हुआ। तीसरे दिन जुमे के दिन दशम मुहर्रम, ११९५ हिजरी को मग़रिब की नमाज के समय उन्होंने अपना पार्थिव शरीर त्याग दिया।" शरीरान्त के पूर्व सम्राट शाह आलम को जब आपके घायल होने का समाचार मिला तो उसने बड़ा खेद प्रकट किया और आपको संदेश भेजा कि हत्यारे की खोज हो रही है, मिल जाने पर उसे कठोर दण्ड दिया जायेगा। आपने उत्तर भेजा कि 'शरीअत में यह लिखा है कि यदि कोई जीवित व्यक्ति की हत्या करे तो उससे बदला लेना चाहिये, पर मुझ जैसे व्यक्ति को मारने वाले से बदला क्या होगा? क्योंकि मेरी गणना तो बहुत समय से मरे हुओं में है। यदि अपराधी पकड़ा जाये तो उसको मेरे

पास भेज दिया जाये ताकि मैं उसको धन्यवाद दूँ और क्षमा कर दूँ।

आपके जनाजे (अर्थी) को हजरत बीबी साहेबा की हवेली में दफनाया गया। आज वह स्थान 'चितली कबर' के नाम से प्रसिद्ध है।

वसीयत नामा

हजरत मजहर जान जाना (रहम०) पूर्ण रूप से सावधान थे। उस ज़माने की जैसी प्रथा थी कि शैख (गुरुदेव) के देहावसान के पश्चात उनके मुरीद उनकी अन्त्येष्टि बड़े धूम धाम से करते थे और उनकी समाधि पर उर्स (भंडारे) का उत्सव मनाते थे, इसलिये उन्होंने मरते समय अपने शिष्यों के लिये यह सन्देश छोड़ा—

(१) उनकी अन्त्येष्टि में पूर्ण रूप से सुन्नत का पालन हो।

(२) उनकी समाधि पर उर्स का उत्सव न मनाया जाये, क्योंकि मज़हर (रहम०) ने अपने जीवन काल में इन प्रथाओं का कठोरता से विरोध एवं खंडन किया था।

(३) आजीवन सुन्नत का पालन करें। परमात्मा के अतिरिक्त किसी अन्य जीवित अथवा मृत व्यक्ति के आगे अपनी आवश्यकताओं की पूर्त्ति के लिये हाथ न पसारें। सूफी सन्तों के सिद्धान्तों का पालन करें। सांसारिक व्यक्तियों से पृथक रहें।

(४) अन्त में उन्होंने कहा कि मनुष्य को सदैव अध्यात्म ज्ञान तथा धर्म-साधना में लीन रहना चाहिये।

मुस्लिम जनता को मज़हर (रहम०) का अंतिम सन्देश—

मृत्यु के समय मजहर (रहम०) को सबसे बड़ी चिंता यह थी कि मुस्लिम समुदाय, जो हजरत मुहम्मद साहब (सल्ल०) द्वारा दिखाये गये मार्ग से विचलित हो गया था, उसे पुनः उसी मार्ग पर

कैसे लाया जाये ? अतः उन्होंने तत्कालीन मुसलमानों को सम्बोधित करते हुये कहा—"हे मुसलमानों, अपने जीवन को हजरत मुहम्मद साहब (सल्ल०) के कथनानुसार रंग लो, पवित्र जीवन बिताओ और निषिद्ध कार्यों से अपने आप को बचाओ। सांसारिक सामग्रियों के संग्रह से विमुख रहो और जहाँ कहीं भी हो यह समझो कि भगवान तुम्हारा साक्षी एवं आश्रय दाता है। मशायख़ (सतगुरु जनों) की टोह में रहो और उन पर पर्वत के समान अचल श्रद्धा और विश्वास रक्खो। निस्पृहता से जीवन निर्वाह करो और किसी के सामने भिखारी की तरह हाथ न फैलाओ।" (हजरत मजहर जान जाना (रहम०) का यह सन्देश केवल मुसलमानों के लिये ही नहीं वरन् सभी धर्मों एवं सम्प्रदायों के अनुयायिओं के लिये उपयोगी तथा प्रेरणादायक है)।

हजरत मजहर (रहम०) की आदतें, स्वभाव एवं सदगुण

आप वुजू बड़ी सावधानी एवं नियमानुसार करते थे और निर्धारित शरीर के अंगों को भली भाँति धोते थे। वुजू के बारे में आप इतने सचेत थे कि अपने मुरीदों को हर समय वुजू से रहने के लिये बाध्य करते थे तथा विशेष रूप से भोजन करते समय और सोने के लिये जाते समय। वह फरमाते थे कि जिस समय वुजू भंग हो जाय, उसी क्षण शीघ्रता से पुनः वुजू करना चाहिये। पाँच समय (प्रातः, मध्याह्न, तीसरे पहर, संध्या और रात्रि) की नमाजों को नियमित समय पर जमाअत के साथ पढ़ते थे। तहज्जुद की नमाज के लिये आप आधी रात को या उससे थोड़ी देर बाद को सोकर उठ बैठते थे। कुछ दुआएँ पढ़कर वुजू करते और तत्पश्चात दो रकअत नमाज क्षमा याचना के रूप में पढ़ते थे। इसके बाद दस रकअत नमाज उच्च स्वर से बड़ी आयतों के साथ पढ़ते थे। तत्पश्चात शिष्यों को भक्ति मार्ग की शिक्षाएँ देते थे। यदि काफी

रात बाकी होती तो थोड़ा सा विश्राम करते। प्रातःकाल की नमाज से पहले उठकर वुजू करते और जमाअत के साथ नमाज पढ़ते। उसके बाद अपने शिष्यों के साथ मराकबा में बैठते। यह कार्यक्रम ४ घड़ी दिन तक नियमित रूप से चलता रहता था।

आप बाल्यावस्था से ही सुन्नत का कठोरता से पालन करने लगे थे। आप स्वयं फरमाते हैं कि 'एक दिन मेरे पूज्य पिताजी मुझे अपने दीक्षा गुरु के दर्शन को ले गये। उस दिन अकस्मात उनके गुरुदेव की उनके संगीत-जन्य उन्माद के कारण अस्र और मग़रिब की नमाज छूट गई थी। मैंने अपने पिताजी के गुरुदेव को इस दशा में देखकर अपने मन में कहा कि यदि मेरे पिताजी मुझसे इन्हें गुरु बनाने को कहते तो मैं उनके प्रस्ताव को अस्वीकार कर देता।'

एक अवसर पर आपने अपने गुरुदेव हजरत नूर मुहम्मद बदायूनी (रहम०) के जूते अपने हाथों से सीधे रख दिये। जब उनके गुरुदेव को यह बात मालूम हुई तो वह बड़े अप्रसन्न हुये। आपने सविनय उत्तर दिया, "मैंने इसमें क्या बुरा किया? यह तो सुन्नत के अनुकूल है। हजरत मुहम्मद साहब (सल्ल०) के भक्त भी तो ऐसा ही करते थे।

आपके उच्च आदर्श आचरणों के कारण उस युग के सभी लोग उनका दिल से आदर एवं सम्मान करते थे। कहा जाता है कि हजरत शैख मुहम्मद आबिद (रहम०) जिनका जिक्र ऊपर आ चुका है, एक अवसर पर आपके घुटने को चूम कर बोले, 'मुझे ऐसा अनुभव होता है कि इस समय दो सूर्य (महान भक्त) एक दूसरे के आमने सामने विराजमान हैं और मुझे तुममें और अपने में कोई भेद दृष्टिगत नहीं होता। शाह वली उल्लाह देहलवी (रहम०) जो पुस्तकीय ज्ञान और अध्यात्म ज्ञान के भंडार थे, आपके लिये अपने पत्रों में उच्च उपाधियों का प्रयोग करते थे। एक अवसर पर

उन्होंने कहा था 'मजहर (रहम०) के समान कोई अन्य व्यक्ति संसार भर में उपलब्ध नहीं है।'

आपके स्वभाव में सहनशीलता और क्षमाशीलता पूर्ण रूप से व्याप्त थी। इससे बढ़कर क्षमाशील प्रकृति का उदाहरण और क्या हो सकता है कि उन्होंने अन्त में अपने हत्यारे को भी क्षमा कर दिया।

आप सत्य भाषी, विनम्र और स्नेही स्वभाव के थे। आप अपने शिष्यों और प्रशंसको के लिये उत्तम गुणों के आदर्श थे। आपका निजी जीवन सामान्य मनुष्यों के ही समान था। सर्व-साधारण की तरह आप पगड़ी बाँधते थे। आपकी कमीज सामने से फटी होती थी।

आपका सर्वोत्तम गुण जो अनेक भक्तों को आपकी ओर आकृष्ट करता था वह था—घृणा तथा वर्ग भेद का अभाव। अतएव आपकी सेवा में प्रत्येक वर्ग के लोग अपनी समस्याओं को लेकर उपस्थित होते थे और आप उनको हर प्रकार से सन्तुष्ट करने का प्रयत्न करते थे। आप शिक्षित एवं विद्वानों का अच्छा सम्मान करते थे।

आप अपने तवक्कुल ईश्वर पर भरोसा एवं आत्म-संयम के गुणों में अद्वितीय थे। कहा जाता है कि एक बार मुहम्मद शाह बादशाह ने अपने प्रधान मंत्री कमरुद्दीन खाँ के द्वारा, मजहर को सन्देश भेजा कि, "भगवान ने अपनी असीम कृपा से मुझे भारतवर्ष का राज-पाट दिया है। आपकी जो कुछ मनोकामना एवं इच्छा हो, इस राज्य से तुच्छ भेंट के रूप में स्वीकार कर लीजिये।" आपने उत्तर में कहला भेजा, "कुरआन के लेखानुसार उस भगवान के ऐश्वर्य के सामने सातों महाद्वीपों की धन-राशि भी अपर्याप्त है जबकि तुम्हारे पास केवल हिन्दुस्तान ही का धन है। तुम्हारे पास क्या है जो तुम इस फकीर को भेंट करना चाहते हो।" कहा जाता है कि एक सामन्त

ने आपके निवास-भवन, और खानकाह निर्माण कराने की अनुमति माँगी। आपने उसकी इस प्रार्थना को ठुकरा दिया और फरमाया कि ऐहिक जीवन बिताने के लिये अपने और पराये के मकान में क्या भेद एवं अन्तर है? फकीरों के लिये धैर्य्य एवं निरीहिता ही परमावश्यक गुण हैं।

एक दिन जाड़े के दिनों में आप एक पुरानी चादर ओढ़े हुये एक सभा में विराजमान थे। संयोग से उस सभा में नवाब फीरोज जंग जो अपने समय का एक प्रतिभाशाली एवं शक्तिशाली सामन्त था, उपस्थित था। आपकी उस दरिद्रता को देखकर उसके नेत्रों में आँसू भर आये। उसने अपने एक साथी से कहा, "हम पापी कितने अभागे हैं कि इतना महान सन्त जिसके प्रति हमें श्रद्धा एवं अनुराग है, हमारी भेटों को भी स्वीकार नहीं करता।" आपने उस वार्त्तालाप को सुनकर उत्तर दिया, "मैंने यह संकल्प कर लिया है कि अमीरों (सामन्तों) के उपहारों को स्वीकार नहीं करूँगा।"

एक मरतबा नवाब निजामुल्मुल्क आसिफजाह ने तीस हजार रुपये भेंट के रूप में आपकी सेवा में भेजे। आपने अस्वीकार कर दिये। तब उसने दुबारा उन रुपयों को आपकी सेवा में भेजते हुये आपसे निवेदन किया कि 'आप कृपया इसे जरूरत मन्द लोगों में वितरित करा दें'। आपने कहला भेजा 'मैं तुम्हारा खानसामा तो हूँ नहीं कि इस धन को जरूरतमन्द लोगों में बाँटता फिरूँ। तुमही इस द्रव्य को भगवन्मार्ग में लगे व्यक्तियों की आवश्यकता-पूर्त्ति के लिये बाँट दो।'

इसी प्रकार एक अफगान सरदार ने ३०० अर्शफियाँ भेजीं और एक सामन्त ने आम भेजे, परन्तु आपने इन भेटों को स्वीकार नहीं किया। इन भेंटों के स्वीकार न करने के कारणों पर आप स्वयं प्रकाश डालते हैं। वे कहा करते थे कि सामन्त गण प्रजा पर

अत्याचार करके उनसे बलपूर्वक धन छीनते हैं। यदि उनके इस अपवित्र धन को स्वीकार किया जाता है तो प्रलय के दिन भगवान के समक्ष इसका उत्तर देना होगा और उसके कोप का भाजन बनना पड़ेगा। ऐसे धन का प्रयोग करने से सूफियों का हृदय मलिन और अन्धकार मय हो जाता है। यही नहीं कि आप धनवानों और सामन्तों कीं भेंटों को स्वीकार नहीं करते थे, बल्कि आप निर्धनों तथा साधारण व्यक्तियों की भेंटों को भी अस्वीकार कर देते थे। आपका विचार था कि वे लोग ब्याज पर रुपया लेकर भेंट करते थे और सूफी सन्तों के आशीर्वाद को प्राप्त करने के लिये उन्हें भोजन के लिये आमन्त्रित करते थे। कहा जाता है कि एक अवसर पर एक व्यक्ति ने जो रसायन शास्त्र का वेत्ता था और जिसने नक्शबन्दिया सिलसिले में दीक्षा ली थी, एक तोला सोना बनाकर आपकी सेवा में भेंट किया। परन्तु आपने इस भेंट को स्वीकार नहीं किया।

भेंट स्वीकार करने के सम्बन्ध में आपकी ये शर्तें थीं :-(१) भेंट देने वाला व्यक्ति कुलीन हो। (२) वह सांसारिकता में लिप्त लोगों से मिलता जुलता न हो। (३) वह उपकारी एवं संयमी हो। (४) हराम-हलाल का अन्तर जानता हो। (५) उसका धन अत्याचार द्वारा प्राप्त न हो। (६) वह निर्मल हृदय और भक्ति भाव से भेंट लाया हो।

इस प्रकार हजरत मजहर जान जाना (रहम०) ने आजीवन तवक्कुल के उत्तम सिद्धान्तों का पूर्ण रूप से अनुसरण किया और किसी भी व्यक्ति के सामने अपनी आवश्यकता की पूर्त्ति के लिये हाथ नहीं फैलाया। यह सब कुछ इसलिये था कि हजरत मजहर जान जाना (रहम०) का ईश्वर पर अचल एवं अडिग विश्वास था। अतः भगवान आपकी प्रत्येक आवश्यकता की पूर्त्ति करता रहता था।

आपकी अमृत वाणी (उपदेश)

फरमाया कि इस तरीके में पीरी व मुरीदी केवल बैअत (गुरु दीक्षा), व शिज्रः (गुरु परम्परा की वंशावली) व कुलाह (टोपी) से नहीं है, बल्कि मुर्शिद (सतगुरु) की सोहबत में ईश्वर का सतत चिंतन एवं चित्त की एकाग्रता के साथ जिक्र कल्बी (हृदय से जप करना) जरूरी है।

फरमाया कि मन में कोई दुर्विचार उत्पन्न होने पर सतगुरुदेव की सूरत को सामने लाकर अत्यन्त गिड़गिड़ा कर दीनता के साथ ईश्वर से उसे दूर करने के लिये प्रार्थना करनी चाहिये। इज्ज़ व इन्कसार (विनीत भावना एवं दीनता) की सिफत पैदा करना चाहिये और खल्क (दुनिया) की जफा (अन्याय) व क़जा (इन्साफ) पर सब्र व तहम्मुल (धैर्य्य व सहिष्णुता) की आदत डालनी चाहिये।

फरमाया कि नजर बन्द रखनी चाहिये। मजाजी आमूर (दुनियाँ वालों के व्यवहारों) को तकदीर से समझकर चूँ व चरा (वाद-विवाद, कहा सुनी) नहीं करना चाहिये। हजरत उन्स (रजि०) हजरत पैगम्बर (सल्ल) के खादिम (सेवक) थे। अगर किसी काम में उनसे कोई गल्ती हो जाती और घर वाले उनको झिड़कते तो आप फरमाते कि उनको कुछ मत कहो, अगर तकदीर से होता तो ऐसा ही होता। फरमाया सभी कष्टों को भोगना हजरत रसूल अल्लाह (सल्ल०) की विशेषताओं के अनुकूल तहजीब (शिष्टता) एवं एखलाक (सदाचरण) है। फरमाया कि हदीस शरीफ में इस बात का उल्लेख है कि 'अगर तुम यह सुनो कि कुहा पहाड़ अपनी जगह से हट गया है तो उसका यकीन करलो, और अगर यह सुनो कि कोई आदत हैली (जोरदार आदत) से लौट गया है उसका यकीन न करना। हजरत उमर फारूक (रजि०) फरमाया करते थे कि मेरा गुस्सा गया नहीं। पहिले कुफ्र में सर्फ होता था अब हिमायत इस्लाम में ज़ाहिर होता है।

फरमाया कि खाने पीने सोने जागने व आराधना व साधना आदि सभी कार्यों में तवस्सुत (मध्य का मार्ग) व एतलाद (संतुलन) बहुत मुश्किल है कि कोशिश करना चाहिये हर समय हमारे सभी आचरण सुन्नत (हजरत पैगम्बर सल्ल० द्वारा किये गये कर्मों व आचरणों) के अनुसार ही सम्पादित हों और पैगम्बरों का इत्तबा (अनुसरण) तवस्सुत व एतदाल हाजिर करने के वास्ते होता है (व्यवहारों व कार्यों में मध्य का मार्ग तथा संतुलन प्रकट करने के लिये होता है।)

फरमाया कि मुब्दए फैयाज (ईश्वर की ओर उन्मुख करने वाला अर्थात सतगुरुदेव) की तरफ हर वक्त मुतवज्जेह रहने से इस कदर फैज व बरकात (बाख्शिशें, उपहार) नाजिल होती हैं (उतरती हैं) कि बातिन (अन्तःकरण) अनवार कैफियत (आत्मिक अनुभूतियों एवं आनन्द के प्रकाश पुंजों) से लबरेज होकर (पूर्ण रूप से भर कर) छलकने लगता है। फरमाया कि तसव्वुर आमाल पेशे नजर रखना चाहिये (अपने कर्मों पर दृष्टि रखनी चाहिये अर्थात सावधानी पूर्वक यह निरीक्षण करते रहना चाहिये कि हमसे कौन से गुनाह हो रहे हैं और उनके लिये दिली तौबा करते रहना चाहिये) और साबिका इनायत (पिछली दया-कृपाओं) को बेइल्लत देखना चाहिये (जो कुछ भी हम पर ईश्वर और गुरू की कृपाएँ हुई हैं उनको अहेतुकी कृपा समझना चाहिये अर्थात यह विचार दिल में न आना चाहिये कि हमारी किसी साधना, आराधना अथवा सतकर्मो के फलस्वरूप यह कृपाएँ हम पर हुई हैं)। हरचन्द कि अमल बहुत करे लेकिन सिफत इश्तिगना और किब्रियाई इलाही से खैफ रहना चाहिये (यद्यपि साधना सम्बन्धी चाहे जितने अधिक अभ्यास एवं सतकर्म करे लेकिन परमात्मा की निस्पृहता एवं महानता से डरते रहना चाहिये।) और उज्र तक्सीर (अत्यधिक विवशता) और उम्मीद (ईश्वर की अहेतुकी कृपा पर भरोसा व आशा रखना) व अश्क (अपने गुनाहों

के लिये रोते हुये क्षमा माँगते रहना) कुबूलियत का वसीला समझना चाहिये (ईश्वर व गुरु का कृपा पात्र बनने का ज़रिया अर्थात माध्यम समझना चाहिये)। थोड़े गुनाह को बहुत जाने और थोड़ी नेमत (ईश्वर कृपा से प्राप्त कोई वस्तु, उपहार, या लाभ) को बहुत समझे और शुक्र व रज़ा को अख्तियार करे (प्रत्येक दशा में ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिये और उसकी प्रसन्नता में अपने को प्रसन्न रखना चाहिये। इसी को सूफी मत में 'राज़ी बरज़ा' कहते हैं।

फरमाते कि हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नख्शबन्द (रहम०) हब्स नफ्स को (साँस रोकने को) जिक्र (जप) के लिये आवश्यक नहीं समझते थे। हाँ, इसे लाभदायक कहते थे। लेकिन दवामे जिक्र (निरन्तर जप करना) और वकूफ क़ल्बी (हृदय में उत्पन्न होने वाली दशाओं एवं अनुभवों से अवगत रहना) और सतगुरु की ओर ध्यान लगाये रहना इन बातों को रुक्न तरीका (इस सिलसिले की साधना पद्धति का स्तम्भ) समझते थे। फरमाया कि मुखालिफत नफ्स (मन का विरोध) जिस कदर हो सके जेबा (उचित) है लेकिन इस कदर भी नहीं कि नफ्स तंग आ जाये और इबादत (आराधना) में शौक न रहे। कभी-कभी नफ्स से मुआफकत भी करना (उसकी इच्छा को पूरा करना) चाहिये कि रज़ाए नफ्स (मन की प्रसन्नता) मूजिब सवाब पुण्य का कारण होता है। (परन्तु साधक को इस बात से सदैव सावधान रहना चाहिये कि धर्मशास्त्र द्वारा निर्धारित नियमों के विरुद्ध कोई काम मन की प्रसन्नता के लिये न करना चाहिये)। फरमाया कि स्वादिष्ट भोजन को पानी वगैरह मिलाकर बेमज़ा (अस्वादिष्ट) करना नियामते इलाही को ख़ाक में मिलाना है, फरमाया कि किसी भी व्यक्ति को घृणा की दृष्टि से न देखे और अपने आपको हर एक से तुच्छ और दीन समझे। आज के कार्य को कल्ह पर न छोड़ना चाहिये। सभी उपदेशों एवं शिक्षाओं का एकमात्र लक्ष्य आचरण सुधार है। राह मौला में किब्र (अपने को श्रेष्ठ समझने की

भावना) और गुरूर (घमंड) सर से दूर कर। इसी वजह से कहा गया है कि दरवेशी (साधुता) यह है कि जो कुछ सर में हो वह रख दे (यानी घमंड त्याग दे) और जो सर पर आये उससे कभी भी गुरेज (नफरत, घृणा) न करे अर्थात जो कुछ भी कष्ट या विपत्ति आये उस पर धैर्य्य धारण करे। कल्ह की चिन्ता से अपने को मुक्त कर। अपनी अच्छी आदतों और ईश-आराधना पर दिल में अहंकार न ला। अपने दुर्गुणों को देखने तथा अपने को अकिंचन समझने की भावना को अपनी सम्पत्ति बना।

आपके कश्फ व करामात (चमत्कार)

आपके कश्फ व करामात अत्यधिक है। उनमें से कुछ प्रसाद रूप में दिये जा रहे हैं—

एक महिला आपसे अपने मकान पर ग़ायबाना (परोक्ष में) तवज्जेह लेती थी। उसका नियम था कि जिस वक्त मुतवज्जेह होकर बैठा करती एक आदमी आपकी खिदमत में इत्तला को भेज देती थी। आप तवज्जोह फरमाया करते। एक रोज वह आदमी अपनी तरफ से खुद आ गया और कहा कि बीबी साहिबा मुतवज्जेह बैठी हैं (ध्यान लगाये बैठी हैं)। आपने थोड़ा मौन रह कर फरमाया कि नहीं, वह तो सोयी हैं। और तू उनके हुक्म से नहीं आया। वह शख्स अपनी गल्ती पर अत्यन्त लज्जित हुआ और क्षमा याचना की।

एक शख्स ने आपसे से आकर अर्ज किया कि मेरा भाई अमुक स्थान पर कैद हो गया है। आप हिम्मत और तवज्जोह फरमाइये कि उसकी रिहाई हो जाये। आपने सुकूत करके (मौन होकर) फरमाया कि वह कैद नहीं हुआ। दलालों से कुछ झगड़ा हो गया है लेकिन खैरियत गुजरी है। उसने अपने हाल का खत भेजा है। कल्ह परसों वह खत आजायेगा, अतएव ऐसा ही हुआ। एक बार एक बद चलन औरत की कब्र पर जाने का संयोग हुआ। आपने फरमाया कि इस

कब्र में दोज़ख (नर्क) की आग जल रही है। आपने कृपाकर उस औरत के कल्याण के लिये प्रार्थना की। तत्काल उसी समय उसकी नजात (मुक्ति) हो गई। कहा जाता है कि आपका एक पड़ोसी था। वह एक गम्भीर बीमारी से पीड़ित हो गया और उसका अन्त समय निकट आ गया। आपने उसके वास्ते दुआ की और कहा कि 'ऐ खुदा' मुझको इसके मौत का ग़म (दुख) बरदास्त करने की सामर्थ्य नहीं है। उसको स्वस्थ करदे। अल्लाह तआला ने आपकी दुआ कुबूल की और वह स्वस्थ हो गया।

कहा जाता है कि एक औरत ने आपका दामन पकड़ लिया और अर्ज किया कि मेरी लड़की के कोई सन्तान नहीं है। जब तक आप मेरी लड़की के लिये एक पुत्र का अशीर्वाद नहीं देगें आपका दामन नहीं छोड़ूँगी। आपने कुछ देर मौन रहने के बाद फरमाया 'ईश्वर इच्छा से तेरी लड़की के बेटा पैदा होगा।' अतएव ईश्वर की कृपा से ऐसा ही हुआ। वह लड़का जब जवान हुआ उसने तरीका चिश्तिया में दाखिल होना चाहा। रातको उसने हजरत ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबन्द (रहम०) को देखा। उन्होंने फरमाया कि बेटा हमारे घर से कहाँ जाते हो और उस पर तवज्जोह फरमायी कि उसका दिल ज़ाकिर हो गया। हजरत मजहर जान जाना (रहम०) की खिदमत में आकर वह तरीका नक्शबन्दिना में दाखिल हुआ।

हजरत मजहर (रहम०) एक कवि के रूप में

हजरत मजहर जान जाना (रहम०) एक उच्च कोटि के कवि थे। आप दिल्ली के प्रख्यात गद्य तथा पद्य लेखकों में से थे। आप युवा अवस्था में काव्य रचना में लीन रहते थे, परन्तु अन्त में इस कार्य को आध्यात्मिक उन्नति के लिये बाधक समझ कर छोड़ दिया। आप फारसी में भी कविताएँ करते थे। आपका फारसी में काव्य

संग्रह 'खरीता-ए-जवाहर' के नाम से हस्त लिपि के रूप में उपलब्ध है, जो अभी प्रकाशित नहीं हुआ। आपकी उर्दू कविताओं का कोई संग्रह उपलब्ध नहीं है। हाँ, उनकी फुटकर कविताएँ तज़किरा (सूफी सन्तों के जीवन चरित्र) में मिलती हैं। उनमें से कुछ नीचे दी जा रही हैं :—

१—हमने की है तौबा[१] और धूमें मचाती हैं बहार।
हाय कुछ चलता नहीं, क्या मुफ्त जाती है बहार॥
लाला[२] बगुल ने हमारी ख़ाक पर डाला है शोर।
क्या क़यामत है मरों को भी सताती है बहार॥
हम गिरफ्तारों को अब क्या काम है गुलशन में लेक[३]।
जी निकल जाता है जब सुनते हैं आती है बहार॥

२—रुस्वा[४] अगर न करना था आलम में यों मुझे।
ऐसी निगाह नाज़ से देखा था क्यों मुझे॥

३—मत इख्तिलात[५] कर ऐ नौ बहार अब हम से।
चमन के होने का इस ख़ाक को दिमाग नहीं॥

४—गर्चे अल्ताफ[६] के काबिल यह दिलेज़ार[७] न था।
इस कदर जोर-व-ज़फा[८] का भी सज़ावार न था॥

५—तौफीक दे कि शोर से एक दम तू चुप रहे।
आखिर मेरा दिल है इलाही जरस[९] नहीं॥

६—खुदा को अब तुझे सौंपा था अरे दिल।
यहाँ तक थी हमारी जिन्दगानी॥

---

१. प्रायश्चित, २. एक पुष्प, ३. लेकिन, ४. निन्दित, ५, मिलन, ६ स्नेह, ७, दुःखी, ८. दण्ड, ९. घंटा।

७—ये दिल कब इश्क के काबिल रहा है।
कहाँ इसको दिमाग व दिल रहा है॥
खुदा के वास्ते इसको न टोको।
यही एक शहर में क़ातिल रहा है॥
८—कभी इस दिल ने आज़ादी न जानी।
यह बुलबुल था क़फ़स[1] का आशियानी॥

हजरत मजहर जान जाना (रहम०) की उपर्युक्त कविताएँ पढ़ने के बाद यह तथ्य स्पष्ट रूप से प्रकट होता है कि आपकी कविताएँ ईश्वरीय प्रेम से ओत प्रोत थीं। उनमें लौकिक प्रेम की गन्ध तक नहीं थी।

•

हजरत मौलवी शाह नईमुल्लाह बहिराइची (रहम०)

हजरत मौलवी शाह नईमुल्लाह बहिराइची (रहम०), जो बहिराइच के निवासी हैं, हजरत मिर्जा मजहर जान जाना (रहम०) के सर्वश्रेष्ठ खलीफाओं में से थे। आप चार साल तक मिर्जा मजहर साहब (रहम०) की सोहबत में रहे। हजरत मिर्जा (रहम०) फरमाया करते कि तुम्हारी चार साल की सोहबत औरों की बारह साल की सोहबत के बराबर है। हजरत मिर्जा साहब आप पर विशेष कृपा दृष्टि रखते थे और फरमाते थे कि तुम्हारे आत्मिक प्रकाश और सत्संग के प्रभाव से एक आलम (संसार) मुनव्वर (प्रकाशित) होगा। और ऐसा ही हुआ। हजरत ने आपको गुरु पदवी का अधिकार तथा

१. पिंजड़ा

खिलाफत प्रदान करते समय हजरत इमाम रब्बानी मुजद्दिद अल्फ सानी (रहम०) के पत्रों का संकलन प्रदान किया और फरमाया कि जो दौलत अर्थात पत्र मैंने तुमको दिये हैं वह किसी मुरीद को नहीं दिये। इस नेमत का शुक्र और क़द्र करना चाहिये। यह तुम्हारे वास्ते जाहिर व बातिन का एक खजाना है और अगर जिज्ञासु और साधक जमा हुआ करें तो अस्र की नमाज के बाद सबके सामने पढ़ा करना। यह बजाये मुर्शिद (सतगुरु) और मुरब्बी (अविभावक) के है।

आप निहायत सब्र और तवक्कुल से जीवन व्यतीत करते थे और हर समय ईश्वर की याद में तल्लीन रहते थे। आपकी पुस्तक 'मामूलात मज़हरिया' आदाबे तरीक़त में अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं उपयोगी है।

आपका शरीरान्त पाँच सफर १२१८ हिजरी को हुआ। आपकी मज़ार शरीफ राजकीय इन्टर कालेज बहिराइच (उ० प्र०) के सामने मैदान से लगे हुये एक ऊँचे चबूतरे पर बनी हुई है।

सुना जाता है कि आपके वंशजों के पास वह दरी भी मौजूद है जिस पर आपके पूज्य गुरुदेव हजरत मिर्जा मजहर (रहम०) का खून पड़ा था (जब एक हत्यारे ने उनके सीने पर गोली मारी थी)। यह भी सुना गया है कि आपकी कोई हस्त लिखित पुस्तक जो लन्दन के पुस्तकालय में न जाने कैसे पहुँच गई वहाँ मौजूद है। आपके हाथ की लिखी हुई कुरआन शरीफ भोपाल में हजरत मौलाना मन्जूर अहमद खाँ साहब के पास जो हजरत मौलाना शाह फज्ल अहमद खाँ रायपुरी (रहम०) के सगे पौत्र हैं, मौजूद है।

हजरत मौलाना मौलवी शाह मुरादुल्लाह (कु० सि०)

सन्त शिरीमणि एवं पूज्य सतगुरुजनों के गौरव तथा ब्रह्मज्ञान के अथाह सागर हजरत शाह मुरादुल्लाह (कु० सि०) थानेसर के रईस थे। आप हजरत उमर फारूक (रजि०) के वंशज थे। जिस जमाना में सिखों ने थानेसर पर आक्रमण कर उसे वीरान कर दिया तब आप लखनऊ तशरीफ ले आये और वहीं बस गये। आपके पूज्य पिताजी हजरत मौलवी कलन्दर बख्श साहब थानेसरी (रहम०) जो हज़रत मिर्जा मजहर (रहम०) के खलीफा थे एक बार आपको अपने साथ हजरत मिर्जा साहब (रहम०) की खिदमत में ले गये। उस वक्त आप लड़के थे। हजरत मिर्जा साहब (रहम०) ने आपको अपने सत्संग में बैठाया और बहुत प्यार किया। जब आप पढ़ लिखकर विद्यार्थी जीवन से निवृत्त हुये उस वक्त मिर्जा मजहर (रहम०) शहीद हो चुके थे, अतः आपने हजरत शाह नईमुल्लाह साहब (रहम०) से बैअत तरीका हासिल की (गुरु-दीक्षा ली) और लखनऊ में ही तकमील के दर्जे (पूर्णता की स्थिति) पर पहुँचे और लोगों को ईश्वर की भक्ति और प्रेम की ओर उन्मुख करने में तल्लीन रहे। आपके कुछ खलीफा थे। इनमें दो बड़े प्रसिद्ध हुये। एक शाह गुलाम रसूल साहब 'रसूल नुमा' कु० सि० जिनका मजार कानपुर में परेड मुहल्ले में है। दूसरे हजरत मौलाना मौलवी अबुल हसल नासीराबादी रहम० जिनका जिक्र अगले अध्याय में किया गया है।

आपने ८२ वर्ष की उम्र में शनिवार के दिन २१ जीकादः सन् १२४८ हिजरी को महा समाधि ले ली। आपकी समाधि लखनऊ में रायल होटल के पास नाले की सड़क पर हाता गुलाम अली खाँ में

हरे रंग की है। (छत पटी हुई है)। होटल पर नाले पर पत्थर 'शाह मुरादुल्लाह लेन' लगा हुआ है।

●

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन नसीरा बादी (कु० सि०)

कर्मनिष्ठ ज्ञानी, इस्लामी धर्मशास्त्र के अद्वितीय विद्वान, हदीसों के भाष्य करने वालों में अग्रणी, हजरत सैय्यद अबुल हसन बिन (पुत्र) मौलवी नूरुल हसन बिन मौलवी मुहम्मद महदी हुसैन नसीराबाद (जिला रायबरेली) के निवासी थे। आप हजरत मौलवी मुरादुल्लाह साहब थानेसरी (रहम०) के खलीफा और सज्जादा नशीं थे (उनकी गद्दी पर सुशोभित थे)। आपने १८ साल की उम्र में दस्तारे फजीलत हासिल की (श्रेष्ठता की पगड़ी अर्थात् 'मौलाना' की उपाधि प्राप्त की। और हजरत पीर व मुर्शिद मौलाना मुरादुल्लाह साहब (रहम०) से बैअत की (गुरु दीक्षा ली) और सोलह बरस पीर व मुर्शिद की खिदकत में हाजिर रहकर वह मर्तबा हासिल किया कि हजरत मुरादुल्लाह साहब (रहम०) अपने तमाम मुरीदों को आपकी खिदमत में मुतवज्जेह होने का निर्देश देते थे और हजरत सैय्यद अबुल हसन (रहम०) ने अपने पीर व मुर्शिद की जिन्दगी में अक्सर लोगों को फ़ना व बक़ा पर पहुँचाया। आप में यह कमाल था कि जिसने आपको इरादत (श्रद्धा) को राह से देखा जरूर मकसूद को गया (ईश्वर के सानिध्य एवं साक्षात्कार का सौभाग्य प्राप्त हुआ)। जनाब हजरत खलीफा अहमद अली खाँ साहब मऊ रशीदा बादी (रहम०) फरमाते हैं कि मैंने अक्सर हजरत सैय्यद अबुल हसन साहब (रहम०) की जबान मुबारक से सुना है कि आप फरमाते थे कि हमारे एक

हाथ में कुरआन मजीद और दूसरे में हदीस है और हमको यही काफी हैं और जिस व्यक्ति के आचरण और व्यवहार इनके विरुद्ध हो, उसे साधना पथ के योग्य नही समझना चाहिये।

आपने सफर के सिवा हमेशा मस्जिद में जमाअत के साथ नमाज पढ़ी है और आप पाँचों वक्त सत्संग कराते थे और खुदा के तालिबों को तवज्जोह देते थे। बहुत से लोग फैज बातिन से खुदा तक पहुँचे और जहान (संसार) में मुन्तशर हो गये (फैल गये)। आप बगैर मुरीदों के कभी अकेले भोजन नहीं करते थे और दुनिया की बातें कम करते थे। मगर शुरू में आवश्यकतानुसार सांसारिक विद्याओं की भी शिक्षा देते थे। आखिर में इसको त्याग दिया ओर केवल अपने मुरीदों की तालीम बातिनी में मशगूल रहते थे। मराक़बा के सिवा कोई काम नहीं करते थे और अक्सर मुरीदों को अपनी आत्मिक शक्ति से नीचे मुकाम से उठाकर ऊँचे से ऊँके मुकाम पर एक नजर में पहुँचाते थे और अगर जाहिर में किसी मुरीद को धर्मशास्त्र के विरुद्ध कोई आचरण या व्यवहार करते हुये देखते तो उसको कोई नसीहत नहीं देते थे बल्कि फरमाते थे कि अगर हमारी सोहबत ने असर न किया तो खाली नसीहत क्या करेगी। फकीर वही है जो मुरीद के दिल को रंग कर अपनी तरह कर ले। और आपकी सबसे बड़ी करामात यही थी कि जो आपकी सोहबत में हाजिर हुआ, थोड़े दिनों में धर्मशास्त्र के विरुद्ध सभी आचरणों और कर्मों को त्याग कर आपकी तरह धर्म शास्त्र के अनुकूल सभी आचरण करने लगता।

आपके पीर व मुर्शिद मौलाना मुरादुल्लाह साहब (रहम०) अक्सर फरमाते थे कि मौलवी सैय्यद अबुल हसन (रहम०) हमसे कई बातों में श्रेष्ठ हैं। एक यह कि सही उन्नसब हुसैन सैय्यद (हजरत इमाम हुसैन रजि० की संतान के वंशज), दूसरे इल्म जाहिर (सांसारिक विद्याओं के ज्ञान) में हमसे ज्यादा, तीसरे इल्म बातिन

(आध्यात्मिक विद्या) में हमारे बराबर, चौथे उनसे गुनाह कबारा (बहुत बड़ा पाप) कभी नहीं हुआ। और हजरत सैय्यद अबुल हसन (रहम०) बावजूद इस फज्लो कमाल के बुजुर्गों का इस कदर अदब करते थे कि जब परम पूज्य मिर्जा मजहर (रहम०) की जियारत (दर्शनों) को तशरीफ ले जाते तो बहुत दूर से अपनी जूतियों को हाथ में ले लेते और फरमाते कि बुजुर्गों का अदब जैसा उनकी जिन्दगी में करते हैं वैसा ही उनके शरीरान्त के बाद भी करना चाहिये और सन्तजनों की मुहब्बत को आला इबादत (सबसे उत्तम आराधना) फरमाते थे। मगर इसमें धर्मशास्त्र के विरुद्ध आचरणों से नाखुश होते थे। हर अम्र (काम) में औसत दर्जे की रिआयत (कोमलता) फरमाते थे और औसत को पसन्द फरमाते थे। आप लोगों को बहुत मुहब्बत से तालीम तरीकत की देते थे और इसमें बेहद कोशिश फरमाते थे। अतः यही कारण है कि अक्सर थोड़े दिनों में लोग आपसे तकमील पाकर (पूर्णता प्राप्त करके) संसार में रूहानी (आध्यात्मिक) फैज लोगों तक पहुँचाने वाले हुये।

हजरत खलीफा अहमद अली खाँ (रहम०) फरमाते हैं कि एक बार मैं मुकाम अहमदाबाद जो लखनऊ के इलाका में है हजरत सैय्यद अबुल हसन साहब (रहम०) की खिदमत में हाजिर हुआ। मुहम्मद इसहाक अली खाँ साहब नई मस्जिद बनवा रहे थे। हजरत सैय्यद अबुल हसन साहब (रहम०) ने मेमार (मिस्त्री) से फरमाया कि उत्तर दिशा की तरफ दीवार में एक खिड़की रखना मुनासिब है, मगर मेमार हैदर इस बात पर राजी न हुआ। आखिर आप अप्रसन्न होकर खामोश हो गये। उसने रात को ख्वाब में देखा कि कोई बुजुर्ग कहता है कि मर्दूद! तू अबुल हसन (रहम०) का हुक्म क्यों नहीं मानता। उसने सुबह को अपना ख्वाब जाहिर करके मुआफी चाही और खिड़की की जगह आपके आदेशानुसार दीवार में छोड़ दी।

हजरत सैय्यद अबुल हसन साहब (रहम०) खालः जाद भाई (मौसी के लड़के) सैय्यद अब्दुस्सलाम फरमाते थे कि एक बार मैं आपकी खिदमत में हाजिर हुआ और दिल में इरादा किया कि हजरत वली (सन्त) हैं तो जो खुशखत कुरआन शरीफ आपके पास है और जो शीरीनी (मिठाई) आई हो मुझे देने की कृपा करें। जिस वक्त आपकी खिदमत में हाजिर हुआ उस वक्त आपने फरमाया कि भाई मेरी परीक्षा लेने आये हो, तो यह कुरआन शरीफ और मिठाई लो। मैं बहुत लज्जित हुआ और दोनों चीजें ले लीं। एक आदमी बड़ा बद चलन था। और उसका बाप आप का मुरीद था। उस आदमी ने आपसे गुरु दीक्षा लेने के लिये निवेदन किया, मगर उसके साथ यह भी निवेदन किया कि मैं बड़ा बदचलन हूँ। आपने फरमाया कि तुमने हमारे सामने तो कोई गुनाह नहीं किया। उसने अर्ज किया 'हजरत मेरी क्या मज़ाल जो हुजूर की मौजूदगी में गुनाह करूँ'। हजरत ने फरमाया बस हमारे सामने गुनाह न करना। यह फरमा कर उसको बैअत कर लिया। फिर उस शख्स ने चन्द बार अम्र बद (बुरे कर्म) का इरादा किया और हर बार हुजूर को पाया। आखिर लज्जित होकर सच्ची तौबा की।

एक बार मिर्जा कुदरतुल्लाह खाँ साहब ने जो हजरत सैय्यद अबुल हसन (रहम०) के मुरीद थे आपकी खिदमत में हाजिर होने का इरादा किया, तो करीब तीन सौ आदमी उनके साथ हो लिये। हरचन्द मिर्जा कुदरतुल्लाह साहब लोगों को अपने साथ चलने से मना करते थे मगर कोई भी वापस न हुआ। हजरत सैय्यद अबुल हसन साहब (रहम०) ने फ़रमाया कि आज लोगों को खाना खिलाना जरूरी है। आपके सेवकों ने अर्ज किया कि इतने लोगों को खाना काफी न होगा। आप ने फरमाया कि जब देग तैय्यार हो जाये तो सूचित करना। अतः जिस वक्त खाना पक चुका तो सेवकों ने आपको सूचना दी। आपने कुछ पढ़कर दम किया (कुछ मन्त्र आदि

पढ़कर फूँक मारने को दम करना कहते हैं)। और अपनी मुबारक लुंगी देग पर डालकर हुक्म दिया कि उसको अलग करें और खाना निकालते रहें। सब लोगों ने अच्छी तरह खाया और आधी देग बाकी रही जो घर में और पड़ोसियों में वितरित हुई।

आप अक्सर सुक्र (रूहानी मादकता, नशा) के बाद हालत सह्व (सचेष्टता, जागरूकता) में फरमाते थे—

देखिये अब क्या करे वामाँदगी, (थकावट, लाचारी)
काफिला यारों का सफर कर गया।

हजरत शाह मुरादुल्लाह साहब (रहम०) ने अपने शरीरान्त से पूर्व अपनी अध्यात्म साधना से सम्बन्धित सभी बस्तुएँ (पुस्तकें, लेख, पत्र तथा वस्त्रादि) हज़रत सैय्यद अबुल हसन साहब (रहम०) को सौंप दिया और आपको अपने सामने खलीफा के पद पर सुशोभित किया। परन्तु हजरत सैय्यद अबुल हसन (रहम०) ने हजरत वलीउल्लाह साहब को जो आपके विद्यार्थी, मुरीद व खलीफा थे और शाह मुरादुल्लाह साहब (रहम०) के नवासा (पुत्री के पुत्र) थे वह सभी उपरोक्त वस्तुएँ उन्हें प्रदान कर सतगुरु की पदवी पर बैठायी और नजर (भेंट) देकर फरमाया कि हमको हजरत पीर की मुहब्बत काफी है और जो भेटें आपको मिलती थीं सब की सब हजरत वली उल्लाह साहब को प्रदान कर देते थे, बावजूद इसके कि हजरत वली उल्लाह साहब आपके खलीफा और मुरीद थे।

हजरत सैय्यद अबुल हसन (रहम०) ने अपने बड़े सुपुत्र हादी हसन साहब को हजरत शाह वली उल्लाह साहब का मुरीद कराया। अतः हजरत मियाँ हादी हसन साहब की तकमील तरीका (आध्यात्मिक साधना की पूर्णता) हजरत शाह वली उल्लाह साहब की सेवा में हुई और हजरत हादी हसन साहब हजरत शाह वली उल्लाह साहब की तालीम और तवज्जोह की वजह से उलूम ज़ाहिरी व

बातिनी (सांसारिक तथा आत्मिक विद्याओं) में अपने पूज्य पिता जी हजरत सैय्यद अबुल हसन साहब (रहम०) के समान थे। हजरत हादी हसन साहब फरमाते थे कि एक बार हजरत मुफ्ती सईदुल्लाह साहब मेरे पूज्य पिता जी की खिदमत में तशरीफ लाये। उस वक्त मैं हाजिर था। पूज्य पिता जी ने मुझसे फरमाया कि जनाब मुफ्ती साहब के कदम छूना चाहिये। मुफ्ती साहब ने यह सुनकर बड़ी विनम्रता के साथ निवेदन किया कि हजरत मैं इस लायक नहीं हूँ कि हुजूर के सुपुत्र मेरे कदम छुएँ। मैं और मुरीदों की तरह हूँ कि फायदे के वास्ते हाजिर हुआ हूँ।

हजरत सैय्यद अबुल हसन साहब (रहम०) का शरीरान्त दो शंबा यकुम शाबान १२७२ हिजरी को हुआ। आपका मजार शरीफ कस्बा नसीराबाद तहसील सलोन, जिला राय बरेली में है। हजरत मुर्शिदना हाजी खलीफा अहमद अली खाँ साहब (कुद्स सिर्रहू) द्वारा रचित दो पद्य खण्ड नीचे अंकित किये जा रहे हैं, जिनसे हजरत सैय्यद अबुल हसन रहम० की तारीख वफ़ात की गणना निकल आती है :—

(१)

आँ बुल हसन कि ताज सरे नक्शबन्द बूद,
मानिन्द ऊ नयामदह साहब तरीक़ते।
रह्लत चूकर्द मुलहिमे गैबी बगुफ्त साल,
बिल्लह बहक वस्ल शुद अहले हकीकते॥

(२)

शैखे जमाना मौलवी सैय्यद अबुल हसन,
चूँ कर्द अज़ इनायते हक़ जा बमिहद खुल्द।
मुर्दन न गोयमत पै तब्दीले जाजे खल्क,
फर्मूद आँ बुजुर्ग तमन्ना बमिहद खुल्द।

तायब चू जुस्त साल व फातश मलिक बगुफ्त,
नक्ले मकान कर्द जे दुनिया बमिहद खुल्द।

तर्जुमा

(१)

वह अबुल हसन कु० सि० जो नक्शबन्दिया खानदान के सरताज थे, उनकी तरह कोई दूसरा साहेब तरीक़त नहीं आया। जब उन्होंने रहलत की (पार्थिव शरीर त्यागा) तब गैब के (परोक्ष के) फरिश्ते ने उनके रहलत (शरीरान्त) की यह तारीख़ कही :—

खुदा की क़सम, एक अहले हक़ीक़त (ब्रह्मनिष्ठ) खुदा से वासिल हुआ (अर्थात् खुदा से मिल गया)।

(२)

मौलवी सैय्यद अबुल हसन जो (उस) जमाना के शैख़ थे जब उन्होंने खुदा की मेहरबानी से स्वर्ग के पालने में अपना स्थान ग्रहण किया, मैंने उसे मृत्यु नहीं कही बल्कि उस बुजुर्ग हस्ती ने स्थान परिवर्त्तन के लिये इस संसार से स्वर्ग के पालने में जाने के लिये इच्छा की।

ताइब ने (तौबा करने वाले ने। हजरत हाजी ख़लीफ़ा जी साहब रहम० ने जो इस पद्य के रचयिता हैं अपने लिये विनीत भावना के रूप में यह शब्द प्रयोग किया है) जब उनके शरीरान्त का वर्ष ढूँढ़ा, तो फरिश्ते ने कहा, 'वह दुनिया से स्वर्ग के पालने में चले गये अर्थात् उन्होंने मकान का परिवर्त्तन किया।'

हज़रत सैय्यद अबुल हसन (रहम०) के तीन लड़के और दो लड़कियाँ थी। इनमें से एक हजरत मुस्तफा हसन साहव का कम उम्र में ही शरीरान्त हो गया था और दो लड़के मियाँ हादी हसन साहब और अहमद मुज्तवी साहब थे। आपके खलीफाओं की संख्या अत्यधिक है, मगर हजरत मौलाना शाह फज्ल अहमद खाँ रायपुरी

(रहम०) को जिनके नाम याद थे उन्होंने अपनी पुस्तिका 'जमीमा हालात मशालख नक्शबन्दिया' में अंकित किया था। वे नाम इस इस प्रकार हैं—हजरत शाह वली उल्लाह साहब, हजरत शाह गुल्जार शाह साहब, हजरत चाँद खाँ साहब, हजरत फकीर उल्लाह साहब, हजरत फारुक अली साहब, हजरत आलम शाह, हजरत फाजिल खाँ साहब विलायती, हजरत सैय्यद अफजल शाह साहब रायपुरी, हजरत बशारत खाँ, हजरत मुमताज साहब, हजरत नामदार साहब और हजरत हाजी खलीफा अहमद अली खाँ साहब मऊरशीदा बादी (ईश्वर इन सभी महान आत्माओं पर अपनी दया कृपा रक्खे)। इनके सिवा हजरत से फायदा पाने वालों और मुरीदों की तादाद हजारों में है।

हजरत हाजी खलीफा अहमद अली खाँ साहब (रहम०) १२८८ हिजरी में हजरत सैय्यद अबुल हसन साहब (रहम०) की जियारत को उनके पवित्र मजार पर हाजिर हुये थे। उस अवसर पर उन्हें जो अनुभव हुये उनका वर्णन आपने इस प्रकार किया है—

'यह सेवक अक्सर हजरत सैय्यदना के पवित्र मजार पर हाजिर होता और हजरत सैय्यदना भी अपनी जीवित अवस्था की तरह मुझे अपनी विशेष दया कृपा से फैज़याब करते।

दिले मन दानद व मन दानम व दानद दिले मन

(मेरा दिल उस आनन्द को जानता है और मैं जानता हूँ और मेरा दिल जानता है।)

चन्द रोज के बाद जब मैंने वापिसी का इरादा किया और हजरत हादी हसन साहब से अर्ज किया तो हुजूर ने फरमाया कि हजरत सैय्यदना (रहम०) ने तो अभी रुख्सत (बिदा) की इजाजत नहीं दी है और जब तक हजरत सैय्यदना (रहम०) इजाजत न देंगे हम भी तुम्हें बिदा न करेंगे। जब मैं मामूल (नित्य नियम)

के अनुसार मजार शरीफ पर मराकिब हुआ (ध्यान में बैठा) तो हजरत सैय्यदना (रहम०) ने भी यही फरमाया कि मियाँ हादी हसन साहब सच कहते हैं। अभी क्या जल्दी है। दो चार रोज और रहो। कई दिन के बाद मैंने हजरत सैय्यदना (रहम०) से फिर वापिसी की इजाजत चाही, तो हजरत ने मंजूर फरमाया। जब मैंने हजरत हादी हसन साहब की खिदमत में अर्ज किया तो आपने भी फरमाया कि आज हमको भी हजरत सैय्यदना (रहम०) ने हुक्म दिया है और बिदाई के वक्त कुलाह (टोपी) मुबारक इनायत फरमा कर (प्रदान करके) फरमाया कि हजरत सैय्यदना (रहम०) के इर्शाद (आदेश) के मुआफिक हमारी तरफ से भी तुमको तरीके की इजाजत है और सैय्यदना (रहम०) ने तुमको दो बार इजाजत तरीका दी। एक बार अपनी दिन्दगी में और एक इस वक्त। तुम्हारा नसीब (भाग्य) खूब है। मैंने कुलाह मुबारक को चूमा और पहिना और बिदा होकर मकान पर आया।'

•

हजरत मौलाना खलीफ़ा अहमद अली खाँ मऊ रशीदाबादी (रहम०)

हजरत मौलाना खलीफा अहमद अली खाँ साहब (रहम०) के पूज्य पिताजी का शुभ नाम शहामत अली खाँ साहब कु० सि० है। आपके पूज्य पिताजी ने चिश्तिया खानदान से रूहानी निस्बत हासिल की थी और वह दुनिया से अत्यन्त विरक्त थे। जीविकोपार्जन के लिये अक्सर मजदूरी करके अपना जीवन निर्वाह करते। आपके खलीफा हजरत मौलाना शाह फज्ल अहमद खाँ रायपुरी (रहम०) फरमाते

थे कि 'मैंने खलीफा जी साहब (रहम०) की जवान से सुना है कि आपके पूज्य पिताजी हद दर्जे के साबिर (हर दशा में ईश्वर इच्छा चाहने वाले, सहिष्णु) और साहिबे रियाज़ (उच्च कोटि के साधक) थे। आपकी अक्सर जज्बी हालत रहती थी और प्रायः करामात सादिर होती थीं (चमत्कार प्रकट होते थे), अतः एक बार किसी महफिल शादी में नाच गाना हो रहा था। आप भी तशरीफ लाये। चूँकि आप गरीब थे, लोगों ने आपकी ओर कुछ ध्यान न दिया। तब आपने जोश में आकर मीर मजलिस से फरमाया कि तुम इस कदर अमीरों की खातिर क्यों करते हो। उसने जबाब दिया कि यह लोग हमारे साथ ब्याहने जायेंगे। आपने फरमाया कि तुम यह ख्याल दूर कर दो। यह अभी भागते हैं। यह कहकर खुद तो मकान पर आगये और आँधी पानी ऐसा आया कि सिर्फ दो चार ही आदमी ब्याहने गये। आपने अपने सुपुत्र जनाब खलीफा जी साहब (रहम०) की तालीम में बहुत कोशिश फरमाई और आखिर वक्त यह दुआ की 'अल्लाह तआला तुमको कामिल करे (पूर्ण पारंगत बनाये)। जाहिद खुश्क (नीरस व संकीर्ण हृदय वाला संयमी, तपस्वी) न करे। आपका मज़ार शरीफ तकिया में मस्जिद के निकट स्थित है। बड़ा बाफैज मजार है (रहमतुल्लाहु अलैहि)।

हजरत खलीफा जी साहब (रहम०) युवा अवस्था में विद्याध्ययन की ओर आकृष्ट रहे। फारसी और अरबी भाषा के प्रकांड विद्वान थे और इन भाषाओं के कठिन से कठिन ग्रन्थ आपको कंठस्थ थे। आप फारसी के काव्य-ग्रन्थ 'गुलेकिश्ती', 'बदरचाह', 'मशनवी हलाली' इत्यादि को बड़े रोचक ढंग से पढ़ाते थे। धर्म शास्त्र से सम्बन्धित तथ्यों की व्याख्या करने में आपको पूर्ण दक्षता प्राप्त थी। कुरआन शरीफ को शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ने की कला में भी आप पूर्ण दक्ष थे। इस विषय पर आपने कई पुस्तिकायें लिखी हैं। आपने दो दीवान (कविताओं के संग्रह) और एक काव्य-

ग्रन्थ 'महारबा काबुल' लिखा है। गद्य-लेखन में भी आपकी योग्यता अद्वितीय थी। आपने एक पुस्तक 'फतावाए अहमदी' लिखी है। आप धर्म पालन में अत्यन्त दृढ़ तथा सुन्नत (वह काम जो हजरत पैगम्बर साहब ने किया हो) के अनुयायी थे। आप अक्सर फरमाते थे कि सुन्नत का अनुकरण करने से आदमी महबूब (प्रेम पात्र) हो जाता है। आप अज्ञानी फकीरों से बड़ी घृणा करते थे। आपके जबाने मुबारक से सुना गया है कि जिन दिनों आप कुँवा खेड़े पढ़ने को जाया करते थे वहाँ एक फकीर अजीब हालत में तशरीफ लाये थे, जो कुत्तों को अपने साथ हर वक्त रखते थे। अतः हजरत खलीफा जी साहब (रहम०) ने भी यह बात सुनकर उनके इस प्रकार के आचरण की आलोचना करने के लिये उनकी खिदमत में हाजिर होकर उनको सख्त सुस्त कहा। मगर वह हजरत पहाड़ की तरह अविचलित रहे। यह देखकर जनाब खलीफा जी साहब के दिल में शर्म और लज्जा उत्पन्न हुई और उनसे मुआफी माँगने लगे। उन दर्वेश ने फरमाया कि बाबा कहने वाला तू न था। यह सुनकर हजरत खलीफा जी साहब (रहम०) पर एक आलमे बेखुदी (अचेतना की दशा) तारी हुआ और अजीब लज्जत व मसर्रत (आनन्द) पैदा हुआ और साँस के जरिये 'अल्लाह हू' जारी हो गया और उसके साथ अजीब वज्द व हाल (आनन्दातिरेक से झूमने की हालत) पैदा हो गई। जब आप होश में आये तो पुनः उन दर्वेश से क्षमा याचना करने लगे। उन्होंने वही बात फरमा दी। पुनः आप पर वही हालत तारी होगई बल्कि और अधिक तीव्रता के साथ। उस वक्त वह दर्वेश जनाब खलीफा जी साहब (रहम०) से गले मिले। बस अजीब आनन्द की अनुभूति हुई और फरमाया 'खाली साँस न जाये।' यह कहकर वह चले गये और आप पर तेजी के साथ पास अन्फास जारी हो गया (हर साँस में ईश्वर की याद होने लगी)। अब आपको मालूम हुआ कि यह वज्दे-हाल भी कोई

चीज़ है। आप उसकी तलाश में संलग्न हुये। आपकी तबियत में जोश खरोश भरा था। हर वक्त वज्द की कैफियत रहती थी। उन्हीं दिनों अमीर अली खाँ साहब चिलौली वाले गोरखपुर से तशरीफ लाये। उनकी सोहबत में आपका कल्ब जाकिर हो गया (हृदय चक्र जाग्रत हो गया)। कुछ अजीब ही वर्णनातीत आनन्द का अनुभव हुआ। आपका शौक और जौक और भी बढ़ा। इसी जमाने में आपको हाजी सैय्यद मियाँ अफजल शाह साहब रायपुरी (कु० सि०) से जो हजरत मौलाना सैय्यद अबुल हसन नसीराबादी (रहम०) के खलीफा थे सत्संग का संयोग हुआ। फिर तो कुछ और ही गुल खिला। आपकी खिदमत में तमामी मुकामात मुजद्दिदिया पर जिक्र का असर महसूस हुआ (सभी चक्र जो मुजद्दिदिया सिलसिले की साधना पद्धति में प्रचिलित हैं जाग्रत हो गये) और फनाए कल्बी की दौलत खुदा ने इनायत फ़रमाई। उसी दिन हजरत मियाँ अफजल शाह साहब ने जनाब खलीफा जी साहब (रहम०) से फरमाया 'अहमद अली, अब बे बैअत (बिना गुरु दीक्षा के) काम न चलेगा। जनाब खलीफा जी साहब (रहम०) ने अर्ज किया कि अभी तो मैं बैअत न करूँगा। आपने फरमाया कि फिर यह कुछ न रहेगा। अतः यह कहकर मकान पर चले गये और उधर जनाब खलीफा जी साहब (रहम०) खाली रह गये, यहाँ तक कि पास अन्फास भी न रहा (हर साँस में ईश्वर की याद होना भी बन्द हो गया)। आपको बड़ा दुःख हुआ और आपने दिल में सोचा कि गजब है, जो औरों से सीखा था वह भी न रहा। आप रोने लगे और तौबा करते रहे। रात को आपने हजरत मौलाना सैय्यद अबुल हसन साहब (रहम०) को देखा और खोई हुई दौलत फिर पायी और अत्यन्त आनन्द की अनुभूति के साथ जाग पड़े। अपने आपको पहले से अधिक पाया। जब सुबह को मियाँ अफजल शाह साहब ने आपको देखा, फरमाया 'अहमद अली यह फिर कहाँ पाया,

इस हालत को बिना मुरीद हुये बक़ा (ठहराव, स्थिरता) कहाँ। फौरन वह हालत फिर गायब होगई। इसी तरह तीन दिन होता रहा। आखिर हजरत अबुल हसन साहब (रहम०) ने तीसरी रात ख्वाब में फरमाया कि अफ्जल शाह सच कहता है, बेपीर (बिना सतगुरु के) कुछ न रहेगा। जनाब खलीफा जी साहब (रहम०) ने अर्ज किया कि मैं हुजूर का गुलाम हूँ। मेरा पीर क्यों नहीं। तब हजरत सैय्यद अबुल हसन (रहम०) ने आपको सीने से लगाया और फरमाया कि अफ्जल शाह से कह देना कि मैं नसीराबाद में जाकर बैअत करूँगा, मुझे क्यों सताते हो। सुबह जब आप जगे तो आपने अपने को बहुत नूरानी (प्रकाशमय) पाया और अफ्जल शाह साहब (कु० सि०) से तीनों रात के हालात अर्ज किये। यह सुनकर हजरत मियाँ अफ्जल शाह (कु० सि०) बहुत खुश हुये और आपको रूहानी तालीम देते रहे।

इसी जमाने में हजरत खलीफा अहमद अली खाँ साहब (रहम०) हजरत सैय्यद अबुल हसन साहब (रहम०) को खिदमत में हाजिर हुये और उनसे बैअत हुये (गुरु दीक्षा ली)। फिर भी आप अक्सर मिया अफ्जल शाह साहब (रहम०) के सत्संग में हाजिर रहते। आप चार बार हजरत मौलाना सैय्यद अबुल हसन साहब (रहम०) की खिदमत में एक एक चिल्ला रहे (चालीस चालीस दिन रहे)। आखिर हजरत सैय्यद अबुल हसन (रहम०) ने आपको इजाजत नामा (सतगुरु के अधिकार) और दस्तार (पगड़ी) और कुर्त्ता और माला वगैरह प्रसाद रूप में प्रदान किये। जनाब खलीफा जी साहब (रहम०) की शान उन पत्रों से प्रकट होती है जो हजरत सैय्यद अबुल हसन साहब (रहम०) ने आपको लिखे हैं। और यह सभी पत्र जनाब खलीफा अहमद अली खाँ (रहम०) ने एक किताब के रूप में संकलित करके अपने खलीफा हजरत

मौलाना शाह फज्ल अहमद खाँ रायपुरी (रहम०) को प्रदान किये थे और मूल रूप में वह पत्र भी दिये थे और फरमाया था कि यह सामान तुम्हारे काम का है। तुम रक्खो। अल्लाह मुबारक करे।'

हजरत सैय्यद अबुल हसन साहब (रहम०) ने अपने एक पत्र में जनाब खलीफा जी साहब (रहम०) को लिखा है 'तुमसे एक आलम मुनव्वर (प्रकाशित होगा) और यह अम्र (आदेश) आपके 'कुतुब इर्शाद' (सन्त शिरोमणि) होने का प्रमाण है।' दूसरी जगह लिखा है 'कुफ्फार (नास्तिकों) को, राह चलतों को, फासिकों (पापियों) को, बिद्अतियों (धर्म में नई व्यवस्था उत्पन्न करने वालों) को तवज्जोह दोगे तो वह कामिलुल ईमान होंगे। तीसरी जगह फरमाया जो 'तुमको मिला इस जमाने में शायद किसी को मिला हो।'

हजरत मौलाना शाह फज्ल अहमद खाँ रायपुरी (रहम०) ने जो जनाब खलीफा अहमद अली खाँ (रहम०) के खलीफा थे अपनी पुस्तक "जमीमा हालात मशायख नक्शबन्दिया" में उक्त पत्रों से सम्बन्धित निम्नांकित महत्वपूर्ण घटना का वर्णन लिखा है जो उन्हीं के शब्दों में अंकित किया जा रहा है—

'मेरे मुर्शिदना अहमद अली खाँ साहब ने जब बन्दा को इजाजत और खिलाफत की इज्जत बख्शी तो अव्वल मकतूब (पत्र) को फरमाया पढ़ लो। चुनाँचे गुलाम ने पढ़ा। जब खत्म कर चुका तो फरमाया कि फज्ल अहमद यह बातें तो हमसे कुछ न हुई। मैंने अर्ज किया कि हजरत अब इन्शा अल्लाह (ईश्वर इच्छा से) जहूर फरमा होंगे (प्रकट होंगे)। हजरत ने फरमाया कि अब हम गोर किनारह हुये (अब हमारा अन्त समय निकट आ गया है)। चन्द दिनों के मेहमान हैं। अब क्या होगा। बन्दा यह सुनकर रोने लगा। फरमाया 'शाबाश, यह वक्त रोने का है?' मअन (तत्काल) मेरे

क़ल्ब में बशाशत (आनन्द) व सुरुर (हल्का नशा) पैदा हुआ। सुनकर फरमाया 'यह बातें खाली न जायेंगी। इनका ज़हूर अब तुमसे होगा। यह हजरत का इर्शाद सच हुआ। इस अहकर से अक्सर हिन्दुओं और ईसाइयों और शियों को फायदा पहुँचा। अलहम्दो लिल्लाह अला जालिका। इसके बाद हजरत मुर्शिदना खलीफा जी साहब ने फरमाया कि अब तक तो तुम खूब आराम से रहे। अब मैं एक बार अजीम (एक महान बोझ अर्थात् उत्तर-दायित्व) और अम्र फखीम (प्रतिष्ठापूर्ण कार्य) तुम्हारे सुपुर्द करता हूँ। अगर बजा लाओगे तो अम्बिया और औलिया के साथ महशूर होगे (कयामत के दिन अवतारों और सन्तों के साथ उठाये जाओगे), वरना यही खिर्का (वस्त्र) दोजख (नर्क) को खींच ले जायेगा। कमतरीन बहुत रोया और अर्ज किया कि 'हजरत बन्दा को मुआफ फरमाइये।' खलीफा जी साहब ने फरमाया 'खुदा आसान करेगा' और गुलाम के वास्ते दुआ की। फिर हजरत सैय्यदना की अतीया (उपहार) तबर्रुकात तलब फरमाकर उसमें से हजरत की तस्बीह (माला) और कुर्त्ता शरीफ की आस्तीन मुबारक और एक टुकड़ा दस्तार (पगड़ी) शरीफ का और एक कुलाह (टोपी) और अपना कुर्त्ता मरहमत फरमाया (प्रदान किया) और यह फरमाया कि हर एक बुजुर्ग अपने खलीफा को अपना तबर्रुक दिया करता है। जहे नसीब तुम्हारे (क्या खूब तुम्हारा भाग्य है) कि तुमको हजरत सैय्यदना अबुल हसन साहब (रहम०) के तबर्रुकात मिले। शुक्र इस अतिये (उपहार) का करना चाहिये।"

हजरत खलीफा अहमद अली खाँ साहब (रहम०) के विषय में हजरत शाह अब्दुल्लाह अबुल खैर साहब मक्की, जो उनदिनों हजरत मिर्जा मजहर जान जाना (रहम०) की खानकाह शरीफ में सज्जादा नशीन थे और जिनका उपनाम मुहीउद्दीन था फरमाते थे कि मैंने मक्का में जनाब खलीफा जी साहब को देखा कि आप पर तजल्ली

ज़ाती का जहूर था (परमात्मा का तेज प्रकट होता था)।' हजरत जनाब खलीफा जी साहब (रहम०) सफर इस्लामी दूसरा महीना १३०४ हिजरी को सरहिन्द शरीफ तशरीफ ले गये थे और वहाँ चालिस दिनों तक रुके और अजीब फैज व बरकत हजरत इमाम रब्बानी के दरबार से हासिल किया। आपने हजरत मुजद्दिद अल्फसानी (रहम०) के हालात में किताब 'तोहफतुल मुजद्दिदैन' लिखी। आपको हजरत मुजद्दिद अल्फसानी (रहम०) के दरबार से मजार पोश पूरा उपहार रूप में प्राप्त हुआ था। आपको इसी में दफनाया गया था।

हजरत मौलाना शाह फज्ल अहमद खाँ रायपुरी (रहम०) ने अपने पीर मुर्शिद जनाब हाजी खलीफा अहमद अली खाँ साहब (रहम०) के आध्यात्मिक जीवन से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं को अपनी पुस्तक 'जमीमा हालात मशायख नक्शबन्दिया' में वर्णित किया है, जो प्रसाद रूप में उन्हीं के शब्दों में नीचे दी जा रही हैं :—

"इस कमतरीन ने जब हजरत मुर्शिदना से बैअत की तो बराबर दोनों वक्त सुबह व शाम बीस बरस तक आपकी खिदमत में हाजिर होकर तवज्जोह ली और अजीब वारदातें पैदा हुई। मगर मेरे एक इनायत फरमा (शुभ चिंतक) ने मुझको यह फरमाया कि अब तक तुमको वज्द (आत्मिक आनन्दाधिक्य से उत्पन्न आत्म विस्मृति की स्थिति) नहीं होता। अगर खलीफा जी साहब कामिल (पूर्ण, पारंगत) होते तो जरूर होता और हमारे यहाँ तो थोड़े दिनों के मुरीदों को भी वज्द होता है। इस बात वाहिआत (निरर्थक बात) ने मुझ पर यह असर किया मआज अल्लाह (ईश्वर बचाये) मेरे दिल में शक (सन्देह) आ गया। मैंने शब (रात) को ख्वाब में देखा कि खलीफा जी साहब तशरीफ लाये और फरमाया कि रायपुर चलो

और मुर्शिदना (जनाब खलीफा जी साहब) उड़ते हुये हजरत सैय्यद अफजल शाह मियाँ के मजार के पास गये तो क्या देखा कि रसूल मकबूल (हजरत मुहम्मद साहब सल्ल०) और तमामी पीराने सिलसिला (नक्शबन्दिया सिलसिले के तमाम सतगुरुजन) खड़े हैं और सब एक दूसरे का हाथ पकड़े हैं। हजरत मुर्शिदना ने एक हाथ से गुलाम का हाथ और एक से हजरत सैय्यद अबुल हसन कुद्स सिर्रहू का हाथ पकड़ा। फिर किसी ने फरमाया 'यह सिलसिला रासखीन (दृढ़, अटल) है। इसका मुन्किर (इसको न मानने वाला) मर्दूद (तिरस्कृत) है। फिर अजीब कैफियत हुई। इतने में उसी वक्त वह बुजुर्ग भी आये। मैंने ख्वाब बयान किया। उन्होंने उसी वक्त तौबा की और बहुत नादिम (लज्जित) हुये। जनाब खलीफा जी साहब एक रिसाल दार साहब के यहाँ नौकर थे और एक रईस ने जो सूद ख्वारी में मुब्तला था (लोगों को ब्याज पर रुपये उधार दिया करता था) अपने भतीजे की तालीम के वास्ते बुलाया। यह अम्र (काम) रिसाल दार मौसूफ को अजहद शाक गुजरा (बहुत ही बुरा मालूम हुआ) और एक दिन असनाए राह में (रास्ते में जाते समय) खलीफा जी साहब से कहा कि आप सूद ख्वारों का खाना खाते हैं और फिर दावा शैखियत (सतगुरु होने का दावा), कैसी शर्म की बात है ? यह सुनकर बन्दा कुछ बोलना चाहता था कि फौरन खलीफा जी साहब ने रोक दिया और खुद फरमाया कि 'खाँ साहब दुआ कीजिये कि खुदा उनको इस बला से नजात (मुक्ति) दे। यह कहकर चल दिये और राह में मुझसे बहुत खफा हुये और फरमाया कि रिसाल-दार साहब ने झूठ बात नहीं कही, जिस पर तुझे गुस्सा आ गया। गुस्सा की जरूरत नहीं है। हाँ अगर हिम्मत हो तो इस ऐब (दुर्गण) को दूर कर दो। बन्दा खामोश रहा। चालीस रोज नहीं गुजरे थे कि उस रईस ने सूद ख्वारी से तौबा की। अब खुदा उनको दीन का सरदार करे। जनाब हाजी फज़्ल इमाम खाँ साहब हज्ज को

तशरीफ ले गये थे और यहाँ मशहूर हो गया कि इनका जहाज डूब गया। उनके सारे मुतालकीन (सम्बन्धी) परेशान थे। जब खलीफा जी साहब से हाल दरियाफ्त किया तो आपने उसी वक्त फरमाया कि सब मक्का शरीफ में बखैरियत (कुशल पूर्वक) हैं बल्कि अन करीब खत आयेगा। चुनाँचे ऐसा ही हुआ

एक बार मैं बेकार हो गया था और दसवीं तारीख माह दिसम्बर की थी। आपने मुझसे दरियाफ्त किया कि किस कदर (कितनी) तनख्वाह में तुम्हारी गुजर हो जायेगी। मैंने अर्ज़ किया कि हजरत पाँच रुपये माहवारी अलावा खूराक के वास्तें दुआ कीजियेगा। हजरत ने जरा से तअम्मुल (मौन) के बाद फरमाया कि तुम पहिली दिसम्बर से इस तनख्वाह पर नौकर हो गये। यह सुनकर मुझे यकीन न हुआ। फिर हजरत ने फरमाया कि तुझे यह बात झूठी मालूम हुई। मैंने अर्ज़ किया कि हजरत सच होगी, मगर दसवीं तारीख तक मुझे खबर न हो यह कैसी बात है? उस वक्त हजरत खलीफा जी साहब ने बन्दा को नसीहत की कि अपने मकशू-फात (गुप्त बातें जो आत्मिक शक्ति से ज्ञात होती हैं) सब लोगों से छिपाना चाहिये। देखो, तुम सा मुरीद मुखलिस (निष्ठावान शिष्य) भी यकीन नहीं करता तो औरों से क्या उम्मीद हो। जब मै हजरत से जुदा हुआ तो उसी वक्त नौकरी का हाल मालूम हो गया कि मुंशी बद्री प्रसाद ने जराद में नौकर करा दिया। उसी वक्त अपने काम पर गया और बीस रोज बाद पूरी तनख्वाह पायी (पूरे माह का वेतन प्राप्त किया)। मौलवी जामिन अली खाँ साहब रायपुरी बयान करते है कि खलीफा जी साहब की वफात (शरीरान्त) से दो रोज पहले मै आपकी खिदमत में हाजिर हुआ था। क्या देखा कि आप अन्दर मकान के लेटे हैं और पेशानी (माथा) मिस्ल चाँद के चमक रही है। मैं इस नूर (प्रकाश) को देखकर हैरान हो गया और दिल में कहने लगा 'जो किताबों में पढ़ा था कि कयामत (प्रलय) के

दिन बाज मोमिनों (कुछ ईश्वर-भक्तों) के चेहरे चाँद की तरह चमकेंगे सो दुनिया में आँखों से देखा। जालिका फज्लुल्लाहे यूतीह मईयशा (यह खुदा का फज्ल है, वह जिसको चाहे दे)।

एक लड़की को जनाब ने पसे पर्दा (पर्दा के पीछे) बैअत किया और मुकाम क़ल्ब मर्दों को यों जबानी फरमाते थे कि बायें पिस्तान (स्तन, छाती) से दो अंगुल नीचे ख्याल करो। उस लड़की से यह फरमाना मुनासिब न जाना, तो आपने यूँ फरमाया कि बेटी तेरे बायीं तरफ जहाँ एक काला तिल है यहाँ पर कल्ब है। हम तवज्जोह देते हैं, यह अल्लाह अल्लाह करेगा। जब इससे फराग पाया (निवृत्त हुये), तो उस लड़की ने अर्ज किया कि मियाँ ने मुझे तो पर्दा में बिठ लाया और मेरे कुर्त्ते के अन्दर खाल सियाह (काली) देख लिया। हजरत ने थोड़े तअम्मुल के बाद फरमाया कि बेटी बजरूरत दिल की आँखों से देखा है। जिस्मी आँखों से देखना शराअन मना है (स्थूल शारीरिक नेत्रों से देखना धर्म शास्त्र द्वारा वर्जित है)।"

हजरत जनाब खलीफा अहमद अली खाँ साहब (रहम०) ने ९ रबीउल अव्वल सन १३०७ हिजरी बरोज दो शम्बा अपना पार्थिव शरीर त्याग दिया। आपका मज़ार शरीफ कब्रिस्तान नन्दू खाँ, कुबेरपुर (कायमगंज, जिला फर्रुखाबाद) में सड़क (जी० टी० रोड) के पास करीब पचास गज पर है।

●